RNI No. GUJHIN/2010/35230

महानगर मेट्रो

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र

कार्यालय :- सी-8 रिची हाउस, स्वामी नारायण मंदिर के सामने मणिनगर अहमदाबाद गुजरात-380008

महानगर मेट्रो
राष्ट्रीय दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिए कार्यालय पर सम्पर्क करें
सरबजीत माकन
+91-9638877700
mahanagarmetro7@gmail.com

वर्ष :15 । अंक:230। पेज:12। mahanagarmetro7@gmail.com || अहमदाबाद, (रविवार) 12 अप्रैल 2026 || सम्पादक - सरबजीत माकन (9638877700)।। मूल्य :- 1.50 रु.-/

डिजिटल षड्यंत्र: सच की पड़ताल

आस्था को कलंकित करने की घिनौनी साजिश; फर्जी वीडियो के दम पर जैन समाज को बांटने की कोशिश नाकाम!

महानगर मेट्रो/पवन माकन

अहमदाबाद। धर्म, त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति माने जाने वाले जैन समाज के संतों के खिलाफ एक बहुत ही घिनौनी और सुनियोजित साजिश का खुलासा हुआ है। पिछले डेढ़ साल से सक्रिय एक अपराधी गिरोह ने आधुनिक तकनीक का दुरुपयोग कर जैन मुनियों को 'हनीट्रैप' में फंसाने और फर्जी वीडियो के जरिए ब्लैकमेल करने का जो जाल बुना था, अब उसके परखच्चे उड़ चुके हैं।

साजिश का तरीका: ब्लैकमेलिंग से सोशल मीडिया तक

महानगर मेट्रो न्यूज की पड़ताल में सामने आया है कि इस 'अवैध हनीट्रैप गिरोह' ने पहले जाली फोटो और वीडियो तैयार किए। इन वीडियो के दम पर पूज्य मुनियों और आचार्यों को डराने-धमकाने और अवैध वसूली करने का प्रयास किया गया। जब जैन संघ के उच्च पदाधिकारियों और मुनि भगवंतों ने इस अन्याय के आगे झुकने से इनकार कर दिया, तो गिरोह ने इन फेक वीडियो को सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया ताकि समाज में भ्रम और नफरत फैलाई जा सके।

एक साध्वी की जिंदगी दांव पर

इस साजिश की क्रूरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिस साध्वी जी का चेहरा इन फर्जी वीडियो में इस्तेमाल किया गया, वे इस मानसिक आघात को सहन नहीं कर पाईं। आज वे 'कोमा' जैसी गंभीर स्थिति में जिंदगी और मौत की जंग लड़ रही हैं। क्या समाज इन अपराधियों को माफ करेगा?

"अगर जैन धर्म के मुनि गलत होते, तो समाज या जैन संघ उन्हें स्वयं पदच्युत कर उचित सजा देता। लेकिन यहाँ मुनि दोषी नहीं, बल्कि एक गहरी साजिश के शिकार हैं। यह हमला एक व्यक्ति पर नहीं, बल्कि समूची अहिंसक संस्कृति पर है।"

— **पवन माकन (ग्रुप एडिटर)**

महानगर मेट्रो न्यूज का देशव्यापी अभियान

हम खामोश नहीं बैठेंगे! महानगर मेट्रो न्यूज आज से एक देशव्यापी अभियान शुरू कर रहा है:

1. **अपराधियों का बहिष्कार:** समाज ऐसे नफरत फैलाने वाले तत्वों को पहचानें और उनका पूर्ण सामाजिक बहिष्कार करें।
2. **सरकार को चेतावनी:** हम इस मुद्दे को राज्य और केंद्र सरकार के समक्ष उठाएंगे। कानून व्यवस्था को इन 'डिजिटल हत्यारों' को ढूंढकर कड़ी से कड़ी सजा देनी होगी।
3. **ब्लैकमेलिंग के खिलाफ आवाज:** यदि इस गिरोह ने किसी और को भी अपना शिकार बनाया है या डराया है, तो महानगर मेट्रो न्यूज के साथ आएं। हम आपकी पहचान गुप्त रखेंगे और आपको न्याय दिलाएंगे।

जनता से अपील

सोशल मीडिया पर किसी भी मुनि या धर्म के विरुद्ध आने वाली सामग्री को साझा करने से पहले उसकी सत्यता जांचें। तकनीक के इस दौर में किसी का चरित्र हनन करना आसान है, लेकिन सत्य को मिटाना असंभव।

हमारा संकल्प: जब तक अपराधियों को सलाखों के पीछे नहीं पहुंचा देते, यह कलम नहीं रुकेगी!

संपर्क करें:

यदि आपके पास इस गिरोह से जुड़ा कोई प्रमाण है, तो हमारे संपादन विभाग से संपर्क करें।

महानगर मेट्रो न्यूज टीम

लेफ्ट की कार्बन कॉपी बन गई है टीएमसी : मोदी

- मुर्शिदाबाद में बरसे पीएम मोदी, कहा- घुसपैठियों की सरकार का अंत तय

एजेंसी

कोलकाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के जंगीपुर में जनसभा को संबोधित करते हुए तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सरकार पर हमला बोला है। पीएम मोदी ने साफ लफ्जों में कहा कि बंगाल की जनता अब 'भय' से ऊब चुकी है और 'भरोसे' की ओर बढ़ रही है। उन्होंने दावा किया कि बंगाल में भाजपा चुनाव जीत रही है। पीएम मोदी ने कहा कि जो गुंडे और सिंडिकेट पहले वामपंथी दल सीपीआईएम के लिए काम करते थे, वे अब टीएमसी का हिस्सा बन चुके हैं।

पीएम ने आरोप लगाया कि भ्रष्टाचार, 'कट मनी' और कमीशनखोरी का जो खेल लेफ्ट ने शुरू किया था, टीएमसी ने उसे और खतरनाक बना दिया है। हथियारों की तस्करी, ड्रग्स और मवेशी तस्करी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य में कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा चुकी है।

शरणार्थियों को नागरिकता की गारंटी-पीएम मोदी

पीएम मोदी ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने और तुष्टीकरण की राजनीति को खत्म करने का वादा किया है। उन्होंने विशेष रूप से मतुआ और नामशूद्र समुदायों को संबोधित करते हुए कहा कि आप किसी टीएमसी नेता की दया पर यहां नहीं हैं, आपको भारत का संविधान सुरक्षा देता है। यह मोदी की गारंटी है कि भाजपा सरकार बनते ही सीएए के तहत नागरिकता देने की प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी।

बंगाल में बंगालियों को अल्पसंख्यक नहीं बनने देंगे- पीएम मोदी- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि बंगाल में टीएमसी मां, माटी, मानुष का नारा लगाकर सत्ता में आई थी। लेकिन अब बंगाल में घुसपैठियों द्वारा, घुसपैठियों के वोट से, घुसपैठियों की सरकार बनाना चाहती है। बंगाल अब तुष्टीकरण और वोटबैंक के खेल को और बर्दाश्त नहीं करेगा। हम पश्चिम बंगाल में बंगालियों को अल्पसंख्यक नहीं बनने देंगे।

'किसान देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़'

- इनके बिना हमारे भोजन की थाली अधूरी है : राजनाथ सिंह

एजेंसी

भोपाल। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि देश की सीमा पर जवान और खेतों में किसान दोनों का समान महत्व है। दोनों ही अपनी मिट्टी के प्राण-प्रण से सेवा में तत्पर रहते हैं। किसान हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, हमारी ताकत हैं। इनके बिना हमारे भोजन की थाली अधूरी है। उन्होंने किसानों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि गांव, गरीब, नारी, युवा और किसानों का कल्याण हमारा लक्ष्य है। इनकी बेहतरी के लिए हम संकल्पबद्ध होकर प्रयास कर रहे हैं। सम्मान निधि के रूप में हर पात्र किसान के बैंक खाते में 6000 रुपये सीधे ट्रांसफर किये जा रहे हैं, जिससे वे खाद, बीज और खेती-किसानी के अन्य जरूरी समान खरीद सकें। यह किसानों की मेहनत का सम्मान है। अब तक हमारी सरकार हजारों करोड़ रुपए की सहायता किसान भाइयों को दे चुकी है।

● रक्षा मंत्री ने रायसेन में तीन दिवसीय उन्नत कृषि महोत्सव-2026 का किया शुभारंभ

खेती-किसानी की लगातार बेहतरी के लिए हमारे प्रयास आगे भी इसी तरह जारी रहेंगे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शनिवार को मध्य प्रदेश के रायसेन जिला मुख्यालय स्थित दशहरा मैदान में आयोजित उन्नत कृषि महोत्सव-2026 को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसानों की मुस्कान ही हमारी पूंजी है। खेती-किसानी बड़े जोखिम का काम है, फिर भी हमारे किसान पूरी मेहनत और लगन से देशवासियों का उदर-पोषण करते हैं।

मृदा परीक्षण के लिए स्वॉइल मोबाइल ऐप ई-फॉर्म लान्च

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा त्रि-दिवसीय कृषि महोत्सव प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया गया। केन्द्रीय कृषि मंत्रालय एवं राज्य शासन के कृषि विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में किसानों को मृदा परीक्षण में मदद के लिए स्वॉइल मोबाइल ऐप ई-फॉर्म लान्च किया गया। इस ऐप की मदद से किसान बंधु खुद अपने खेत की मिट्टी की सेहत जांच सकेंगे। कार्यक्रम में नरवाई प्रबंधन, कस्टम हायरिंग एवं अन्य शासकीय योजनाओं के 10 क्षेत्रीय हितग्राही किसानों को मंच से हितलाभ वितरित किए गए।

उन्होंने कहा कि वे स्वयं एक किसान पुत्र हैं। किसानों की वेदना और उनकी जरूरतों से वाकिफ हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि देश के किसानों के कल्याण की दिशा में हमारा मजबूत प्रयास है।

बंगाल चुनाव-2026 | 'सिंडिकेट राज' खत्म करेंगे:शाह

- घुसपैठियों को खदेड़ेंगे : अमित शाह
- 'पश्चिम बंगाल में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में वृद्धि हुई है'

एजेंसी

कोलकाता। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले के ओंडा-विष्णुपुर क्षेत्र में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए राज्य की ममता बनर्जी सरकार पर हमला बोला। उन्होंने 'सिंडिकेट राज', भ्रष्टाचार और घुसपैठ जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हुए दावा किया कि भाजपा की सरकार बनने पर इन समस्याओं का स्थायी समाधान किया जाएगा।

सभा को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि राज्य में हर स्तर पर सिंडिकेट का प्रभाव है। चाहे वह निर्माण कार्य हो या रोजमर्रा की जरूरतें। उन्होंने आरोप लगाया कि इससे आम जनता को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने जनता से 23 अप्रैल को कमल के निशान पर वोट देने की अपील करते हुए कहा 'प्रचंड बहुमत से भाजपा

को जिताइए, हम बंगाल से सिंडिकेट राज को समाप्त कर देंगे।' अमित शाह ने बांकुड़ा क्षेत्र के विकास को लेकर भी राज्य सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि पिछले 15 वर्षों में इस इलाके की उपेक्षा हुई है, जिसके कारण युवाओं को रोजगार की तलाश में पलायन करना पड़ा। साथ ही किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने आश्वासन दिया कि भाजपा सरकार बनने पर विष्णुपुर में औद्योगिक क्षेत्र स्थापित किया जाएगा और क्षेत्रीय विकास को गति दी जाएगी।

- घुसपैठ के मुद्दे पर कड़ा रुख अपनाते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा 'घुसपैठिए देश की सुरक्षा के लिए खतरा हैं।' उन्होंने दावा किया कि भाजपा सरकार बनने पर ऐसे लोगों की पहचान कर उन्हें बाहर किया जाएगा और मतदाता सूची से भी अवैध नाम हटाए जाएंगे।

महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे पर भी अमित शाह ने राज्य सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में वृद्धि हुई है और स्थिति चिंताजनक है। भाजपा सरकार बनने पर 24 घंटे महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। अपने संबोधन में शाह ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने का वादा भी दोहराया। उन्होंने कहा कि इससे देश के सभी नागरिकों के लिए समान कानून सुनिश्चित होगा।

इसके अलावा उन्होंने महिलाओं, किसानों और युवाओं के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और आर्थिक सहायता देने की भी घोषणा की।

बिहार में सरकारी डॉक्टरों के निजी प्रैक्टिस पर प्रतिबंध

एजेंसी

पटना। बिहार की नीतीश कुमार सरकार ने एक अहम निर्णय लेते हुए सरकारी चिकित्सकों की निजी प्रैक्टिस पर पूर्ण रूप से रोक लगा दी है। इस संबंध में स्वास्थ्य विभाग के सचिव लोकेश कुमार सिंह ने शनिवार को आधिकारिक पत्र जारी कर दिया। अब राज्य के सरकारी डॉक्टर निजी क्लीनिक या अन्य स्थानों पर प्रैक्टिस नहीं कर सकेंगे। यह निर्णय 'सात निश्चय-3' योजना के तहत लिया गया है, जिसके अंतर्गत एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में कार्यरत बिहार स्वास्थ्य सेवा संवर्ग, बिहार चिकित्सा सेवा संवर्ग तथा इंदिरा गांधी हृदय रोग संस्थान के चिकित्सा सेवा संवर्ग के डॉक्टरों और मेडिकल शिक्षकों पर यह प्रतिबंध लागू होगा।बिहार सरकार का मानना है कि निजी प्रैक्टिस के कारण कई बार डॉक्टरों का ध्यान बंट जाता है, जिससे सरकारी अस्पतालों में मरीजों को समय पर और समुचित इलाज नहीं मिल पाता। इस रोक के बाद डॉक्टरों की अस्पतालों में उपस्थिति बढ़ेगी और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आने की उम्मीद है। सरकार ने यह भी स्वीकार किया है कि इस फैसले से

डॉक्टरों की आय प्रभावित हो सकती है। इसे ध्यान में रखते हुए उन्हें गैर-अभ्यास भत्ता (नॉन-प्रैक्टिसिंग अलाउंस) (एनपीए) या अन्य प्रोत्साहन राशि देने का प्रावधान किया गया है। इसके लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जल्द जारी किए जाएंगे।

सत्ता के अहंकार में 'लाशें' बनीं सिर्फ आंकड़े: जागने का वक्त आ गया है, गुजरात!

क्या जनता की जान अब सिर्फ चुनावी आंकड़ों का हिस्सा बनकर रह गई है?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

लेखक: पवन माकन (ग्रुप एडिटर)

अहमदाबाद। लोकतंत्र में जनता को जनार्दन माना जाता है, लेकिन गुजरात की वर्तमान स्थिति को देखकर ऐसा लगता है कि सत्ताधारी दल के लिए जनता अब केवल एक 'वोट बैंक' और मानवीय मौतें सिर्फ 'प्रतिशत' बनकर रह गई हैं।

बस स्टॉपों पर उमड़ती लाखों की भीड़ के बीच जब कोई एक व्यक्ति दम तोड़ देता है, तो स-रकार इसे 'न्यूनतम मृत्यु दर' बताकर अपनी पीठ थपथपाती है। अरे साहब! शर्म कीजिए, जिस परिवार ने अपना चिराग खोया है, उससे जाकर पूछिए कि उसके लिए उस 'एक' की कीमत क्या है?

पुल टूटे, निदोर्षों का खून बहा और आप इसे 'सफलता' कहते हैं?

अतीत में हुई पुल दुर्घटनाओं में सैकड़ों निर्दोष लोग काल के गाल में समा गए। आज सरकार बड़ी बेशर्मी से आंकड़े पेश कर रही है कि हमने दुर्घटनाओं का प्रतिशत कम कर दिया है। क्या यह आपकी कार्यशैली की सफलता है? नहीं, यह जनता की मजबूरी और आपके भ्रष्टाचार का

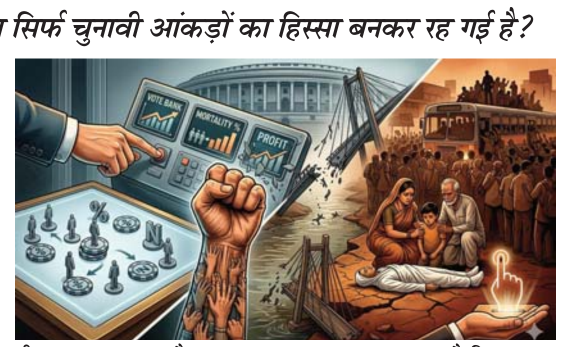

जीता-जागता सबूत है। भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि अब चुनाव आते ही 'नए चेहरों' को टिकट देकर पुराने पापों को धोने की नाकाम कोशिश की जा रही है। लेकिन गुजरात की जनता मूर्ख नहीं है; उसे इन नए चेहरों के पीछे भी 'नए भ्रष्टाचार' की बू आ रही है।

विकास का 'गुजरात मॉडल' या सिर्फ छलावा?

जब भी चुनाव आते हैं, ढोल-नगाड़ों के साथ 'गुजरात मॉडल' का बखान शुरू हो जाता है। लेकिन हकीकत यह है कि बुनियादी विकास आज भी आम आदमी की पहुंच से दूर है।

सत्तासीन दल को न जनता की जान की फिक्र है, न उनके भविष्य की; उन्हें मोह है तो सिर्फ कुर्सी का और लालच है तो सिर्फ पैसे का।

बदलाव की आहट: अब चुप रहना गुनाह है!

अब समय आ गया है कि गुजरात की जनता अपनी सोई हुई चेतना को जगाए। इस चुनाव में अपनी 'वोट की ताकत' दिखाने का अवसर है। याद रखिए, गुजरात में सत्ता का परिवर्तन सिर्फ एक राज्य की सरकार बदलना नहीं होगा, बल्कि इसकी गूंज सीधे केंद्र सरकार तक पहुंचेगी और शासकों का अहंकार चकनाचूर होगा।

'महानगर मेट्रो' की अपील:

हम किसी व्यक्ति या विशेष दल के विरोधी नहीं हैं, हम विरोधी हैं उस व्यवस्था के जो इंसान को इंसान नहीं समझती।

'महानगर मेट्रो' गुजरात की जनता से अपील करता है कि किसी भी दल की मानसिक गुलामी छोड़ें। सही, ईमानदार और कर्मठ उम्मीदवार को चुनें। गुजरात को अब झूठे प्रोपेगेंडा की नहीं, बल्कि सच्चे और जमीनी परिवर्तन की जरूरत है।

महाराष्ट्र की सियासत में 'कैप्टन' का चक्रव्यूह: सीएम बदलने के लिए क्या हुआ था 17 बार कॉल?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में एक बार फिर भूचाल आ गया है। इस बार मामला किसी नीति या गठबंधन का नहीं, बल्कि पूजा-पाठ, तंत्र-मंत्र और गंभीर आपराधिक आरोपों से घिरा है। 'कैप्टन बाबा' के नाम से मशहूर अशोक खरात, जिस पर पूजा के बहाने बलात्कार करने का संगीन आरोप है, अब अपने हाई-प्रोफाइल राजनीतिक संपर्कों के कारण चर्चा में है।

प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता अंजलि दमानिया ने एक ऐसा दावा किया है जिसने सत्ता के गलियारों में खलबली मचा दी है। दमानिया के अनुसार, खरात और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के बीच 17 बार फोन पर बातचीत हुई थी। सवाल उठ रहे हैं कि आखिर एक मुख्यमंत्री को एक ढोंगी बाबा से इतनी बार बात करने की जरूरत क्यों पड़ी?

क्या पूजा से बदली गई महाराष्ट्र की सरकार?

दमानिया का दावा और भी चौंकाने वाला है। उन्होंने संकेत दिया है कि इन बातचीत का मकसद राजनीतिक था। चर्चा है कि क्या खरात ने 'सीएम पद' हासिल करने या उसे बरकरार रखने के लिए किसी विशेष पूजा का दावा किया था?

दावा:खरात ने कथित तौर पर शिंदे को आश्वस्त किया था कि उसके तंत्र-मंत्र से सत्ता की राह आसान होगी।

कनेक्शन:खरात के संबंध केवल शिंदे तक सीमित नहीं हैं, बल्कि महाराष्ट्र महिला आयोग और कई अन्य बड़े नेताओं के साथ भी उसके फोटो और संपर्क सामने आए हैं।

भक्ति की आड़ में 'पाप' का साम्राज्य

अशोक खरात उर्फ कैप्टन बाबा पर आरोप है कि उसने आध्यात्मिक गुरु बनकर महिलाओं का शोषण किया। पुलिस तफ्तीश में जुटी है, लेकिन अंजलि दमानिया के इस नए खुलासे ने मामले को 'क्राइम' से 'क्रिमिनल पॉलिटिक्स' की ओर मोड़ दिया है।

> "एक तरफ महिला सुरक्षा की बातें होती हैं और दूसरी तरफ सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग ऐसे संदिग्ध किरदारों के संपर्क में रहते हैं। 17 कॉल का हिसाब जनता को मिलना चाहिए।"

— अंजलि दमानिया, सामाजिक कार्यकर्ता

सवालों के घेरे में 'पावर हाउस'

विपक्ष ने इस मुद्दे पर सरकार को घेरना शुरू कर दिया है। महानगर मेट्रो के पास मौजूद जानकारी के अनुसार, खरात का इस्तेमाल कई बार राजनीतिक विरोधियों को दबाने या 'गुड लक' के लिए किया जाता था।

मुख्य बिंदु जिन पर टिकी है जांच:

1. कैप्टन बाबा और शिंदे के बीच हुई 17 कॉल्स की आधिकारिक टाइमिंग क्या थी?
2. क्या सरकारी आवास पर भी खरात की आवाजाही थी?
3. महिला आयोग के साथ खरात के संबंधों ने जांच को कितना प्रभावित किया?

विस्तृत रिपोर्ट और एक्सक्लूसिव खुलासों के लिए पढ़ते रहें 'महानगर मेट्रो'।

जम्मू-कश्मीर में ड्रग तस्करी में शामिल लोगों के पासपोर्ट और आधार कार्ड किए जाएंगे रद्द

'नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ लड़ाई एक सामूहिक जिम्मेदारी'

एजेंसी

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को 100 दिन लंबे 'नशा मुक्त जम्मू-कश्मीर अभियान' की शुरुआत करते हुए ड्रग तस्करों के खिलाफ दंडात्मक कदम उठाने की घोषणा की। उन्होंने कहा, 'नशा तस्करों के पासपोर्ट, आधार कार्ड और ड्राइविंग लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनकी चल और अचल संपत्तियां जब्त कर ली जाएंगी, बैंक खाते फ्रीज कर दिए जाएंगे और वित्तीय जांच शुरू की जाएगी।' एलजी ने मौलाना आजाद स्टेडियम में एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ लड़ाई एक सामूहिक जिम्मेदारी है। यह बुराई हर गांव, हर जिले और समाज के हर वर्ग तक फैल चुकी है। उन्होंने कहा कि नशा नेटवर्क को आर्थिक और कानूनी रूप से खत्म करने के लिए एक नई मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) लागू की गई है। मनोज सिन्हा ने कहा कि जवाबदेही सुनिश्चित करने और दूसरों को सबक सिखाने के लिए पुलिस थाना स्तर पर शीर्ष नशा तस्करों की सार्वजनिक रूप से पहचान की जाएगी। नशीली दवाओं की तस्करी का इस्तेमाल आतंकवाद को वित्तपोषित करने और समाज को अस्थिर करने के एक हथियार के रूप में किया जा रहा है।उन्होंने कहा, 'एक पड़ोसी देश हमारे युवाओं को खोखला करने के लिए नशीली दवाएं भेज रहा है। यहां पहुंचने वाली हर खेप न केवल जहर है, बल्कि हमारे

भविष्य के खिलाफ एक हथियार भी है।' उन्होंने प्रवर्तन एजेंसियों को 'निर्दोषों को परेशान न करें', लेकिन दोषियों को भागने न दें' के सिद्धांत अपनाने का निर्देश दिया। शनिवार को अभियान की शुरुआत करते हुए एलजी ने पूरे जम्मू और कश्मीर में 'पद यात्रा' और बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाने का आह्वान किया। उन्होंने युवाओं, नागरिक समाज और सामुदायिक नेताओं से इस आंदोलन की बागडोर अपने हाथों में लेने का आग्रह किया।

राघव चड्ढा की 'सियासी गुगली': क्या 'हाथ' थामेंगे आप के पूर्व संकटमोचक?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

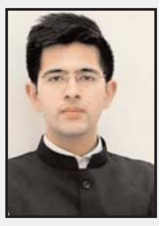

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के कभी पोस्टर बॉय रहे राघव चड्ढा की राजनीति में इन दिनों जबरदस्त उथल-पुथल मची है। राज्यसभा में पार्टी के उप-नेता पद से हटाए जाने के बाद अब राघव और कांग्रेस के बीच बढ़ती नजदीकियों ने राजधानी के सियासी गलियारों में हलचल तेज कर दी है। हाल ही में सोनिया गांधी के साथ उनकी हुई लंबी मुलाकात को जानकार महज शिष्टाचार नहीं मान रहे हैं।

AAP से बढ़ती दूरियां, कांग्रेस से बढ़ती नजदीकियां?

पिछले कुछ हफ्तों में राघव चड्ढा के तेवर बदले-बदले नजर आ रहे हैं। 2 अप्रैल 2026 को AAP ने उन्हें राज्यसभा के उप-नेता पद से हटाकर अशोक मित्तल को जिम्मेदारी सौंप दी थी। इसके बाद राघव ने सोशल मीडिया पर खामोश हूं, पराजित नहीं और घायल हूं इसलिए घातक हूं जैसे फिल्मी संवाद लिखकर अपनी नाराजगी साफ जाहिर की थी। अब सोनिया गांधी से उनकी मुलाकात ने इन चर्चाओं को हवा दे दी है कि क्या राघव पंजाब या दिल्ली में कांग्रेस का नया चेहरा बन सकते हैं।

मुलाकात के पीछे के 3 बड़े सियासी मायने

संसदीय रणनीति या दलबदल? चर्चा है कि राज्यसभा में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए कांग्रेस को राघव जैसे प्रखर वक्ता की जरूरत है।
नई पार्टी का विकल्प– राघव ने हाल ही में एक सोशल मीडिया पोस्ट पर अपनी नई पार्टी बनाने के सुझाव को दिलचस्प विचार बताया था। सोनिया गांधी से मुलाकात इसी रणनीति का हिस्सा हो सकती है ताकि विपक्षी गठबंधन में उनकी जगह बनी रहे।
केजरीवाल से तल्खी– जानकारों का कहना है कि शराब नीति मामले में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के साथ राघव के मतभेद अब खुलकर सामने आ गए हैं।

क्या कहते हैं सियासी समीकरण ?

महानगर मेट्रो विशेष में उभरते सियासी समीकरणों के तहत राघव चड्ढा फिलहाल आम आदमी पार्टी में हाशिए पर नजर आ रहे हैं, जहां उन पर सॉफ्ट छवि बनाने और पंजाब के मुद्दे न उठाने के आरोप लग रहे हैं। पार्टी उन्हें किनारे कर नए चेहरों को आगे बढ़ाने की रणनीति अपना सकती है। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दिल्ली और पंजाब में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए राघव चड्ढा को एक युवा और प्रभावशाली चेहरे के रूप में शामिल करने पर विचार कर सकती है, जबकि खुद राघव के सामने कांग्रेस में जाने या नई पार्टी बनाने जैसे विकल्प खुले हैं।

बड़ा सवाल–क्या राघव बनेंगे विद्रोही?

राघव चड्ढा ने हाल ही में एक किताब का पन्ना साझा किया था जिसका शीर्षक था— अपने आका से ज्यादा चमकने की कोशिश न करें इसे अरविंद केजरीवाल पर सीधा तंज माना जा रहा है। अब सवाल यह है कि क्या राघव चड्ढा कांग्रेस में शामिल होकर AAP के लिए घातक साबित होंगे या फिर अपनी स्वतंत्र राह चुनेंगे? महानगर मेट्रो की नजर अब राघव के अगले कदम पर टिकी है। क्या झाड़ू का साथ छूटेगा और हाथ का साथ मिलेगा? जवाब जल्द मिलने की उम्मीद है।

सुप्रीम कोर्ट की दो टूक: '15 हजार देते रहो और खुश रहो', 16 साल की जुदाई के बाद भी नहीं मिला तलाक

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। अगर आप सोचते हैं कि सालों अलग रहने और गुजारा भत्ता देने मात्र से तलाक मिल जाएगा, तो सुप्रीम कोर्ट का यह ताजा फैसला आपकी आंखें खोल सकता है। शीर्ष अदालत ने 54 वर्षीय एक सरकारी कर्मचारी की तलाक की अर्जी को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि पत्नी को दिया जा रहा गुजारा भत्ता 'सम्मानजनक' नहीं है।

मामला क्या है?
एक सरकारी पति (54 वर्ष), जिसकी मासिक सैलरी 65 हजार रुपये है, पिछले 16 सालों से अपनी पत्नी से अलग रह रहा है। पति ने कोर्ट में दलील दी कि स्वभाव में मतभेद के कारण अब साथ रहना मुमकिन नहीं है। वह हर महीने पत्नी को 15 हजार रुपये गुजारा भत्ता दे रहा है। रिटायरमेंट के बाद उसके पास पेंशन की सुविधा नहीं है, इसलिए संबंध खत्म करना ही बेहतर है।
पत्नी का दांव: 'मैं साथ रहने को तैयार हूं'
मामले में मोड़ तब आया जब पत्नी के वकील ने कोर्ट को बताया कि उनकी मुवक्किल आज भी पति के साथ घर बसाने को तैयार है। कानून की नजर में जब एक पक्ष निभाने को तैयार हो, तो 'तलाक' की राह मुश्किल हो जाती है।

कोर्ट की तीखी टिप्पणी: 'शांति से बैठो... '

जस्टिस की बेंच ने पति की दलीलों को सिरे से नकारते हुए कहा कि आज के जमाने में 15 हजार रुपये बहुत कम राशि है। अगर आप स्थायी गुजारा भत्ता का कोई बड़ा और बेहतर ऑफर देते, तो हम विचार कर सकते थे। फिलहाल शांति से बैठे रहिए, 15 हजार देते रहिए और खुश रहिए।

महानगर मेट्रो विश्लेषण: क्यों फंसा पेंच?

सैलरी बनाम गुजारा भत्ता: 65 हजार की सैलरी में 15 हजार (लगभग 23') को कोर्ट ने अपर्याप्त माना।
सुधार की गुंजाइश: पत्नी के साथ रहने की इच्छा ने पति के दावों को कमजोर कर दिया।
रिटायरमेंट का डर: पति ने पेंशन न होने का हवाला दिया, जिसे कोर्ट ने वर्तमान जिम्मेदारी से बचने का बहाना माना।
बड़ा संदेश:
सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया है कि केवल समय बीत जाने या छोटी रकम देने से शादी का बंधन नहीं टूटता। सम्मानजनक निर्वाह और पत्नी की रजामंदी के बिना कानूनी डिक्री मिलना अब ऊँट के मुँह में जीरे जैसा है। महानगर मेट्रो की सलाह: रिश्तों में कड़वाहट हो तो ऑफर बड़ा रखिए, वरना कोर्ट की नसीहत मानकर शांति से रहिए।

कलेक्टर ने सिंघोला में महिला समूह द्वारा संचालित आजीविका मूलक गतिविधियों का किया अवलोकन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। कलेक्टर जितेन्द्र यादव ने आज राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम सिंघोला को शत-प्रतिशत लखपति ग्राम की श्रेणी में शामिल करने के संबंध में ग्राम सिंघोला की लखपति दीदीयों द्वारा संचालित विभिन्न आजीविकामूलक गतिविधियों का अवलोकन किया। इस दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह उपस्थित रही। कलेक्टर ने लखपति दीदीयों से उनकी आजीविका मूलक गतिविधियों के संबंध में चर्चा की तथा आवश्यकतानुसार आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि करने के लिए सुझाव दिया। उन्होंने ग्राम पंचायत की 70 से अधिक लखपति दीदीयों से संवाद किया तथा उनके भविष्य की योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए सुझाव दिए। उन्होंने लखपति दीदी लाया साहू की इलेक्ट्रिक दुकान एवं अनीता साहू की प्लास्टिक बोरी सिलाई इकाई का भ्रमण कर उन्हें प्रोत्साहित किया। कलेक्टर ने ग्राम पंचायत की सभी दीदियों को प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना, महतारी भवन सहित शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित करने तथा आजीविका गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक सहायता करने निर्देश दिए। कलेक्टर ने इस दौरान ग्राम की 5 लखपति दीदीयों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) अंतर्गत देश की 3 करोड़ लखपति दीदी के लक्ष्य में अपनी भागीदारी निभाते हुए राजनांदगांव जिले की 39771 लखपति दीदी ने विभिन्न गतिविधि के माध्यम से विविध आय के स्त्रोत तैयार कर लिया है। इसी क्रम में ग्राम पंचायत सिंघोला में सभी 31 महिला स्वयं सहायता समूह की 318 समूह सदस्यों ने विभिन्न आय मूलक गतिविधि से जोड़ते हुए लखपति दीदी ग्राम बनने की ओर अग्रसर हुए है। जिससे बहुत जल्द ही ग्राम पंचायत सिंघोला शत-प्रतिशत लखपति ग्राम की श्रेणी में दर्ज किया जा सकेगा। इस दौरान जिला पंचायत सदस्य श्रीमती देवकुमारी साहू, जनपद सदस्य श्रीमती खुशबू साहू सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी, सरपंच, पंच, सचिव एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

सियासत का 'वॉशिंग मशीन' मॉडल और जनता की बेबसी

सत्ता की सियासत में आरोप-प्रत्यारोप बने सौदे, सवालों के बीच खड़ी जनता

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात की राजनीति में इन दिनों एक ऐसा 'थिएटर' चल रहा है, जिसका क्लाइमेक्स हर कोई जानता है, फिर भी हर बार जनता को 'मूर्ख' बनाने की कोशिश की जाती है। कल तक जो नेता एक-दूसरे के खिलाफ भ्रष्टाचार की फाइलें खोलते थे, आज वही फाइलें बंद करके एक ही कुर्सी पर बैठकर 'विकास' का राग अलाप रहे हैं।

लाखों करोड़ के आरोप...

जनता को याद है वो वक्त, जब एक नेता मंच से चिल्लाकर कहता था– 'सरकार ने 1,00,000 करोड़ का भ्रष्टाचार किया है!' दूसरा नेता कहीं और से सुर मिलाता था– '300 करोड़ का घोटाला हुआ है!' आज सवाल यह है कि क्या वो आंकड़े सच थे? अगर सच थे, तो आज दोनों साथ बैठकर मलाई क्यों खा रहे हैं? और अगर आज वे साथ हैं, तो क्या मान लिया जाए कि जनता के सामने बोला गया हर शब्द झूठ था?
यह विरोधाभास साबित करता है कि इन नेताओं की नजर में जनता सिर्फ 'अभाण' (अनपढ़) और 'मूर्ख' है।

भ्रष्टाचार की 'वॉशिंग मशीन': दाग अच्छे हैं

इसे आधुनिक राजनीति की सबसे सफल मशीन कहा जा सकता है। इसमें एक तरफ से 'भ्रष्टाचारी' और 'आरोपी' नेता अंदर जाता है, और दूसरी तरफ से 'साफ-सुथरा' और 'ईमानदार' जनसेवक बनकर बाहर निकलता है।
स्टेप 1: भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाओ और जेल भेजने की धमकी दो।
स्टेप 2: डर दिखाओ या सत्ता का लालच दो।
स्टेप 3: जैसे ही आरोपी पाला बदले, उसे गले लगा लो।
स्टेप 4: अब वही पुराना आरोपी 'राष्ट्रभक्त' और 'ईमानदार' हो गया।

खरीद 'ब्लैक' में हुई या 'टेका' के भाव ?

सियासी गलियारों में चर्चा जोरों पर है कि यह गठबंधन सिद्धांतों का है या सौदा है? क्या इन नेताओं की अंतरात्मा इतनी जल्दी बदल गई?
सच तो यह है कि यह सरेआम खेला जा रहा एक 'पॉलिटिकल ड्रामा' है। जब आरोप लगाने वाले और आरोपी एक ही थाली में खाने लगें, तो समझ जाना चाहिए कि शिकार सिर्फ जनता के भरोसे का हुआ है।

मतदाता सावधान: अब तो जागना होगा!

नेताओं को लगता है कि जनता सब देख रही है पर कुछ समझ नहीं रही। लेकिन यह उनकी सबसे बड़ी भूल है। जनता चुप है, पर वो सब देख रही है कि कैसे सत्ता की खातिर विरोध को व्यापार में बदल दिया गया है।
अगर आज हम नहीं जागे और इन 'वॉशिंग मशीन' नेताओं से सवाल नहीं पूछे, तो लोकतंत्र का यह सर्कस यूँ ही चलता रहेगा। याद रखिए, आपके वोट की कीमत इन नेताओं के सौदों से कहीं ज्यादा है।
'कल तक जो दुश्मन थे, आज वो भाई-भाई हैं, जनता के हक की उन्होंने मिलकर बलि चढ़ाई है। कुर्सी मिली तो सब साफ, वरना हर तरफ बुराई है! '

विशेष विश्लेषण: पवन माकन (ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो)

ईशुदान गढ़वी का धमाका: 'भाजपा-कांग्रेस के बीच 'इलू-इलू', जनता के साथ धोखा!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात में स्थानीय निकाय चुनावों (Local Body Elections 2026) की आहट के साथ ही सियासी पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया है। आम आदमी पार्टी (AAP) के प्रदेश अध्यक्ष और प्रखर नेता ईशुदान गढ़वी ने एक ऐसा बयान दिया है जिसने राजनीतिक गलियारों में भूकंप ला दिया है। गढ़वी का सीधा आरोप है कि चुनाव जीतने के लिए भाजपा और कांग्रेस ने हाथ मिला लिया है और वे मिलकर 'आप' के उम्मीदवारों को निशाना बना रहे हैं।

'अंदर से मिले हैं 'हाथ' और 'कमल'

ईशुदान गढ़वी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान तीखा हमला बोलते हुए कहा, 'भाजपा और कांग्रेस जनता के सामने लड़ने का नाटक करते हैं, लेकिन पर्दे के पीछे दोनों एक ही हैं। ये 'नूरा कुश्ती' सिर्फ जनता को गुमराह करने के लिए है। असल में इनका एकमात्र लक्ष्य आम आदमी पार्टी के बढ़ते प्रभाव को रोकना है। '

AAP उम्मीदवारों को परेशान करने का आरोप

गढ़वी ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि राज्य भर में आम आदमी पार्टी के उम्मीदवारों को डराया-धमकाया जा रहा है। उन्होंने कहा:
प्रशासनिक दबाव: 'आप' प्रत्याशियों के नामांकन रद्द करवाने की साजिशें रची जा रही हैं।
पुलिस का डर: कार्यकर्ताओं पर झूठे मुकदमे दर्ज कर उन्हें चुनाव प्रचार से रोकने की कोशिश हो रही है।
साठगांठ का खेल: जहाँ भाजपा मजबूत है, वहाँ कांग्रेस ढीले उम्मीदवार उतार रही है और जहाँ कांग्रेस की पकड़ है, वहाँ भाजपा पर्दे के पीछे से मदद कर रही है।

'वॉशिंग मशीन' बनाम 'ईमानदारी की राजनीति '

ईशुदान गढ़वी ने हाल ही में दलबदल करने वाले नेताओं (जैसे राजू करपडा) का नाम लिए बिना निशाना साधा कि कैसे विपक्षी नेताओं के दाग भाजपा में जाते ही धुल जाते हैं। उन्होंने मतदाताओं से अपील की कि वे इस 'अंदरूनी गठबंधन' को पहचानें और गुजरात के भविष्य के लिए तीसरे विकल्प को चुनें।

महानगर मेट्रो का विश्लेषण: क्या वाकई डरी हुई हैं बड़ी पार्टियां?

हालिया महीनों में AAP कार्यकर्ताओं पर हुई 145 से अधिक FIR और ईशुदान गढ़वी की खुद की गिरफ्तारी के बाद 'आप' आक्रामक मोड में है। गढ़वी का यह 'एक्सपोज' वाला दांव क्या स्थानीय चुनावों में मतदाताओं को जागरूक कर पाएगा? क्या जनता इस बार 'सहमति की राजनीति' को नकार कर 'संघर्ष की राजनीति' को चुनेगी?
'कांग्रेस और भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जो बारी-बारी से जनता को लूटते हैं। अब वक्त आ गया है कि इस सिक्के को ही पलट दिया जाए।' — **ईशुदान गढ़वी**

सियासत के पलटू सुर: कल तक जो थे बागी, आज वही बने केसरिया साथी

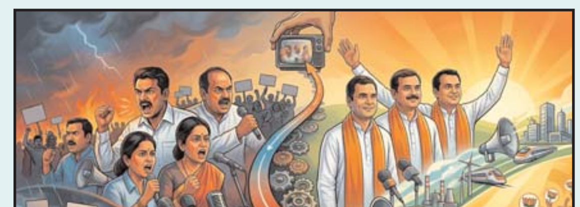

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात की राजनीति में 'हृदय परिवर्तन' कोई नई बात नहीं है, लेकिन हाल ही में आम आदमी पार्टी के फायरब्रांड नेता राजू करपडा के भाजपा में शामिल होने के बाद एक पुरानी बहस फिर से छिड़ गई है। सोशल मीडिया पर उनके पुराने वीडियो वायरल हो रहे हैं, जिनमें वे भाजपा सरकार की नीतियों की धज्जियां उड़ाते नजर आ रहे थे। सवाल यह उठता है कि क्या विचारधारा महज एक सुविधा का नाम है?

राजू करपडा: कल का 'आक्रोश', आज का 'कमल'
राजू करपडा, जो किसानों के मुद्दों पर भाजपा को आड़े हाथों लेते थे, अब उसी खेमे का हिस्सा हैं। कल तक उनके भाषणों में जो 'तानाशाही' और 'किसान विरोधी' शब्द सुनाई देते थे, भाजपा का गमछा पहनते ही वे शब्द 'विकास' और 'राष्ट्रवाद' में बदल गए।

आंदोलन की कोख से निकले नेता: जब तेवर पड़े ढीले
केवल राजू करपडा ही नहीं, गुजरात की राजनीति के कई दिग्गज चेहरों का सफर विरोध से वंदन' तक रहा है। आइए नजर डालते हैं उन बड़े नामों पर:
| नेता का नाम | पहले क्या थे तेवर? | अब क्या है स्टैंड?
हार्दिक पटेल पाटीदार आरक्षण आंदोलन के जरिए भाजपा को 'उखाड़ फेंकने' की कसम खाई थी। | अब कहते हैं, 'प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश सुरक्षित है और मैं एक छोटा सैनिक हूं।' |
अल्पेश ठाकोर शराबबंदी और बेरोजगारों के नाम पर भाजपा को जमकर कोसा करते थे। 7 आज भाजपा के टिकट पर विधायक हैं और सरकार के हर फैसले को ऐतिहासिक बताते हैं। 7
पाटीदार आंदोलन के उग्र चेहरे और भाजपा के कड़े आलोचक। | हाल ही में भाजपा में शामिल होकर 'विकास की मुख्यधारा' से जुड़ गए। |
अर्जुन मोढवाडिया | दशकों तक कांग्रेस के स्तंभ रहे और विधानसभा में भाजपा को घेरा। | भाजपा में शामिल होते समय कहा कि कांग्रेस दिशाहीन हो गई है और भाजपा ही भविष्य है। |

बयान जो बने गले की फांस
जब ये नेता पाला बदलते हैं, तो इंटरनेट की दुनिया उनके पुराने जख्मों को कुरेदती है: वह बयान आज भी शेयर किया जाता है जिसमें उन्होंने कहा था, 'मैं कभी भाजपा में नहीं जाऊंगा। ' अल्पेश ठाकोरके वे भाषण जिसमें वे सरकार को 'गरीब विरोधी' बताते थे, आज विपक्ष के लिए हथियार बन गए हैं।
राजू करपडा के वे वीडियो जिसमें वे पुलिस और प्रशासन पर बरस रहे थे, अब उन्हीं के समर्थकों को असहज कर रहे हैं।

जनता के मन में सवाल
राजनीतिक पंडितों का मानना है कि विचारधाराओं का यह विलय 'सत्ता की मजबूरी' है या 'हृदय परिवर्तन', यह तो वक्त ही बताएगा। लेकिन एक बात साफ है–गुजरात की राजनीति में अब दुश्मन का दुश्मन दोस्त' वाली कहावत पुरानी हो गई है, अब तो 'पुराना दुश्मन ही सबसे पक्का दोस्त' बन रहा है। 'सियासत की अपनी कोई जुबान नहीं होती, यहाँ कल की गाली आज की आरती बन जाती है।

गुजरात कांग्रेस–पार्टी या प्राइवेट लिमिटेड धंधा ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात में दशकों से सत्ता का वनवास झेल रही कांग्रेस की हालत आज 'वेंटिलेटर' पर पहुँची हुई है। लेकिन चौंकाने वाली बात यह नहीं है कि कांग्रेस हार रही है, चौंकाने वाली बात यह है कि पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता अब खुद दबी जुबान में नहीं, बल्कि सरेआम आरोप लगा रहे हैं कि 'गुजरात कांग्रेस के बड़े नेताओं ने राजनीति को धंधा बना लिया है। '

मलाईदार साठगांठ: अंदर से 'केसरिया' बाहर से 'हाथ'?

महानगर मेट्रो की पड़ताल और जमीनी कार्यकर्ताओं की आवाज़ एक ही तरफ इशारा कर रही है–गुजरात कांग्रेस के कुछ दिग्गज नेता 'फिक्स्ड फाइट' खेल रहे हैं। आरोप है कि चुनाव के वक्त ये नेता भाजपा के साथ पर्दे के पीछे ऐसी 'डील' करते हैं जिससे विपक्ष का वजूद ही खतरे में पड़ गया है।
* **बिकते हुए टिकट:** कार्यकर्ताओं का आरोप है कि मेहनत करने वाले युवाओं के बजाय मोटी रकम देने वालों को तरजीह दी जाती है।
* **दिखावे का विरोध:** सदन से सड़क तक विरोध केवल कैमरा के लिए होता है, हकीकत में बड़े नेताओं के व्यापारिक हित सत्ताधारियों से जुड़े हुए हैं।

युवाओं की बलि और दिग्गजों का 'कब्ज़ा'

आखिर क्यों गुजरात कांग्रेस में नए और ऊर्जावान चेहरे टिक नहीं पाते? जवाब साफ है–पार्टी के कुछ गिने-चुने 'बड़े चेहरों' ने संगठन पर दशकों से कुंडली मार रखी है।
1. रिटायरमेंट की उम्र में भी कुर्सी का मोह: जब तक युवाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जाएगा, पार्टी का पुनर्जीवित होना नामुमकिन है।
2. धरातल से कटी लीडरशिप: एयरकंडीशनर कमरों में बैठकर रणनीति बनाने वाले नेता यह भूल गए हैं कि बूथ स्तर का कार्यकर्ता आज उपेक्षित महसूस कर रहा है।

पवन माकन का सीधा सवाल: क्या 'वॉशिंग मशीन' का डर या बिजनेस का प्यार ?

आज गुजरात कांग्रेस का कार्यकर्ता पूछ रहा है कि जो नेता भाजपा की नीतियों को 'जनविरोधी' बताते थे, वे चुनाव हारते ही या संकट आते ही भाजपा में क्यों शामिल हो जाते हैं? क्या इन नेताओं के लिए कांग्रेस सिर्फ एक 'लॉन्चिंग पैड' है जहाँ से वे अपनी राजनीतिक कीमत बढ़वाते हैं और फिर बिक जाते हैं?
निष्कर्ष: अब नहीं जागे तो इतिहास बन जाएगी कांग्रेस
अगर कांग्रेस को गुजरात में अपनी साख बचानी है, तो इन 'व्यापारी नेताओं' को बाहर का रास्ता दिखाना होगा। युवाओं को कमान सौंपनी होगी और राजनीति को 'धंधा' समझने वालों की दुकान बंद करनी होगी। वरना जनता तो देख ही रही है, कार्यकर्ता भी अब चुप बैठने वाले नहीं हैं।
'कांग्रेस के दिग्गजों ने वफादारी का सौदा कर लिया,
कार्यकर्ताओं के खून-पसीने को चंद रुपयों में बेच दिया।
अब वक्त है बदलाव का–वरना पंजे की लकीरें मिटना तय है! '

विश्लेषण: पवन माकन (ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो)

IPS एसोसिएशन का प्रस्ताव: सुरक्षा कवच या आवाज़ दबाने का हथियार ?

महानगर मेट्रो एक्सक्लूसिव

अहमदाबाद। गुजरात के गृह विभाग और मुख्यमंत्री को संबोधित आरटीआई कार्यकर्ता संजय इजावा का पत्र केवल एक कागज़ का टुकड़ा नहीं है, बल्कि सत्ता के अहंकार में डूबे तंत्र के सामने एक ज्वलंत प्रश्न है। गुजरात IPS एसोसिएशन ने सोशल मीडिया पर अधिकारियों के खिलाफ 'बुनियादी आरोपों' पर कार्रवाई करने का जो प्रस्ताव पारित किया है, वह सुनने में भले ही अनुशासित लगे, लेकिन इसकी गहराई में उतरने पर लोकतंत्र की बुनियादी दरारें साफ़ नज़र आती हैं।

कानून सबके लिए समान, तो यह स्पेशल 'ट्रीटमेंट' क्यों?
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1) के तहत हर नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है। यदि कोई नागरिक झूठे आरोप लगाता है, तो मानहानि की धाराएं और अदालतें पहले से मौजूद हैं। फिर IPS एसोसिएशन जैसी संस्था को अलग से प्रस्ताव पारित कर किसे डराने की कोशिश कर रही है? क्या यह प्रस्ताव इस बात का प्रमाण नहीं है कि लोकतंत्र में अब कुछ लोग 'अति-विशिष्ट' बन गए हैं?

भ्रष्टाचार के पहाड़ों पर मौन क्यों?

जब राजकोट के पूर्व पुलिस कमिश्नर पर 75 लाख की वसूली के आरोप खुद भाजपा नेताओं ने लगाए, तब यह एसोसिएशन कहाँ था? जब जेल महानिदेशक ने आजीवन कारावास के कैदी को डाक टिकट की तरह रिहा कर दिया और सुप्रीम कोर्ट ने इस पर कड़ी फटकार लगाई, तब एसोसिएशन को अपनी छवि धूमिल होती क्यों नहीं दिखी?
सवाल: क्या एसोसिएशन केवल अधिकारियों के 'पाप' ढंकने और जनता की आवाज़ दबाने के लिए ही सक्रिय होता है?
सत्य: सतीश वर्मा, रजनीश राय या राहुल शर्मा जैसे ईमानदार अधिकारी जब प्रताड़ित किए जा रहे थे, तब इस एसोसिएशन के होंठ क्यों सिल गए थे?

खाकी में भी भेदभाव

सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि शीर्ष अधिकारियों के पास अपना एसोसिएशन है, जो सरकार तक पर दबाव बना सकता है। दूसरी ओर, दिन-रात सड़कों पर खड़े रहकर ड्यूटी करने वाले कांस्टेबल या हेड-कांस्टेबल को अपना यूनियन बनाने तक का अधिकार नहीं है। ऊपरी अधिकारियों और नेताओं के आदेशों का पालन करने वाले छोटे कर्मचारी जब अपने हक के लिए आवाज उठाते हैं, तो उन्हें 'अनुशासन' के नाम पर कुचल दिया जाता है। 'अंधेरी नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा' - यह कहावत आज गुजरात के प्रशासनिक तंत्र पर सटीक बैठती है।
जागते रहो!
संजय इजावा द्वारा उठाई गई आवाज़ उस हर नागरिक की आवाज़ है जो कानून के शासन में विश्वास रखता है। यदि आज IPS एसोसिएशन के इस सामंतशाही प्रस्ताव के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाई गई, तो कल सोशल मीडिया पर अन्याय के विरुद्ध बोलना भी अपराध बन जाएगा।
सत्ता के डंडे से डरने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि लोकतंत्र में अंतिम शक्ति जनता के हाथ में होती है। 'महानगर मेट्रो' इस मुद्दे पर अपनी कलम की धार कम नहीं होने देगा।

— पवन माकन
ग्रुप एडिटर, धानी मीडिया

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com
अहमदाबाद, (रविवार)
12 अप्रैल 2026

खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम की आधारों का उल्लंघन करने तथा खाद्य पदार्थ सुरभि स्पांज पनीर का नमूना अवमानक एवं मिथ्याछाप होने पर 6 लाख रूपए का अर्थदण्ड अधिरोपित

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। राजनांदगांव कलेक्टर जितेन्द्र यादव के निर्देशानुसार अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी सीएल मारकण्डेय ने इस्कान वाटिका गोकुल नगर राजनांदगांव निवासी अनूप नायक एवं श्रीमती सरिता नायक (लाइसेंसी), मेसर्स रौनक इंटरप्रायजेस गोकुल नगर पनेका रोड राजनांदगांव द्वारा खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम 2006 की आधारों का उल्लंघन करने तथा खाद्य पदार्थ सुरभि स्पांज पनीर का नमूना अवमानक एवं मिथ्याछाप होने पर 6 लाख रूपए का अर्थदण्ड अधिरोपित किया है।

न्यायालय अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी एवं न्याय निर्णयन अधिकारी राजनांदगांव से प्राप्त जानकारी अनुसार आरोपी अनूप नायक एवं श्रीमती सरिता नायक, मेसर्स रौनक इंटरप्रायजेस गोकुल नगर पनेका रोड राजनांदगांव को खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम की धारा 50 अंतर्गत 2 लाख रूपए, धारा 51 अंतर्गत 2 लाख रूपए, धारा 52 के अंतर्गत 1 लाख रूपए, धारा 54 अंतर्गत 50 हजार रूपए, धारा 56 अंतर्गत 50 हजार रूपए अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया है। शास्ति में दण्डित अभियुक्त द्वारा अधिरोपित शास्ति की राशि आदेश जारी दिनांक से 1 माह के भीतर जमा नहीं करने की स्थिति में अधिनियम की धारा 96 के तहत भू-राजस्व के बकाया के रूप में वसूल की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग की टीम द्वारा गोकुल नगर पनेका रोड राजनांदगांव स्थित प्रतिष्ठान मेसर्स रौनक इंटरप्रायजेस की जांच की गई। इस दौरान फर्म में विक्रय हेतु विनिर्मित व भंडारित खाद्य सुरभि स्पांज पनीर (1 किलो पैक) का नमूना लेकर विधिवत सीलबंद कर राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला रायपुर भेजा गया था। प्रयोगशाला की जांच रिपोर्ट में खाद्य पदार्थ को अवमानक तथा मिथ्याछाप घोषित किया गया। साथ ही उत्पाद के पैकेट पर अनिवार्य लेबलिंग, पोषण तत्वों, फूड एलर्जन तथा निर्माण संबंधी विवरण नियमानुसार नहीं पाया गया। जांच रिपोर्ट प्राप्त होने के उपरांत प्रकरण का परीक्षण करते हुए न्यायालय ने पाया कि आरोपियों द्वारा खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 की धाराओं के प्रावधानों का उल्लंघन किया गया है।

ममता बनर्जीः संघर्ष, सादगी और सुशासन का 'अग्निपथ'

हवाई चप्पल से सत्ता तकः सादगी और संघर्ष की मिसाल बनीं 'दीदी'

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाता। भारतीय राजनीति में जब भी संघर्ष और जुझारूपन की बात होती है, तो आँखों के सामने एक ही छवि उभरती है—हवाई चप्पल, साधारण सूती साड़ी और चेहरे पर अटूट संकल्प। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, जिन्हें जनता प्यार से 'दीदी' कहती है, आज के दौर में सादगी और ईमानदारी की एक ऐसी मिसाल हैं, जिसने सत्ता के गलियारों में रहकर भी अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा।

सत्ता नहीं, सेवा का संकल्प

ममता बनर्जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि ईमानदारी केवल आर्थिक लेनदेन तक सीमित नहीं होती, बल्कि अपनी विचारधारा और जनता के प्रति वफादारी में भी होती है। दशकों तक सड़क पर उतरकर संघर्ष करने वाली इस नेता ने साम्यवादी किले को ढहाया, लेकिन खुद कभी आलीशान बंगलों या विलासिता का मोह नहीं किया। आज भी वे अपने उसी पुराने छोटे से मकान में रहती हैं, जहाँ से उन्होंने अपना सफर शुरू किया था।

जनता के दिल तक पहुँचती योजनाएं

ममता बनर्जी की 'ईमानदारी' उनके उन कार्यों में झलकती है, जो सीधे समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचते हैं:

कन्याश्री योजनाः जिसने लाखों बेटियों को शिक्षा और आत्मनिर्भरता की राह दिखाई। इस योजना को संयुक्त राष्ट्र तक ने सराहा है।

स्वास्थ्य साथीः हर परिवार को स्वास्थ्य बीमा की सुरक्षा देकर उन्होंने साबित किया कि जनता का जीवन उनकी पहली प्राथमिकता है।

दुआरे सरकारः सरकार खुद चलकर जनता के दरवाजे तक जाए, यह विचार ही उनकी प्रशासनिक पारदर्शिता और ईमानदारी को दर्शाता है।

चुनौतियों के बीच अडिग 'दीदी'

राजनीति के इस कठिन दौर में, जहाँ विचारधाराएं बदलते देर नहीं लगती, ममता बनर्जी एक ऐसी चट्टान की तरह खड़ी हैं, जिन्होंने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उन पर व्यक्तिगत रूप से भ्रष्टाचार का कोई दाग नहीं लगा। उनका पूरा जीवन जनता के लिए समर्पित रहा है। चाहे सिंगूर का आंदोलन हो या नंदीग्राम का संघर्ष, उन्होंने हमेशा कॉरपोरेट हितों के बजाय गरीब किसान और मजदूर के हितों को तरजीह दी।

क्यों है जनता पर सीधा प्रभाव?

जनता ममता बनर्जी को इसलिए पसंद नहीं करती कि वे एक मुख्यमंत्री हैं, बल्कि इसलिए करती है क्योंकि वे उनके बीच की एक सदस्य लगती हैं। उनकी 'जमीन से जुड़ी राजनीति' और 'बेबाक अंदाज' उन्हें अन्य नेताओं से अलग करता है। जब वे बंगाल की गलियों में पैदल चलती हैं, तो वह केवल एक चुनावी स्टंट नहीं, बल्कि जनता के प्रति उनका सीधा जुड़ाव होता है।

एक महिला के रूप में अकेले दम पर राष्ट्रीय स्तर की राजनीति को प्रभावित करना और अपने राज्य की अस्मिता के लिए लड़ना, ममता बनर्जी की सबसे बड़ी जीत है। उनकी ईमानदारी उनके उन करोड़ों समर्थकों की आंखों में दिखती है, जो मानते हैं कि 'दीदी' उनके हक की लड़ाई कभी नहीं छोड़ेंगी।

'महल की सुख-सुविधाओं को ठुकराकर, जो जनता की धूल भरी गलियों को चुन ले, वही असल जननायक

जनता की 'रखवाली' या कॉरपोरेट की 'दलाली'? सत्ता के सिंहासन से सीधे सवाल!

अंधभक्ति के शोर में डूबती देश की अर्थव्यवस्थाः क्या धर्म के नाम पर वोटों की फसल काट रहे हैं सियासी सौदागर?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। लोकतंत्र में सरकार 'जनता की, जनता के द्वारा और जनता के लिए' होती है, लेकिन आज की परिस्थितियों को देखकर आम आदमी के मन में एक ही सवाल कौंध रहा है— क्या यह सरकार वाकई जनता की रक्षक है, या फिर यह सिर्फ अंबानी-अदानी जैसे चंद उद्योगपतियों की 'चौकीदार' बनकर रह गई है?

भक्तों की 'तंद्रा' और देश का भविष्य

सोशल मीडिया से लेकर गलियों तक जब जमीनी हकीकत और आंकड़े साझा किए जाते हैं, तब भी कुछ 'अंधभक्त' हकीकत स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। यह विडंबना ही है कि अपनी भक्ति के मोहपाश में बंधे ये लोग न केवल खुद को गर्त में ले जा रहे हैं, बल्कि अपनी खामोशी और अंध समर्थन से पूरे देश के भविष्य को भी दांव पर लगा रहे हैं।

700 साल का इतिहास बनाम आज का 'डर'

सियासी गलियारों में एक नैरेटिव बहुत जोर-शोर से बेचा जाता है— 'धर्म और संस्कृति खतरे में है।' लेकिन गौर करने वाली बात यह है किः

बिना किसी 'सियासी साहब' के, हमारी संस्कृति और धर्म पिछले 700 सालों से न केवल जीवित हैं, बल्कि फल-फूल रहे हैं।

आज कुछ राजनीतिक दल केवल धार्मिक असमानता और अराजकता का डर दिखाकर अपना वोट बैंक सुरक्षित कर रहे हैं।

यह 'डर' जनता की बुनियादी जरूरतों (शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार) से ध्यान भटकाने का सबसे बड़ा औजार बन चुका है।

चुनाव का वक्तः हिसाब मांगने की बारी

चुनाव नजदीक हैं और जनता की अदालत सजने वाली है। अब वक्त आ गया है कि हम खुद से कुछ कड़वे सवाल पूछें:

1. धर्म के नाम पर वोट मांगने वाले नेता आपके बच्चों के भविष्य के लिए क्या कर रहे हैं?
2. क्या आपका मत आपकी समस्याओं के समाधान के लिए है या किसी खास उद्योगपति की तिजोरी भरने के लिए?
3. जब आप महंगाई से जूझ रहे होते हैं, तब सरकार आपकी रक्षक बनती है या किसी 'दलाल' की तरह कॉरपोरेट हितों की पैरवी करती है?

महानगर मेट्रो की दो टूकः धर्म हमारी आस्था का विषय है, इसे राजनीति की ढाल मत बनने दीजिए। याद रखिए, अगर आज जनता नहीं जागी, तो आने वाली पीढ़ियां इस 'मौन' का हिसाब मांगेंगी। देश किसी व्यक्ति या पार्टी से नहीं, बल्कि सजग नागरिकों से चलता है।

जनता की आवाज, बेबाक अंदाज— देखते रहें 'महानगर मेट्रो'

क्या सत्ता की भूख ने शहीद.... पाटीदारों का बलिदान भुला दिया ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरतः गुजरात की राजनीति में 'परिवर्तन' और 'सिद्धांत' जैसे शब्द अब केवल शब्दकोश तक सीमित रह गए हैं। सूरत के वार्ड नंबर 3 से भाजपा द्वारा पाटीदार नेता अल्पेश कथीरिया की पत्नी, काव्या कथीरिया को टिकट दिए जाने के फैसले ने एक बार फिर राजनीति के गिरगिटिया रंग को उजागर कर दिया है।

आंदोलन के 'हीरो' या अवसरवाद के 'खिलाड़ी'?

एक दौर था जब यही पाटीदार नेता मंचों से दहाड़ते थे, गुजरात सरकार को 'तानाशाह' बताते थे और पाटीदार समाज के हक के लिए सड़कों पर उतरने का दावा करते थे। उस समय इनकी बातों में समाज का दर्द था या सत्ता तक पहुँचने की सीढ़ी? आज जब ये नेता उसी सत्ता की गोद में जा बैठे हैं जिसका इन्होंने पुरजोर विरोध किया था, तो जनता के मन में कई कड़वे सवाल उठ रहे हैं।

शहीदों के खून से अन्याय!

पाटीदार आंदोलन कोई मामूली प्रदर्शन नहीं था। इसमें कई युवाओं ने अपनी जान गंवाई, सैंकड़ों परिवारों ने अपनों को खोया। लेकिन आज का दृश्य देखिएः

सत्ता का नशाः आंदोलन के जरिए जो पहचान मिली, उसे अब व्यक्तिगत लाभ के लिए 'कैश' कराया जा रहा है।

बलिदान का अपमानः जिन लोगों ने लाठियां खाईं और जेल गए, क्या वे इसलिए लड़े थे कि उनके नेता कल को उसी सिस्टम का हिस्सा बनकर मलाई खाएं?

बेपर्दा हुआ चेहराः अब यह साफ हो गया है कि वह आंदोलन समाज सुधार के लिए नहीं, बल्कि अपनी राजनीतिक भूख मिटाने का एक जरिया मात्र था।

मतदाताओं से अपीलः अब जागने का वक्त है!

गुजरात की जनता और विशेषकर पाटीदार समाज को यह सोचने की जरूरत है कि क्या वे फिर से इन्हीं चेहरों पर भरोसा करेंगे? जो नेता कल तक सरकार के विरोध में 'इंकलाब' के नारे लगा रहे थे, आज वे ही सत्ता के गलियारों में नतमस्तक हैं।

'सत्ता की भूख ने इन्हें इतना अंधा कर दिया है कि इन्हें अब न शहीदों की याद है और न ही समाज की कसमें। जनता को यह समझना होगा कि उनके वोट की ताकत इन अवसरवादियों को जवाब देने के लिए है, न कि इन्हें और ताकतवर बनाने के लिए।

'वक्त आ गया है जवाब देने का!

चुनाव केवल प्रतिनिधि चुनने का जरिया नहीं है, बल्कि धोखेबाजों को सबक सिखाने का भी अवसर है। महानगर मेट्रो यह सवाल पूछता है—क्या गुजरात की जनता इन 'आंदोलनकारी' नेताओं के असली चेहरे को देखकर अपना फैसला बदलेगी? सूरत की जनता का एक-एक वोट इन नेताओं के पाखंड पर चोट होना चाहिए। याद रखिए, जो अपने सिद्धांतों का नहीं हुआ, वो आपका क्या होगा?

— पवन माकन (ग्रुप एडिटर), महानगर मेट्रो

कलेक्टर ने निःशुल्क कोचिंग और समर कैंप की तैयारी शुरू करने के दिए निर्देश

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। कलेक्टर जितेन्द्र यादव ने जिला पंचायत सभाकक्ष में शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने के लिए शिक्षा विभाग के प्राचार्यों की बैठक ली। कलेक्टर ने कहा कि बच्चों का सर्वांगीण विकास सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसके लिए सभी अधिकारी एवं शिक्षक समन्वय के साथ कार्य करें। उन्होंने जिले के सभी विकासखंड मुख्यालयों में शीघ्र ही निःशुल्क कोचिंग सेंटर प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि उपलब्ध शासकीय भवनों एवं हॉल का उपयोग कर शीघ्र निःशुल्क कोचिंग की शुरूआत सुनिश्चित की जाए। इसके लिए आवश्यक फर्नीचर, ब्लैकबोर्ड, पुस्तके एवं अन्य संसाधनों की व्यवस्था करने तथा योग्य शिक्षकों की सेवाएं निर्धारित करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर कार्यरत अनुभवी शिक्षकों को जोड़ते हुए ऑफलाइन एवं ऑनलाइन दोनों माध्यमों से पढ़ाई संचालित की जाए। कलेक्टर ने कहा कि ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान स्कूली विद्यार्थियों के लिए समर कैंप आयोजित किए जाएं। समर कैंप में पढ़ाई के साथ-साथ योग, खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों को शामिल करने के लिए कहा। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन, चैट जीपीटी एआई का उपयोग, बैंकिंग प्रक्रिया, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, पोस्ट ऑफिस एवं अन्य महत्वपूर्ण संस्थानों की जानकारी देने हेतु शैक्षणिक भ्रमण भी कराया जाए, ताकि उनका व्यावहारिक ज्ञान बढ़ सके। उन्होंने विद्यालयों से जुड़े पूर्व विद्यार्थियों को भी जोड़ने कहा। जो लोग विद्यालय में पढ़कर जीवन में सफल होकर आगे बढ़े हैं, उन्हें अपने विद्यालय के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करें। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को सौंपे गए दायित्वों का गंभीरता से निर्वहन करते हुए शिक्षा क्षेत्र में नवाचार एवं गुणवत्ता सुधार के लिए सतत प्रयास करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों एवं प्राचार्यों की पहचान कर उन्हें नियमित रूप से प्रोत्साहित करें। प्रत्येक माह बेहतर प्रदर्शन करने वाले शिक्षकों को सम्मानित करने की व्यवस्था करें, जिससे अन्य शिक्षकों को भी प्रेरणा मिले। उन्होंने विद्यालयों के परिणाम सुधार के लिए सतत मॉनिटरिंग, डेटा विश्लेषण एवं समीक्षा बैठके आयोजित करने के निर्देश दिए।

सीआरसी राजनांदगांव द्वारा विश्व पार्किंसन दिवस एवं मौखिक कैंसर जागरूकता माह का आयोजन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांवः राजनांदगांव कंपोजिट रीजनल सेंटर (सीआरसी) राजनांदगांव द्वारा विश्व पार्किंसन दिवस एवं मौखिक कैंसर जागरूकता माह पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर ओरल एवं मैक्सिलोफेशियल सर्जरी विभाग डॉ. अंशुल शर्मा, दंत चिकित्सक, सीआरसी राजनांदगांव डॉ. जय टैंक, सार्वजनिक स्वास्थ्य दंत चिकित्सा विभाग डॉ. सूरज मुल्तानी उपस्थित थे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों, लाभार्थियों एवं जनसामान्य को पार्किंसन रोग एवं मौखिक कैंसर की शीघ्र पहचान तथा इसके निवारक एवं स्वास्थ्य उपायों के बारे में बताया गया। इस दौरान दंत जांच शिविर का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों की मौखिक जांच एवं कैंसर के प्रारंभिक लक्षणों की स्क्रीनिंग की गई। छत्तीसगढ़ डेंटल कॉलेज एवं रिसर्च इंस्टीट्यूट से विषय विशेषज्ञ डॉ. श्रुति सराफ ने तंबाकू सेवन, खराब मौखिक स्वच्छता एवं अस्वस्थ जीवनशैली जैसे जोखिम कारकों के बारे में जानकारी दी तथा उनसे बचाव के उपाय बताए। उन्होंने मौखिक कैंसर जागरूकता पर व्याख्यान देते हुए इसके जोखिम कारक, प्रारंभिक लक्षण, रोकथाम एवं नियमित जांच के महत्व पर प्रकाश डाला। व्याख्याता सीआरसी राजनांदगांव की सुश्री लिलीमा पटेल (पीटी) ने पार्किंसन रोग के लक्षण, रोग की प्रगति तथा इसके प्रबंधन एवं पुनर्वास में फिजियोथेरेपी की महत्वपूर्ण भूमिका को समझाया। कार्यक्रम में सीआरसी राजनांदगांव द्वारा लाभार्थियों को सहायक उपकरणों एवं छत्तीसगढ़ डेंटल कॉलेज सुंदरा के सहयोग से ओरल हाइजिन किट दिया।

चुनावी जनसभा में ममता ने भाजपा पर लगाया बड़ा आरोप

हार के डर से भाजपा ने मेरे नामांकन पत्र को रद्द करने का किया प्रयास

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाताः मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पश्चिम मेदिनीपुर के केशियरी में एक जनसभा के दौरान एक गंभीर और विस्फोटक आरोप विरोधी पार्टी भाजपा पर लगाया। ममता ने दावा किया कि, उन लोगों ने एक 'फर्जी' हलफनामा जमा कर मेरे नामांकन पत्र को रद्द करने की कोशिश की थी। शनिवार को, ममता ने अपनी पार्टी के उम्मीदवार राम जीवन मांडी के लिए एक चुनावी रैली में शामिल हुईं। इस दौरान बड़ी संख्या में तृणमूल के हेवीवेट नेता व मंत्री शामिल थे। ममता की सभा में अपनी प्रिय दीदी को देखने के लिए लोगों का जनसैलाब उमड़ा।

बंगाल चुनाव जीतने के लिए भाजपा ने एसआईआर के रूप में बड़ा घोटाला किया

ममता ने आरोप लगाया कि, बंगाल की मतदाता सूची का 'सिस्टमैटिक इंटेंसिव रिवीजन' (एसआइआर) एक 'बड़ा घोटाला' है। इस चुनाव में भवानीपुर निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रही हैं। उस सीट के लिए अपना नामांकन रद्द करने की कथित 'साजिश' का जिक्र करते हुए, ममता ने शनिवार को कहा, उन गद्दारों ने मेरे अपने ही निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता सूची से मेरा नाम कटवाने की साजिश रची थी। उन्होंने मेरे नाम से दो फर्जी हलफनामे बनाकर मेरा नामांकन रद्द करने की कोशिश की। लेकिन आखिरकार, वे असफल रहे। उन्होंने मुझे चुनाव लड़ने से रोकने के लिए मेरा बहुत अपमान किया। अगर मेरे साथ, व्यक्तिगत रूप से, ऐसा उत्पीड़न हो सकता है, तो आप अच्छी तरह कल्पना कर सकते हैं कि वे आपके साथ क्या कर सकते हैं। जब से इस राज्य में एसआइआर की प्रक्रिया शुरू हुई है, तबसे उनकी प्रिय एवं लोकप्रिय दीदी ने इसके संबंध में कई आपत्तियां उठाई हैं। उन्होंने एसआइआर के खिलाफ एक याचिका भी दायर की और व्यक्तिगत रूप से सुप्रीम कोर्ट के समक्ष इस मामले पर बहस की। भाजपा की तुलना चुनाव आयोग से करते हुए, ममता ने जोर देकर कहा, एसआइआर एक बहुत बड़ा घोटाला है। यह कोई असली एसआइआर नहीं है। बल्कि, यह पूरी तरह से को सत्ता में लाने के उद्देश्य से किया गया एक सुनियोजित प्रयास है। यह एक बहुत बड़ा घोटाला है। इस बात को ध्यान में रखें।

बिहार में एसआईआर में नाम कटने वालों को राशन की सूची से नाम काटने की दी जा रही धमकी

चुनाव आयोग ने चुनाव के पहले दो चरणों के लिए मतदाता सूचियों को पहले ही फ्रीज कर दिया है। आखिरकार, मतदाता सूची से लगभग 9.1 मिलियन (91 लाख) नाम हटा दिए गए। ममता ने इन हटाए गए मतदाताओं को लेकर चुनाव आयोग के साथ भाजपा को एक विशेष चेतावनी दी। उन्होंने दावा किया, कि बिहार में, जिन लोगों को मतदाता सूची से हटा दिया गया है, उन्हें कथित तौर पर यह बताया जा रहा है कि उनकी राशन आपूर्ति काट दी जाएगी। उनके बैंक खाते फ्रीज कर दिए जाएंगे। उन्होंने घोषणा की कि बंगाल में ऐसे उपायों की अनुमति नहीं दी जाएगी।

अगर बंगाल में यूजीसी लागू हुआ तो आप अपनी मर्जी के मालिक नहीं रहेंगे, गौरतलब है कि, शुक्रवार को, भाजपा ने अपना चुनावी घोषणापत्र जारी किया, जिसका शीर्षक 'संकल्प पत्र' था। इस घोषणापत्र में, भाजपा ने वादा किया कि अगर वे सत्ता में आते हैं, तो वे 45 दिनों के भीतर राज्य में समान नागरिक संहिता लागू कर देंगे। इस कदम की आलोचना करते हुए ममता ने कहा, अगर यूजीसी लागू हो जाता है, तो आपके अधिकार छीन लिए जाएँगे। आपको अपने धर्म का पालन करने या अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को अपनी मर्जी से निभाने की आजादी नहीं रहेगी। हिंदू, मुसलमान और आदिवासी, हर समुदाय शादी-ब्याह को लेकर अपने अलग-अलग रीति-रिवाजों का पालन करता है। वे (भाजपा) कह रहे हैं, सिर्फ़ एक ही रास्ता होगा। बीजेपी ही मंत्र तय करेगी। बीजेपी जो कहेगी, वही करना होगा।

मेष (ARIES) (चू चे चो ला ली लू ले लो अ) — आज का दिन फायदेमंद रहेगा। सामाजिक दायराबढ़ेगा व मान सम्मान में वृद्धि होगी। किसी प्रभावशाली व्यक्ति से मुलाकात होगी।

वृष (TAURUS) (ई उ ए ओ वा वि वू वे वो) — आज आप खुद को उर्जावान महसूस करेंगे। जीवनसाथी को किसी कार्य में सफलता मिलने से घर में खुशी का माहौल बनेगा।

मिथुन (GEMINI) (का की कू घ ङ छ के को हा) — आज ऑफिस में काम का प्रेशर थोड़ा बढ़ सकता है। आप कुछ ऐसे मामलों में भी पड़ सकते हैं, जिनका समाधान निकालने में आपको थोड़ी परेशानी हो सकती है।

कर्क (CANCER) (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) — किसी खास व्यक्ति से अचानक मुलाकात आपके करियर की दिशा में बदलाव ला सकती है। इस राशि के आर्ट्स स्टूडेंट्स को थोड़ी मेहनत करने की जरूरत है।

सिंह (LEO) (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) — आज कलात्मक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, धैर्य से निर्णय लेने पर सफलता के नए आसार खुलेंगे। किसी काम में जीवनसाथी की मदद मिलने से आपको फायदा होगा।

कन्या (VIRGO) (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) — आज परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। अपने काम के लिये दूसरों को सहमत कराने में आप बहुत हद तक सफल रहेंगे। कुछ जरूरी निर्णय आपको फायदा दिला सकते हैं।

तुला (LIBRA) (रा री रू रे रो ता ती तू ते) — आज परिवार वालों के साथ टाइम स्पेंड करने का मौका मिलेगा। आपकी सभी परेशानियाँ दूर होंगी। किसी काम से थोड़ी भागदौड़ करनी पड़ सकती है।

वृश्चिक (SCORPIO) (तो ना नी नू ने नो या यी यू) — आज तरक्की के कई नए रास्ते नजर आयेंगे, आप पारिवारिक रिश्तों के बीच सामंजस्य बनाने में सफल होंगे। शाम को बच्चों के साथ समय व्यतीत करेंगे।

धनु (SAGITTARIUS) (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) — आज व्यापारी वर्ग को धन लाभ होगा, आप बच्चों के साथ खुशी के पल बितायेंगे। इस राशि के सिविल इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के लिए आज का दिन अनुकूल है।

मकर (CAPRICORN) (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) — आज पहले किये गये काम में मेहनत का बेहतर परिणाम हासिल होगा। ऑफिस का खुशनुमा वातावरण आपके मन को उत्साह से भर देगा।

कुंभ (AQUARIUS) (गु गो सा सी सू से सो दा) — आज आपके भाग्य के सितारे बुलंद रहेंगे। अगर आप किसी महत्वपूर्ण काम को पूरा करने की सोच रहे हैं, तो वह काम आज पूरा हो जाएगा।

मीन (PISCES) (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची) — आज किसी पुरानी बात को लेकर आप थोड़े परेशान हो सकते हैं, लेकिन शाम तक सब ठीक हो जायेगा। आज घर पर अचानक से कोई मेहमान आ सकता है।

किशोर आक्रामकता एवं हिंसा पर अंकुश लगाने की पहल हो

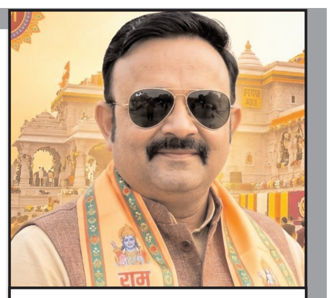

पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

यदि एक किशोर अपराध की राह पर जाता है, तो उसमें कहीं न कहीं परिवार, समाज, शिक्षा और व्यवस्था की भी जिम्मेदारी होती है। आज आवश्यकता है एक समन्वित और संवेदनशील दृष्टिकोण की, जिसमें सरकार, समाज, परिवार और शिक्षा संस्थाएं मिलकर कार्य करें। केवल दंड से नहीं, बल्कि संवाद, संस्कार और सकारात्मक मार्गदर्शन से ही इस समस्या का स्थायी समाधान संभव है।

भारतीय किशोरों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति एवं क्रूर मानसिकता चिन्ताजनक है, नये भारत एवं विकसित भारत के भाल पर यह बदनुमा दाग है। पिछले कुछ समय से किशोरों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से डरावनी, मर्मांतक एवं खौफनाक है। चिंता का बड़ा कारण इसलिए भी है क्योंकि जिस उम्र में किशोरों के मानसिक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है, उसी उम्र में कई बच्चों में आक्रामकता एवं क्रूर मानसिकता घर करने लगी है और उनका व्यवहार हिंसक होता जा रहा है। बदलते समय के साथ समाज के व्यवहार में आई यह हिंसक तीव्रता और आक्रामकता अब केवल वयस्कों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका सबसे चिंताजनक प्रभाव किशोर पीढ़ी पर स्पष्ट रूप से दिखाई देना ज्यादा परेशान करने वाला है। हाल के वर्षों में किशोरों द्वारा किए गए अपराधों की संख्या और उनकी क्रूरता ने पूरे समाज को झकझोर दिया है। यह केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं रह गया, बल्कि यह सामाजिक संरचना, पारिवारिक मूल्यों, शिक्षा व्यवस्था और सांस्कृतिक प्रभावों के गहरे संकट का संकेतक बन चुका है। दिल्ली के दयालपुर क्षेत्र में मात्र चार सौ रुपये के विवाद में एक युवक की नृशंस हत्या, जिसमें तीन किशोरों ने बेरहमी से चाकू घोंपे और चौथा उसका वीडियो बनाता रहा, इस विकृति का भयावह उदाहरण है। यह घटना केवल एक हत्या नहीं, बल्कि संवेदनाओं के क्षरण, नैतिकता के पतन और कानून के भय के समाप्त हो जाने का प्रतीक है। यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि आखिर किशोरों में यह दुस्साहस और हिंसात्मक प्रवृत्ति कहां से जन्म ले रही है? वस्तुतः, किशोर अपराधों के बढ़ते ग्राफ के पीछे कई परस्पर जुड़े हुए कारण हैं, जिनका विश्लेषण आवश्यक है। सबसे पहला और प्रमुख कारण है पारिवारिक संरचना का विघटन। पहले संयुक्त परिवारों में बच्चों को दादा-दादी, चाचा-चाची और अन्य सदस्यों के सान्निध्य में नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक मर्यादाओं का सहज प्रशिक्षण मिलता था। आज एकल परिवारों में माता-पिता की व्यस्तता और समयाभाव के कारण बच्चों के साथ संवाद का अभाव हो गया है। परिणामस्वरूप, किशोर अपनी समस्याओं और जिज्ञासाओं का समाधान बाहर ढूंढते हैं, जो कई बार उन्हें गलत दिशा में ले जाता है।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण है डिजिटल और सोशल मीडिया का अनियंत्रित प्रभाव। इंटरनेट ने जहां ज्ञान के द्वार खोले हैं, वहीं अपराध, हिंसा और अश्लीलता से भरी सामग्री भी किशोरों के लिए सहज उपलब्ध कर दी है। फिल्मों, वेब सीरीज और टीवी धारावाहिकों में हिंसा को जिस प्रकार ग्लैमराइज किया जाता है, वह किशोर मन को प्रभावित करता है। वे अपराध को एक साहसिक कार्य या रोमांच के रूप में देखने लगते हैं। कई बार वे यह भूल जाते हैं कि वास्तविक जीवन में इसके गंभीर और जीवन विनाशक घातक परिणाम होते हैं। तीसरा पहलू शिक्षा व्यवस्था का है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा और रोजगार तक सीमित हो गया है। नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण और जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षण लगभग समाप्त हो गया है। शिक्षकों की भूमिका भी अब मार्गदर्शक की बजाय केवल पाठ्यक्रम पूर्ण करने तक सीमित हो गई है। विद्यालयों में अनुशासन और संवाद का जो वातावरण होना चाहिए, वह धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, समाज में बढ़ती असहिष्णुता और आक्रामकता भी किशोरों को प्रभावित कर रही है। जब वे अपने आसपास छोटे-छोटे विवादों में लोगों को हिंसक होते देखते हैं, तो यह उनके लिए सामान्य व्यवहार बन जाता है। राजनीति, मीडिया और सामाजिक जीवन में बढ़ती कटुता और टकराव की प्रवृत्ति किशोरों के मन में भी उसी प्रकार की प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करती है। किशोर अपराधों के पीछे एक और गंभीर कारण है आपराधिक गिरोहों द्वारा उनका उपयोग। चूंकि कानून में किशोरों के लिए अपेक्षाकृत नरमी होती है, इसलिए अपराधी गिरोह उन्हें अपने कार्यों के लिए मोहरे के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति भी किशोरों को अपराध की ओर धकेलती है। नशे की लत पूरी करने के लिए वे चोरी, लूट और यहां तक कि हत्या जैसे गंभीर अपराध करने से भी नहीं हिचकते।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि किशोर न्याय से जुड़े कानूनों का लचीलापन कई बार अपराधियों के लिए सुरक्षा कवच बन जाता है। गंभीर अपराधों में संलिप्त होने के बावजूद किशोरों को शीघ्र रिहा कर दिया जाता है, जिससे उनमें कानून का भय समाप्त हो जाता है। इस संदर्भ में यह बहस भी समय-समय पर उठती रही है कि गंभीर अपराधों में संलिप्त किशोरों के लिए वयस्कों जैसा दंड प्रावधान होना चाहिए या नहीं? हालांकि केवल कानून को कठोर बनाना ही समाधान नहीं है। समस्या की जड़ें कहीं अधिक गहरी हैं और इसके समाधान के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना होगा। सबसे पहले परिवार को अपनी भूमिका को पुनः समझना होगा। बच्चों के साथ संवाद बढ़ाना, उनके मानसिक और भावनात्मक विकास पर ध्यान देना और उन्हें सही-गलत का अंतर समझाना अत्यंत आवश्यक है। माता-पिता को यह समझना होगा कि केवल भौतिक सुविधाएं प्रदान करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समय और संस्कार देना अधिक महत्वपूर्ण है।

दूसरे, शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल और व्यवहारिक प्रशिक्षण को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षकों को केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक की भूमिका निभानी होगी। स्कूलों में काउंसलिंग व्यवस्था को मजबूत करना भी जरूरी है ताकि किशोर अपनी समस्याओं को साझा कर सकें। तीसरे, मीडिया और मनोरंजन उद्योग को भी अपनी सामाजिक जिम्मेदारी समझनी होगी। हिंसा और अपराध को महिमामंडित करने के बजाय सकारात्मक और प्रेरणादायक सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिए। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी कंटेंट की निगरानी और नियंत्रण को सख्ती से लागू करना होगा। चौथे, पुलिस और प्रशासन को अपनी कार्यशैली में बदलाव लाना होगा। केवल अपराध होने के बाद कार्रवाई करने के बजाय, अपराध की रोकथाम पर अधिक ध्यान देना होगा। समुदाय आधारित पुलिसिंग, स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम और किशोरों के साथ संवाद जैसी पहलें प्रभावी हो सकती हैं।

ऑस्ट्रिया के क्लागेनफर्ट विश्वविद्यालय की ओर से किशोरों पर किए गए अध्ययन में पता चला है कि दुनिया भर में 35.8 प्रतिशत से ज्यादा किशोर मानसिक तनाव, अनिद्रा, अकारण भय, पारिवारिक अथवा सामाजिक हिंसा, चिड़चिड़ापन अथवा अन्य कारणों से जूझ रहे हैं। एकाकीपन बढ़ने से वे ज्यादा आक्रामक और विध्वंसक सोच की तरफ बढ़ने लगे हैं। मोबाइल व कथित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बह रहे नीले जहर से किशोर अराजक यौन व्यवहार एवं हिंसक प्रवृत्तियों की तरफ उन्मुख हुए हैं। किशोरों को समझाने वाला कोई नहीं है कि यह रास्ता आत्मघात का है। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड व ब्रिटेन जैसे देश किशोरों को मोबाइल से दूर रखने हेतु कानून बना रहे हैं। हमारे देश में भी शीर्ष अदालत ने समय-समय पर ऐसी घटनाओं पर तल्ख टिप्पणियां की हैं। क्या इन दर्दनाक घटनाओं से हमारे अभिभावकों, समाज-निमार्ताओं एवं हमारे सत्ताधीशों की आंख खुलेगी? बच्चों से जुड़ी हिंसा की इन वीभत्स एवं त्रासद घटनाओं से जिन्दगी सहम गयी है। हमें मानवीय मूल्यों के लिहाज से भी विकास एवं नयी समाज-व्यवस्था की परख करनी होगी। बच्चों के भीतर हिंसा मनोरंजन की जगह ले रही है। इसी का नतीजा है कि छोटे-छोटे स्कूली बच्चे भी अपने किसी सहपाठी की हत्या तक कर रहे हैं। बच्चों के व्यवहार और उनके भीतर घर करती प्रवृत्तियों पर मनोवैज्ञानिक पहलू से विचार किए बिना समस्या को कैसे दूर किया जा सकेगा?

यदि एक किशोर अपराध की राह पर जाता है, तो उसमें कहीं न कहीं परिवार, समाज, शिक्षा और व्यवस्था की भी जिम्मेदारी होती है। आज आवश्यकता है एक समन्वित और संवेदनशील दृष्टिकोण की, जिसमें सरकार, समाज, परिवार और शिक्षा संस्थाएं मिलकर कार्य करें। केवल दंड से नहीं, बल्कि संवाद, संस्कार और सकारात्मक मार्गदर्शन से ही इस समस्या का स्थायी समाधान संभव है। यदि समय रहते इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह आक्रामकता आने वाली पीढ़ियों के लिए और भी गंभीर संकट का रूप ले सकती है। इसलिए यह समय चेतने का है, सोचने का है और मिलकर समाधान खोजने का है, ताकि हमारी किशोर पीढ़ी हिंसा की राह छोड़कर सृजन और संवेदना के मार्ग पर अग्रसर हो सके।

संपादकीय

समता की आस्था

यह विडंबना ही है कि 21वीं सदी, जिसे ज्ञान की सदी भी कहा जाता है, में किसी व्यक्ति के धार्मिक स्थल विशेष जाने पर वर्ग या लिंगभेद के आधार पर रोक लगे। इस बाबत सुप्रीम कोर्ट की उस टिप्पणी से सहमत हुआ जा सकता है जिसमें कहा गया कि मंदिरों व मठों में प्रवेश में भेदभाव धर्म के लिये अच्छा नहीं है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने धार्मिक स्थलों में महिलाओं से भेदभाव के मामले में सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की थी। देश की शीर्ष अदालत का मानना था कि मंदिरों और मठों में जाने का अधिकार हर व्यक्ति को मिलना चाहिए। अदालत ने चिंता जतायी कि यदि ऐसा नहीं होता है तो समाज में विभाजन को बढ़ावा मिलेगा। जिसका धर्म विशेष की सर्वस्वीकार्यता पर भी प्रतिकूल असर पड़ेगा। दरअसल, मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली नौ सदस्यीय संविधान पीठ धार्मिक स्थलों में महिलाओं से भेदभाव के मामले में सात कानूनी सवालों पर विचार कर रही है। जिसमें केरल के बहुचर्चित सबरीमाला मंदिर में दस से पचास साल की महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध का मुद्दा भी शामिल है। दरअसल, केरल के कई संगठनों की ओर से शीर्ष अदालत में उपस्थित अधिवक्ता ने दलील दी थी कि संप्रदाय विशेष का मंदिर, इस मामले में प्रवेश की अनुमति और पूजापाठ की इजाजत एक संप्रदाय विशेष तक सीमित रख सकता है। इस प्रसंग में पीठ की न्यायाधीश बीवी नागरत्ना ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को मंदिर और मठ में प्रवेश का अधिकार मिलना चाहिए। किसी को रोका जाना हिंदू धर्म के लिए अच्छी परंपरा नहीं है। दूसरे शब्दों में इसका धर्म पर बुरा असर नहीं पड़ना चाहिए। निश्चित रूप से देशकाल व परिस्थितियों के अनुसार देश के कानून व संविधान में भी परिवर्तन किए गए हैं। ऐसा में आस्था स्थलों से जुड़ी मान्यताओं व परंपराओं पर भी तर्कशील ढंग से विचार किया जाना जरूरी है। यह किसी भी समाज में समतामूलक सोच के विस्तार के लिये अपरिहार्य शर्त होनी चाहिए। इस दिशा में उदार सोच समय की जरूरत है। इसमें दो राय नहीं कि हमारे धार्मिक स्थल हमारी आध्यात्मिक दृष्टि को समृद्ध करने में अहम भूमिका निभाते हैं। धार्मिक होने का मतलब है ममता-समता और लोककल्याण से जुड़ी व्यापक दृष्टि का होना। श्रद्धालु किसी भी धार्मिक स्थल में मन की शांति और सुकून के लिये जाते हैं। इस बात से सहमत नहीं हुआ जा सकता है कि पूजा पद्धति व धार्मिक स्थल में प्रवेश रोकने पर हमारे आराध्य प्रसन्न होंगे। पौराणिक प्रसंगों में ऐसे उदाहरण नहीं मिलते हैं जब धरती पर अवतार लेने वाले देवताओं ने किसी वंचित समाज के व्यक्ति और महिलाओं को लेकर किसी तरह के भेदभाव को प्रश्रय दिया हो।

चिंतन-मनन

कर्मयोग के बिना संन्यास नहीं

आज की चिंतनधारा में संन्यास और कर्मयोग को अलग-अलग करके देखा जा रहा है। महर्षि अरविंद ने अपने साधना-प्रम में संन्यास को कोई स्थान नहीं दिया। उन्होंने कर्मयोग का ही विधान किया। इसी प्रकार कई विचारधाराएं तो संन्यास-विरोधी भी हो गई हैं। किंतु मैं संन्यास और कर्मयोग में कोई विरोध नहीं देखता। मेरे अभिमत से कर्मयोग से साधना का प्रारंभ होता है और संन्यास उसकी चरम अवस्था है। देहमुक्त अवस्था को प्राप्त करने के लिए संन्यास की स्वीकृति अनिवार्य है और संन्यास तक पहुंचने के लिए कर्मयोग की साधना से गुजरना अनिवार्य है। कर्मयोग के बिना संन्यास नहीं और संन्यास के बिना मुक्ति नहीं। फिर दोनों में विरोध कैसे हो सकता है। संन्यास से मेरा मतलब किसी वेशभूषा से नहीं है। वह तो मात्र संन्यास की परिचायक है। उससे न केवल औरों को संन्यास का परिचय मिलता है, स्वयं साधक को भी अपनी साधना का भान रहता है। भगवान महावीर ने श्रमण-वेशधारण के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि संयम यात्रा के वहन के लिए तथा मुनि-स्वरूप के ग्रहण के लिए लोक में साधु-वेश का प्रयोजन है। इससे साधक को अपनी साधना का प्रतिपल ध्यान रहता है। इस प्रकार साधु-वेश का भी अपना महत्व और उपयोग है। किंतु संन्यास से यहां मेरा मतलब साधु-वेश से नहीं, आत्मा की उस स्थिति से है जब वह इंद्रिय-जगत से स्वयं ऊपर उठ जाती है। उस स्थिति में आए बिना कोई भी आत्मा अपना लक्ष्य पा नहीं सकती। कर्मयोग की साधना भी अकर्म की अवस्था में से गुजरती हुई साध्य तक पहुंचती है। यदि साधक का मन और इंद्रियां उसके वश में नहीं हैं, वह अरण्य में जाकर क्या करेगा? यदि उसका मन और इंद्रियां वश में हैं, फिर वह अरण्य में जाकर क्या करेगा? प्रश्न अरण्य और शहर का नहीं, जितेंद्रियता का है। जितेंद्रिय व्यक्ति के लिए अरण्य और बस्ती में कोई अंतर नहीं रहता।

जस्टिस वर्मा का इस्तीफा सवाल खड़े करने वाला

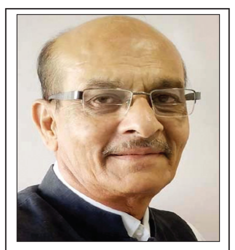

सनत जैन

जस्टिस यशवंत वर्मा ने कैश कांड विवाद और जांच के बीच ही अपने पद से इस्तीफा दे दिया। दरअसल मार्च 2025 में उनके दिल्ली आवास में आग लगने और जले हुए नोटों के बंडल मिलने के बाद से ही यह मामला सुर्खियां बटोर रहा है। हाल के घटनाक्रम में जस्टिस यशवंत वर्मा का राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को इस्तीफा न्यायपालिका और राजनीति के जटिल संबंधों पर एक बार फिर देश मे नई बहस को जन्म दे दिया है। खास बात यह है कि उनके खिलाफ महाभियोग का प्रस्ताव संसद में लंबित है, इसी बीच उनका इस्तीफा सामने आ गया है। यह स्थिति कई संवैधानिक और नैतिक सवाल खड़े कर रही है। क्या यह इस्तीफा महाभियोग की प्रक्रिया से बचने के लिए जस्टिस यशवंत वर्मा ने दिया है? यशवंत वर्मा ने अपने इस्तीफा में कोई कारण नहीं बताया है। उनका कहना है यह उनका व्यक्तिगत निर्णय है। भारतीय संविधान में न्यायाधीशों को हटाने की प्रक्रिया बेहद कठोर और दुर्लभ है। महाभियोग के माध्यम से हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जजों को हटाने की गंभीर संसदीय प्रक्रिया है। जिसमें जज के खिलाफ आरोपों की जांच और दोनों सदनों में विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है। ऐसे में यदि कोई न्यायाधीश महाभियोग से पहले ही इस्तीफा दे देता है, तो यह प्रक्रिया स्वतः समाप्त हो जाती है। यशवंत वर्मा के इस्तीफे से उनकी पारदर्शिता और जवाबदेही पर सवाल उठने लगे हैं। उनकी स्थिति के बाद अब आरोपों की सत्यता तथा उनके घर से जो जले हुए नोट बरामद हुए थे। उसकी वास्तविकता सार्वजनिक रूप से कभी सामने नहीं आ पायेगी। जब राज्यसभा में महाभियोग का प्रस्ताव पेश हुआ था उस समय के उप राष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति को रातों-रात इस्तीफा देना पड़ा था। सरकार को शक था। इस मामले में पूर्व उपराष्ट्रपति जयदीप धनखड़ ने बिना सरकार को बताए, जो कार्रवाई की उससे सरकार नाराज हो गई थी। जो उनके इस्तीफा का कारण बनी। जस्टिस वर्मा का इस्तीफा भी उसी संदर्भ से जोड़कर देखा जा रहा है। हालांकि उनके मामले में परिस्थितियाँ और संवैधानिक स्थिति भिन्न थीं। लेकिन जिस तरीके से उन्होंने अपने स्वास्थ्य कारणों का उल्लेख करते हुए उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिया था, वह सत्य नहीं था। जस्टिस वर्मा के इस्तीफा के बाद यह साबित हो गया है। उपराष्ट्रपति का इस्तीफा सरकार के दबाव में हुआ था। अब इस्तीफे की बातें छन-छन कर सामने आ रही हैं। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश का पद न्यायिक स्वतंत्रता का प्रतीक होता है। दोनों की तुलना एक दूसरे से करना उचित नहीं है। फिर भी समय और परिस्थितियों के कारण राजनीतिक अटकलें लगना स्वाभाविक है।

यह भी उल्लेखनीय है, इस तरह का घटनाक्रम लोकतंत्र की संस्थाओं और उनमें बैठे हुए लोगों के प्रति आम जनता के विश्वास को प्रभावित कर सकता है। इस तरह की घटना से जनता को संदेश जाता है, उच्च पदों पर बैठे लोग अपनी जवाबदेही से बच सकते हैं। जस्टिस वर्मा का इस्तीफा लोकतंत्र के लिए एक चिंताजनक संकेत है। आवश्यक हो जाता है, ऐसी स्थितियों में स्पष्ट नियम और ऐसी प्रक्रिया विकसित की जाए, जिसमे इस्तीफे के बाद भी आरोपों की निष्पक्ष जांच हो सके। जांच में यदि आप सत्य पाए जाएं तो सजा के प्रावधान भी होने चाहिए। यह मामला केवल एक व्यक्ति का नहीं बल्कि संस्थागत जवाबदेही का है। न्यायपालिका की गरिमा और संसद की सर्वोच्चता दोनों को संतुलित रखने के लिए संसद को इस तरह के नियम कानून बनाने होंगे, जो न्यायपालिका और जजों की न्याय को लेकर पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, फैसलों की समीक्षा होने तथा गड़बड़ी होने पर कार्यवाही की जा सके, तभी जनता का न्याय पालिका पर विश्वास मजबूत होगा। जिस तरह से जजों के ऊपर तरह-तरह के आरोप लग रहे हैं, न्याय पालिका की साख को बचाने के लिए निष्पक्ष जांच और दोषी पाए जाने पर दंडात्मक कार्यवाही होनी ही चाहिए। तभी लोकतंत्र की नींव मजबूत होगी। न्याय पालिका के कामकाज में सुधार होगा। न्याय पालिका की साख बढ़ेगी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जिस तरह से न्याय पालिका के ऊपर आरोप लग रहे हैं, उसके लिए स्वतंत्र जांच जरूरी है। यह जाँच संसद भी कर सकती है। सुप्रीम कोर्ट भी स्वतंत्र एजेंसी से जांच कराकर न्याय पालिका की साख को बढ़ाने का काम करे। आम आदमी को वर्तमान परिदृष्य को देखते हुए यही अपेक्षा है।

आस्था का बाजारीकरणः वीआईपी दर्शन और आम श्रद्धालु की उपेक्षा पर एक गंभीर सवाल

डॉ. सत्यवान सौरभ

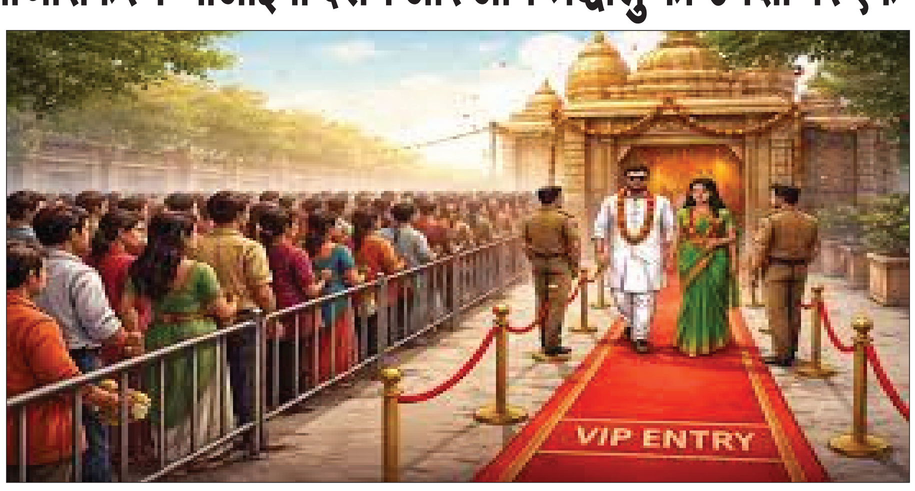

भारत जैसे देश में, जहाँ धर्म और आस्था केवल व्यक्तिगत विश्वास का विषय नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, वहाँ मंदिरों और तीर्थ स्थलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ये स्थान सदियों से समानता, शांति, और आध्यात्मिक संतुलन के प्रतीक माने जाते रहे हैं। 'भगवान के दरबार में सब बराबर हैं'—यह वाक्य केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि भारतीय समाज की गहरी मान्यता रहा है। लेकिन बीते कुछ वर्षों में इस मान्यता पर प्रश्नचिह्न लगते दिखाई दे रहे हैं।

देश के कई प्रमुख मंदिरों और तीर्थ स्थलों पर वीआईपी दर्शन, विशेष पूजन-अभिषेक और आरती के नाम पर भारी शुल्क वसूले जा रहे हैं। इन सेवाओं के बदले श्रद्धालुओं को लंबी कतारों से मुक्ति, कम समय में दर्शन, और अधिक सुविधाजनक अनुभव दिया जाता है। पहली नजर में यह व्यवस्था एक विकल्प के रूप में दिखाई देती है, लेकिन जब इसका असर आम श्रद्धालुओं के अनुभव पर पड़ता है, तब यह एक गंभीर सामाजिक समस्या बन जाती है।

आज स्थिति यह है कि एक ओर वे लोग हैं जो अतिरिक्त पैसे देकर कुछ ही मिनटों में आराम से दर्शन कर लेते हैं, वहीं दूसरी ओर बड़ी संख्या में आम लोग घंटों, कभी-कभी पूरे दिन, कतारों में खड़े रहते हैं। इस दौरान उन्हें भीड़, धक्का-मुक्की, बदतमीजी और कई बार मारपीट जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। यह अनुभव केवल असुविधाजनक नहीं, बल्कि अपमानजनक भी होता है—विशेषकर तब जब व्यक्ति अपनी आस्था और श्रद्धा के साथ वहां पहुंचा हो।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या आस्था भी अब एक 'प्रीमियम सेवा' बनती जा रही है? क्या भगवान के दर्शन के लिए भी आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव होना चाहिए? यह स्थिति केवल धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज में बढ़ती असमानता का प्रतिबिंब भी है। राशन की दुकानों से लेकर गैस सिलेंडर की लाइन तक, और अब मंदिरों तक—मिडल क्लास और आम आदमी के हिस्से में अक्सर अव्यवस्था और संघर्ष ही आता है।

वीआईपी संस्कृति के पक्ष में तर्क दिया जाता है कि इससे मंदिरों को अतिरिक्त राजस्व मिलता है, जिससे उनकी व्यवस्था और सुविधाओं को बेहतर बनाया जा सकता है। यह तर्क कुछ हद तक सही भी है। बड़े मंदिरों में रोजाना लाखों श्रद्धालु आते हैं, जिनकी व्यवस्था करना आसान नहीं होता। ऐसे में यदि कुछ लोग अतिरिक्त शुल्क देकर अलग व्यवस्था चाहते हैं, तो उससे प्राप्त धन का उपयोग सार्वजनिक सुविधाओं में किया जा सकता है।

लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब यह व्यवस्था असंतुलित हो जाती है। जब वीआईपी सुविधाएं इतनी अधिक हो जाती हैं कि आम श्रद्धालुओं के लिए उपलब्ध संसाधन और समय कम पड़ने लगते हैं, तब यह एक प्रकार का अन्याय बन जाता है। कई बार देखा गया है कि वीआईपी दर्शन के लिए सामान्य कतारों को रोका जाता है, जिससे आम लोगों का इंतजार और बढ़ जाता है। इससे असंतोष और आक्रोश पैदा होना स्वाभाविक है।

इसके अलावा, मंदिरों में कार्यरत कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों का व्यवहार भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। कई मामलों में आम श्रद्धालुओं के साथ कठोर और अपमानजनक व्यवहार किया जाता है, जबकि वीआईपी लोगों के साथ अत्यधिक विनम्रता दिखाई जाती है। यह दोहरा व्यवहार समाज में पहले से मौजूद वर्ग विभाजन को और गहरा करता है।

धार्मिक स्थलों की मूल भावना पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं होते, बल्कि वे मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन के केंद्र होते हैं। जब वहां पहुंचने वाला व्यक्ति अव्यवस्था, भीड़ और भेदभाव का सामना करता है, तो उसकी आध्यात्मिक अनुभूति प्रभावित होती है। यह अनुभव उसे निराश और हताश कर सकता है।

इस समस्या का समाधान आसान नहीं है, लेकिन असंभव भी नहीं। सबसे पहले, मंदिर प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वीआईपी सेवाओं की संख्या और प्रभाव सीमित रहे। इन सेवाओं का उद्देश्य केवल अतिरिक्त सुविधा प्रदान करना होना चाहिए, न कि आम श्रद्धालुओं के अधिकारों को कम करना।

दूसरा, भीड़ प्रबंधन के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। ऑनलाइन बुकिंग, टाइम स्लॉट सिस्टम, और डिजिटल कतार प्रबंधन जैसे उपायों से भीड़ को बेहतर तरीके से नियंत्रित किया जा सकता है। इससे सभी श्रद्धालुओं को एक व्यवस्थित और सम्मानजनक अनुभव मिल सकता है।

तीसरा, कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों को संवेदनशीलता और शिष्टाचार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। हर श्रद्धालु, चाहे वह वीआईपी हो या आम व्यक्ति, सम्मान का पात्र है। यह भावना केवल नीतियों में नहीं, बल्कि व्यवहार में भी दिखाई देनी चाहिए।

चौथा, सरकार और संबंधित ट्रस्टों को इस मुद्दे पर स्पष्ट दिशा-निर्देश बनाने चाहिए। धार्मिक स्थलों पर समानता और पारदर्शिता सुनिश्चित करना केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है।

अंततः, यह भी जरूरी है कि समाज स्वयं इस मुद्दे पर जागरूक हो। जब तक लोग इस असमानता को सामान्य मानते रहेंगे, तब तक इसमें बदलाव आना कठिन है। आस्था का अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि समानता, करुणा और न्याय जैसे मूल्यों को अपनाना भी है।

आज समय आ गया है कि हम यह सोचें कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। क्या हम ऐसे समाज की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ भगवान के दर्शन भी पैसे और पहुँच के आधार पर तय होंगे? या हम उस मूल भावना को बचाए रखेंगे, जिसमें हर व्यक्ति को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त हो?

मंदिरों की पवित्रता केवल उनकी भव्यता या व्यवस्था से नहीं, बल्कि वहां मिलने वाले अनुभव से तय होती है। यदि वह अनुभव भेदभाव और असमानता से भरा होगा, तो आस्था की नींव कमजोर पड़ जाएगी। इसलिए यह जरूरी है कि हम इस मुद्दे को गंभीरता से लें और मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाएं, जहाँ हर श्रद्धालु को यह महसूस हो कि वह वास्तव में भगवान के दरबार में है—जहाँ सब बराबर हैं।

मिर्जापुर में सनसनीखेज कांडः सुबह टहलने निकले वकील की गोली मारकर हत्या, बाइक से आया था हमलावर

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मिर्जापुर। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में सनसनीखेज वारदात सामने आई है. यहां दिनदहाड़े वकील की गोली मारकर हत्या कर दी गई. वकील सुबह टहलने निकले थे, इसी दौरान बाइक सवार व्यक्ति ने तमंचे से गोली मार दी. इस वारदात से शहर में हड़कंप मच गया है. घटना का CCTV फुटेज भी सामने आया है.

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में सनसनीखेज वारदात सामने आई है. यहां कटरा कोतवाली थाना क्षेत्र के कतवारू का पूरा इलाके में एक वकील की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी गई. इस घटना से पूरे शहर में हड़कंप मच गया है. फिलहाल पुलिस इस पूरे मामले की जांच में जुटी है. जानकारी के अनुसार, घटना कटरा कोटवाली थाना क्षेत्र की है. यहां कतवारूपुर के रहने वाले राजीव सिंह उर्फ रिंटू सिंह आज सुबह टहलने के लिए घर के बाहर निकले थे. तभी बाइक से आए दो हमलावरों ने देसी तमंचे से गोली मार दी. हमलावर ने तमंचे से सटाकर फायर किया. गोली लगने के बाद राजीव सिंह की मौके पर ही मौत हो गई. मृतक वर्तमान में थाना विंध्याचल क्षेत्र के देवरी गांव में प्रधान पति भी थे. प्रधानी की रंजिश में हत्या की आशंका जताई जा रही है. पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक ने बताया कि आरोपी की पहचान कर ली गई है. नामजद तहरीर भी मिली है. आरोपी की गिरफ्तारी के लिए टीम गठित कर दी गई है, जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा. हत्या के कारणों की जांच जारी है. पुलिस पूरे मामले की गहनता से पड़ताल कर रही है.

इस पूरी वारदात का CCTV फुटेज भी सामने आया है, जिसमें आरोपी को घटना को अंजाम देते हुए देखा जा सकता है. फुटेज में दिख रहा है कि हमलावर पहले से घात लगाए था. वह बाइक से उतरा और बेहद नजदीक जाकर वकील को गोली मार दी. तब तक दूसरा आरोपी बाइक पर बैठा रहा. वकील को गोली मारने के बाद वह बाइक के पास पहुंचा, कुछ देर तक बाइक स्टार्ट नहीं हुई. जब बाइक स्टार्ट हुई, तब तक कुछ लोग भी वहां आ चुके थे, इसी बीच वह मौके से फरार हो गया.

दिनदहाड़े हुई इस हत्या ने इलाके में दहशत फैला दी है. स्थानीय लोगों में अफरा-तफरी मच गई. वहीं इस वारदात को लेकर वकीलों में आक्रोश देखने को मिल रहा है. वारदात के बारे में सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू कर दी है.

बदायूं में चलती कार आग का गोला बनी, पत्नी की मौत, पति गंभीर रूप से झुलसा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले से दिल-दहला देने वाली खबर सामने आई है। यहां एक ष्टहत कार अचानक आग का गोला बन गई। इस भीषण हादसे में पत्नी की जिंदा जलकर मौत हो गई, जबकि पति गंभीर रूप से झुलस गया है। वह अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहा है। बताते हैं कि हादसा तब हुआ जब पति-पत्नी इलाज कराकर लखनऊ से वापस अपने घर लौट रहे थे, तभी बदायूं रास्ते में हादसा हो गया।

दरअसल, हादसा जिले के उसहैत थाना क्षेत्र के शाहजहांपुर रोड स्थित रैता गांव के पास शुक्रवार देर रात करीब 12 से एक बजे के बीच हुआ था। उसहैत कस्बे के वार्ड नंबर 6 निवासी अर्पित भारद्वाज (32) अपनी पत्नी प्रिया भारद्वाज (28) को अस्पताल से डिस्चार्ज कराकर घर ला रहे थे। प्रिया कार की पिछली सीट पर लेटी हुई थी, तभी अचानक चलती गाड़ी में आग लग गई। देखते ही देखते कार आग का गोला बन गई और धधकती गाड़ी में प्रिया की जिंदा जलकर दर्दनाक मौत हो गई।

जिंदा जल गई प्रिया

आग इतनी भीषण थी कि प्रिया को संभलने का मौका तक नहीं मिला और वह जिंदा जल गई। वहीं, अर्पित किसी तरह गाड़ी से बाहर निकल पाया, लेकिन वह भी गंभीर रूप से झुलस गया। चीख-पुकार सुनकर आसपास के ग्रामीण दौड़कर मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने गंभीर रूप से घायल अर्पित को जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसका इलाज जारी है। वहीं, प्रिया के जले हुए अवशेषों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

अस्पताल से घर लौट रहे थे

मिली जानकारी के मुताबिक, अर्पित भारद्वाज पहले पत्रिकारिता के क्षेत्र में सक्रिय थे और बाद में स्वास्थ्य विभाग में ब्लॉक कोऑर्डिनेटर के पद पर कार्यरत हो गए। साल 2023 में अर्पित की शादी लखनऊ के पलिया निवासी प्रिया के साथ हुई थी। हाल ही में प्रिया का ऑपरेशन हुआ था और वह स्वस्थ होकर घर लौट रही थी, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

पिता ने कहा- बेटा गंभीर घायल है

रात के सन्नाटे में अचानक लगी आग ने पूरे परिवार की खुशियां छीन लीं। फायर बिग्रेड को मौके पर बुलाया गया। जिसने मशक्कत कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और कार जलकर खाक हो चुकी थी। अर्पित के पिता प्रमोद भारद्वाज ने पुत्रवधू की हादसे में जिंदा जलकर मौत की पुष्टि करते हुए बताया कि बेटा गंभीर रूप से घायल है और अस्पताल में भर्ती है।

कभी गोवा, कभी बंगाल तो कभी महाराष्ट्र... 35 साल से भाग रहा था हत्यारा, लुधियाना से गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने 35 साल से पुलिस के साथ लुका-छिपी खेल रहे क़त्ल के एक आरोपी को पंजाब के लुधियाना से गिरफ्तार किया है. दरअसल 2 अगस्त 1991 को दिल्ली पुलिस के कंट्रोल रूम में कॉल आई, कॉलर ने बताया कि पूर्वी दिल्ली के त्रिलोकपुरी में किसी ने घर के अंदर मां और बेटे को चाकू मारकर बुरी तरह घायल कर दिया है. पुलिस ने मौके पर पहुंच कर तुरंत दोनों को हॉस्पिटल पहुंचाया, लेकिन मां की मौत हो गई. जबकि कई दिनों के इलाज के बाद बेटे की जान बच गई थी. आरोपी ने दोनों के गले और चेहरे पर चाकू से कई गंभीर वार किए थे. डीसीपी क्राइम आदित्य गौतम ने बताया कि उस वक़्त जब बेटे को होश आया तो उसने बयान दिया था कि ये हमला उसके किराएदार छवि लाल वर्मा ने किया था. छवि वर्मा को पता लग चुका था कि बेटे की जान बच गई है और वो पकड़ा जाएगा. इसलिए छवि लाल फरार हो गया. पुलिस ने लगातार छवि लाल की तलाश की, लेकिन छवि लाल पलट के घर तक नहीं आया.

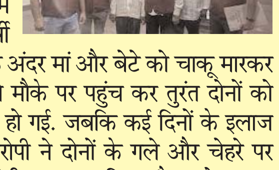

स्लीपर मॉड्यूल बनाने की तैयारी, पाकिस्तान में बैठे आकाओं के इशारों पर युवाओं की भर्ती, बिजनौर में 2 आतंकी गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

बिजनौरः उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में आतंकी गतिविधियों में शामिल उबैद मलिक और जलाल हैदर उर्फ समीर को यूपी एटीएस ने गिरफ्तार किया है। वहीं, विदेश में बैठे मेरठ निवासी आकिब समेत बिजनौर के मैजुल और आजाद के खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया गया है।

स्लीपर सेल तैयार करने की योजना थी

एडीजी कानून व्यवस्था अमिताभ यश के अनुसार, पकड़े गए आरोपी सोशल मीडिया के जरिए युवाओं को भर्ती करने और संगठित नेटवर्क बनाने का काम कर रहे थे। मामले में गुजरात कनेक्शन सामने आया है। जांच एजेंसियों के अनुसार, उबैद नेपाल भागकर वहां एक बड़ा आतंकी नेटवर्क खड़ा करने की फिराक था। उबैद को सऊदी अरब में बैठे आजाद ने नेपाल भागने की सलाह दी थी, जिससे वह पुलिस से बच सके। नेपाल में बैठकर भारत में स्लीपर मॉड्यूल तैयार करने की योजना थी।

युवाओं की भर्ती की जा रही थी

अमिताभ यश ने बताया कि तीन साल पहले काम के सिलसिले में उबैद गुजरात गया था। गुजरात में ही उबैद का जलाल से संपर्क हुआ। जलाल हैदर ने ही दुबई में आकिब और मैजुल से उबैद की वीडियो कॉल पर बात कराई थी। कट्टपंथी और देश-विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए युवाओं की भर्ती की जा रही थी। साथ ही संगठित नेटवर्क बनाया जा रहा था। जांच में खुलासा हुआ कि दुबई में बैठे यूपी पुलिस के वॉन्टेड आजाद ने उबैद को नेपाल बागने की सलाह दी थी।

पाकिस्तान में बैठे आकाओं के इशारों पर चला रहे थे नेटवर्क

मिल रही जानकारी के अनुसार, पूरा नेटवर्क पाकिस्तान में बैठे आकाओं के इशारों पर चल रहा था। सोशल मीडिया समेत अन्य माध्यमों के जरिए गिरोह अपने नेटवर्क को विस्तार दे रहा था। पुलिस के अनुसार, 23 नवंबर 2025 को वायरल हुए वीडियो ने पूरे मामले की परतें खोल दी हैं। इस वीडियो में मेरठ निवासी आकिब के साथ आजाद और उबैद मलिक भी दिखाई दिए थे। इसमें आकिब एके-47 और हैंड ग्रेनेड हथियार लिए हुए था। हालांकि, इसको खिलौना बताया गया था।

डॉक्टर नहीं है, कल आना... कराहते- कराहते सड़क पर हुई महिला की डिलीवरी, अस्पताल की ऐसी लापवाही

महानगर मेट्रो ब्यूरो

शामली। उत्तरप्रदेश के शामली जिला अस्पताल में लापरवाही का बड़ा मामला सामने आया, जहां गर्भवती महिला को भर्ती नहीं किया गया और उसने गेट के बाहर बच्चे को जन्म दिया. घटना के बाद लोगों में आक्रोश फैल गया और किसान यूनियन ने हंगामा किया. प्रशासन ने जांच के आदेश दिए हैं, जबकि दोषियों पर कार्रवाई की मांग तेज हो गई है. उत्तर प्रदेश के शामली जिले से स्वास्थ्य व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करने वाली एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है. यहां जिला अस्पताल के मुख्य गेट के बाहर एक गर्भवती महिला को प्रसव पीड़ा के दौरान घंटों तड़पना पड़ा और अंततः उसने सड़क किनारे ही बच्चे को जन्म दे दिया. आरोप है कि अस्पताल प्रशासन ने महिला को भर्ती करने से इनकार कर दिया, जिसके चलते यह स्थिति बनी.

'न बेड खाली है और न ही डॉक्टर हैं, कल आना'

परिजनों के मुताबिक, महिला को देर रात प्रसव पीड़ा होने पर जिला अस्पताल लाया गया था. लेकिन अस्पताल में मौजूद स्टाफ ने कथित तौर पर यह कहकर भर्ती करने से मना कर दिया कि न तो बेड खाली है और न ही डॉक्टर उपलब्ध हैं. इस दौरान महिला की हालत बिगड़ती गई और वह अस्पताल के गेट के बाहर ही गिर पड़ी. मजबूरन आसपास मौजूद महिलाओं ने चादर की आड़ बनाकर सड़क पर ही डिलीवरी कराई. घटना का वीडियो सामने आने के बाद इलाके में आक्रोश फैल गया. बड़ी संख्या में लोग और भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ता जिला अस्पताल पहुंचे और सीएमओ कार्यालय पर प्रदर्शन किया. प्रदर्शनकारियों ने सीएमओ को घेरकर स्वास्थ्य विभाग के लापरवाह कर्मचारियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की मांग की. इस दौरान काफी देर तक हंगामा होता रहा.

'तीन दिन में दोषियों पर कार्रवाई हो नहीं तो...'

सीएमओ डॉ. अनिल कुमार ने कहा कि कर्मचारियों को निलंबित करने का अधिकार उनके पास नहीं है और इस संबंध में उच्च अधिकारियों द्वारा ही कार्रवाई की जाएगी. उन्होंने बताया कि पूरे मामले की जांच के लिए एक कमेटी गठित कर दी गई है और रिपोर्ट शासन को भेजी जाएगी. उधर, प्रदर्शन कर रहे किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि यदि तीन दिन के भीतर दोषियों पर कार्रवाई नहीं हुई तो वे फिर से आंदोलन करेंगे.

इस घटना ने सरकारी अस्पतालों की कार्यप्रणाली और व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं. फिलहाल मां और नवजात दोनों सुरक्षित बताए जा रहे हैं, लेकिन इस घटना ने स्वास्थ्य तंत्र की खामियों को उजागर कर दिया है. प्रशासन अब जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की बात कह रहा है.

सोशल मीडिया पर भड़के लोग

घटना का वीडियो देखकर हर कोई भड़क उठा. सोशल मीडिया पर ट्रोल्स की बाढ़ आ गई. लोग लिख रहे हैं - 'सरकारी अस्पताल = सड़क पर डिलीवरी', स्वास्थ्य मंत्री और CMO साहब, अब तो आंख खोलिए! अगर जिला अस्पताल गर्भवती को भी नहीं संभाल सकता तो आखिर किस काम का? नवजात और मां दोनों सुरक्षित हैं, लेकिन घाव गहरा है. यह घटना न सिर्फ एक परिवार की, बल्कि पूरे स्वास्थ्य तंत्र की पोल खोल रही है.

दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा पर बड़ा कदम, 300 पुलिस चौकियों से सबवे-फ्लाईओवर होंगे सुरक्षित

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। दिल्ली में महिलाओं और पैदल यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए पीडब्लूडी विभाग ने बड़ा प्लान तैयार किया है. इसके तहत सबवे, फ्लाईओवर और फुट ओवरब्रिज पर 300 पुलिस चौकियां बनाई जाएंगी. इससे असुरक्षित इलाकों में पुलिस की मौजूदगी बढ़ेगी, गश्त तेज होगी और चोरी-तोड़फोड़ पर रोक लगेगी. दिल्ली में महिलाओं और पैदल यात्रियों की सुरक्षा को लेकर सरकार ने बड़ा एक्शन प्लान तैयार किया है. लोक निर्माण विभाग मंत्री परवेश साहिब वर्मा के नेतृत्व में राजधानी के सबवे, फ्लाईओवर और फुट ओवरब्रिज को सुरक्षित बनाने के लिए करीब 300 नई पुलिस चौकियां बनाने जा रहा है. यह चौकियां खासतौर पर उन जगहों पर स्थापित की जाएंगी, जिन्हें लंबे समय से असुरक्षित माना जाता रहा है. जैसे सबवे, फ्लाईओवर के नीचे के इलाके और फुट ओवरब्रिज के आसपास के क्षेत्र. मंत्री वर्मा के अनुसार, PWD इन चौकियों का निर्माण करेगा और बाद में इन्हें दिल्ली पुलिस को सौंप दिया जाएगा, ताकि इन स्थानों पर नियमित पुलिस की मौजूदगी सुनिश्चित हो सके.

इस योजना पर करीब 8 से 10 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है, जिसका पूरा खर्च PWD विभाग उठाएगा. सरकार का मानना है कि इससे खासकर महिलाओं को सुरक्षित माहौल मिलेगा और आम लोगों का भरोसा भी बढ़ेगा.

पहले चरण में शहर के व्यस्त और संवेदनशील इलाकों को चुना गया है, जिनमें AIIMS फ्लाईओवर, ढौला कुआं, ITO, रिंग रोड और लाजपत नगर शामिल हैं. इसके अलावा भैरों मार्ग, लाला लाजपत राय मार्ग और आंद्रूज गंज के आसपास के अंडरपास भी इस योजना का हिस्सा होंगे. दरअसल, कई सर्वे में सामने आया है कि 30 प्रतिशत से ज्यादा लोग सुरक्षा कारणों से सबवे का इस्तेमाल करने से बचते हैं. इसकी मुख्य वजह खराब रोशनी, सुनसान माहौल, अतिक्रमण, गंदगी और अवैध पार्किंग जैसी समस्याएं हैं. शाम के समय ये स्थान खासतौर पर महिलाओं के लिए असुरक्षित महसूस होते हैं. सरकार का कहना है कि नई पुलिस चौकियों से न सिर्फ सुरक्षा बढ़ेगी, बल्कि चोरी और सार्वजनिक संपत्तियों की तोड़फोड़ पर भी लगाम लगेगी.

गोरखपुर में कट गए 6 लाख 45 हजार वोटरों के नाम, सभी 9 विधानसभा सीटों पर कितना पड़ेगा असर ? नेताओं की जुबानी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

गोरखपुरः उत्तरप्रदेश के गोरखपुर में 9 विधानसभा हैं। सभी पर भाजपा के विधायक काबिज हैं। सपा और कांग्रेस ने एसआईआर प्रक्रिया को भाजपा की साजिश बताया है। विशेष गहन पुनिरीक्षण प्रक्रिया (SIR) के तहत गोरखपुर की 9 विधानसभा सीटों से लगभग 6 लाख 45 हजार वोटरों के नाम कट चुके हैं। यह एक बड़ा आंकड़ा है। अब देखने वाली बात होगी कि आगामी 2027 विधानसभा चुनाव में इन कटे वोटों का प्रत्याशियों पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसको लेकर भावी प्रत्याशियों के माथे पर पसीना आ गया है। वे अभी से गुणा-गणित में जुट गए हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इसका सीधा असर सत्तासीन पार्टी भाजपा पर दिखाई दे रहा है। सभी 9 विधानसभा सीटों पर भाजपा के ही विधायक काबिज हैं। इन विधानसभा सीटों में सबसे प्रमुख सीट गोरखपुर सदर की है, जहां से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं विधायक हैं। हालांकि उनकी सीट पर इसका कोई असर दिखाई नहीं पड़ता, लेकिन बाकी आठ सीटों पर सत्तारूढ़ पार्टी के विधायकों की किस्मत पर बट्टा जरूर लग सकता है।

निष्क्रिय वोटरों की ही संख्या घटीः राजनीतिक विश्लेषक

राजनीतिक विश्लेषक राजदीप का कहना है ज्यादातर वही वोटर कटे हैं, जो या तो मतदान के वक्त निष्क्रिय थे या उनके नाम एक से अधिक विधानसभा की मतदाता सूची में शामिल थे। इसके अलावा इलेक्शन कमीशन या राजनीतिक पार्टियों के काफी प्रचार प्रसार के बावजूद मतदान का प्रतिशत बहुत तेजी से बढ़ा नहीं है। विगत कुछ वर्षों की बात की जाए तो ज्यादातर 58 से 60% से ज्यादा मतदान होता नहीं है। इसका मतलब इस प्रक्रिया के तहत निष्क्रिय वोटरों की ही संख्या घटी है।

'भाजपा के समर्थक मतदान करने में पीछे'

राजदीप ने कहा, मेरे हिसाब से इसका कुछ असर आगामी विधानसभा चुनाव में होगा लेकिन बहुत बड़ा अंतर नहीं। जागरूक मतदाताओं की बात की जाए तो भाजपा के समर्थक मतदान के मामले में पीछे रहते हैं। वहीं अन्य पार्टियों के मतदाता मतदान के समय बेहद सक्रिय देखे जाते हैं। जिन मतदाताओं ने अपने नाम एक जगह से कटवा कर अपने पैतृक क्षेत्र में ही बरकरार रखे हैं, उनमें भी ज्यादातर बुद्धिजीवी वर्ग या भाजपा के ही समर्थक शामिल हैं। अब आगामी चुनाव में ऊंट किस करवट बैठता है यह आने वाला वक्त तय करेगा। वहीं, आम लोगों का कहना है कि इस बारे में हमें बहुत जानकारी तो नहीं। यदि नाम कटे हैं तो इसका असर आगामी चुनाव में जरूर होगा।

यह भाजपा की साजिशः कांग्रेस नेता अनिल सोनकर

इस संदर्भ में गोरखपुर जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री अनिल सोनकर का कहना है कि यह पूरी तरह सोची समझी रणनीति का हिस्सा है। भाजपा किसी भी तरह में से सत्ता में बना रहना चाहती है। ज्यादातर उसी क्षेत्र से मतदाताओं को सूची से हटाया गया है जहां से उन्हें वोट नहीं मिलता। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण पश्चिम बंगाल है, जहां माइनॉरिटी के मतदाताओं के वोट काटे गए हैं।

फर्जी आवेदन देकर नाम कटवाने वालों की जांच होः सपा प्रवक्ता कीर्ति निधि पांडेय

जब इस बारे में सपा के प्रदेश प्रवक्ता कीर्ति निधि पांडेय से बात की गई तो उनका कहना था कि मैं इलेक्शन कमीशन से मांग करता हूं कि जिन लोगों ने फर्जी एप्लीकेशन देकर मतदाताओं के नाम कटवाने का काम किया है, सबसे पहले उसकी जांच कराई जाए और ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष लगातार इस बात को मीडिया के माध्यम से रोज कह रहे हैं। हालांकि ऐसा ही एक मामला नंदलाल कश्यप और दशरथ का है। इनका प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से साफ कहना है कि हम लोग मौजूद हैं। इसके बावजूद हमारे नाम मतदाता सूची से कैसे काटे जा सकते हैं। आखिर इसके लिए एप्लीकेशन किन लोगों ने दिया है इसकी जांच निश्चित रूप से होनी चाहिए। कीर्ति निधि आगे कहते हैं कि यदि ऐसा ही रहा तो पिछले चुनाव में ये लोग हाफ हुए थे तो आगामी 2027 के चुनाव में पूरी तरह साफ हो जाएंगे।

वोट कटने से हमारी पार्टी पर कोई असर नहींः भाजपा नेता प्रेमनाथ शुक्ल

भाजपा के लोगों का नजरिया इस बारे में बिल्कुल अलग है। भाजपा के वरिष्ठ नेता और मंडल प्रभारी प्रेमनाथ शुक्ल कहते हैं कि SIR की प्रक्रिया पूरी तरह जायज है, हम इसका स्वागत करते हैं। जिन लोगों के भी नाम काटे गए हैं, वह या तो फर्जी या मृतक या फिर अपने विधानसभा क्षेत्र से जा चुके वोटर थे, आगामी चुनाव में हमारी पार्टी पर इसका कोई असर नहीं होने वाला

कार-बाइक-ऑटो कुछ भी खरीदिए, मिलेगी बंपर छूट, जानें सरकार का प्लान

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण पर लगाम के लिए रेखा गुप्ता सरकार लगातार एक्शन मोड पर जुटी हुई है। इसी बीच सरकार ने 'दिल्ली इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी 2026-2030' का ड्राफ्ट जारी किया है। चार साल की यह नीति इलेक्ट्रिक गाड़ियों को तेजी से बढ़ावा देने, हवा की गुणवत्ता सुधारने और साफ-सुथरे ट्रांसपोर्ट सिस्टम को मजबूत करने पर केंद्रित है। यह पॉलिसी भारत के संविधान के आर्टिकल 21 से प्रेरित है, जो स्वच्छ हवा और प्रदूषण मुक्त वातावरण को जीवन के अधिकार का हिस्सा मानती है। साथ ही, एमसी मेहता बनाम भारत संघ के फैसले और पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 और मोटर वाहन अधिनियम, 1988 जैसे कानूनों का भी इसमें आधार लिया गया है।

दिल्ली सरकार क्यों लेकर आई नई ईवी पॉलिसी

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली में सर्दियों के दौरान 23 फीसदी प्रदूषण के लिए गाड़ियां जिम्मेदार हैं। खास बात यह है कि यहां टूव्हीलर कुल वाहनों का करीब 67 फीसदी हैं, इसलिए इन्हें तेजी से इलेक्ट्रिक में बदलना बेहद जरूरी माना गया है। इसके अलावा तीन पहिया, कमर्शियल कार, और छोटे मालवाहक वाहन (एन1) भी ज्यादा प्रदूषण फैलाते हैं। इस नीति के मुख्य उद्देश्य सभी वाहन वर्गों में ईवी अपनाने को बढ़ावा देना, चार्जिंग नेटवर्क का विस्तार करना, बैटरी रीसाइक्लिंग सिस्टम विकसित करना और पेट्रोल-डीजल वाहनों पर निर्भरता कम करना हैं।

EV पॉलिसी 2026-30 का ड्राफ्ट जारी, जानें बड़ी बातें

दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार ने ईवी पॉलिसी 2026 से 2030 का ड्राफ्ट जारी किया है। फैसला लिया गया कि इलेक्ट्रिक गाड़ी खरीदने पर सरकार सीधे बैंक खाते में सब्सिडी (डीबीटी) देगी। दोपहिया इलेक्ट्रिक वाहनों पर पहले साल 10,000 रुपए प्रति किलोवाट (अधिकतम 30,000 रुपए), दूसरे साल 6,600 रुपए (अधिकतम 20,000 रुपए) और तीसरे साल 3,300 रुपए (अधिकतम 10,000 रुपए) की सब्सिडी मिलेगी। ई-ऑटो (तीन पहिया) के लिए पहले साल 50,000 रुपए, दूसरे साल 40,000 रुपए और तीसरे साल 30,000 रुपए की मदद दी जाएगी। वहीं छोटे इलेक्ट्रिक ट्रक (एन1) पर पहले साल 1 लाख रुपए, दूसरे साल 75,000 रुपए और तीसरे साल 50,000 रुपए तक का फायदा मिलेगा।

पुरानी गाड़ियों को लेकर ये बड़ा फैसला

दिल्ली सरकार ने पुरानी गाड़ियों के स्क्रैप को लेकर भी खास प्लानिंग की है। इसमें पुरानी बीएस-IV या उससे नीचे की गाड़ी स्क्रैप करने पर भी प्रोत्साहन मिलेगा। दोपहिया पर 10,000 रुपए, तीन पहिया पर 25,000 रुपए, कार पर 1 लाख रुपए (30 लाख तक की कीमत वाली, पहले 1 लाख लोगों तक) और एन1 ट्रक पर 50,000 रुपए मिलेंगे।

दिल्ली में इलेक्ट्रिक व्हीकल खरीदने जा रहे तो खुशखबरी

दिल्ली में रजिस्ट्रेशन कराने पर सभी ईवी को रोड टैक्स और रजिस्ट्रेशन फीस में 100 प्रतिशत छूट मिलेगी। 30 लाख तक की इलेक्ट्रिक कारों को पूरी छूट और स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड को 50 प्रतिशत छूट मिलेगी, जबकि 30 लाख से ऊपर की कारों को कोई छूट नहीं मिलेगी। चार्जिंग और बैटरी स्वैपिंग नेटवर्क के लिए दिल्ली ट्रांसको लिमिटेड को नोडल एजेंसी बनाया जाएगा। यह संस्था प्लानिंग, लोकेशन तय करने और बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी। साथ ही एक डिजिटल पोर्टल और सिंगल विंडो सिस्टम भी बनाया जाएगा ताकि चार्जिंग स्टेशन लगाना आसान हो सके। वाहन निर्माता कंपनियों को हर डीलरशिप पर कम से कम एक पब्लिक चार्जिंग स्टेशन लगाना होगा। इसमें 2-3 व्हीलर और 4 व्हीलर के लिए अलग-अलग चार्जिंग पॉइंट होंगे। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति बैटरी कलेक्शन सेंटर बनाने और सुरक्षित निपटान के लिए नियम तय करेगा। बैटरी ट्रैकिंग सिस्टम भी विकसित किया जाएगा ताकि रीसाइक्लिंग और दोबारा उपयोग सुरक्षित तरीके से हो सके। 1 जनवरी 2027 से केवल इलेक्ट्रिक तीन पहिया ही रजिस्टर होंगे। 1 अप्रैल 2028 से केवल इलेक्ट्रिक दोपहिया ही रजिस्टर किए जाएंगे। स्कूल बसों में भी ईवी का हिस्सा बढ़ाना अनिवार्य होगा। पहले 2 साल में 10 प्रतिशत, तीसरे साल 20 प्रतिशत, और 2030 तक 30 प्रतिशत बढ़ाने का लक्ष्य है।

ठेके पर ठेला-ठेली, गायब पसंदीदा ब्रांड... दिल्ली में तमीज से नहीं खरीद सकते शराब!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। दुनिया की ज़्यादातर राजधानियों में शराब की रिटेल बिक्री अब एक्सपीरियंस ड्रिवेन सेक्टर बन गई है. जहां एम्बिएंस, वैरायटी और चॉइस को ज्यादा तवज्जो दी जाती है. इसके उलट दिल्ली अभी भी 'मोहल्ले के ठेके' वाले दौर में ही फंसी हुई है. जहां सब कुछ बस कामचलाऊ है, लेकिन गुरुग्राम की मेहमाननवाजी आपको लुभाती है.

किशोर ने सारी रिहर्सल उत्तम नगर मेट्रो जाते हुए कर ली थी. अंदर जाओ, अपने ब्रांड की व्हिस्की मांगो, पैसे दो और निकल लो. एकदम सिंपल. लेकिन जैसे ही वह अपने मोहल्ले की सरकारी शराब की दुकान पर पहुंचा, उसका सारा प्लान चौपट हो गया. बहुत छोटा सा काउंटर था, बाहर लोग लगभग एक-दूसरे पर चढ़े हुए थे. चारों ओर बेसब्री का आलम था. लोग सेल्समैन को चिल्ला-चिल्लाकर ब्रांड का नाम बोलते हुए, करारे नोट काउंटर पर फेंक रहे थे. सेल्समैन पहले ही शोर से चिढ़ा हुआ था.

किशोर किसी तरह भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ ग्रिल तक पहुंचा और पूछा, 'भैया ये ब्रांड मिलेगी? ' सेल्समैन ने मुश्किल से नजर मिलाई और कहा- ये नहीं है. फिर बिना रुके, उसने एक ऐसे ब्रांड का नाम लिया जिसे किशोर ने कभी सुना ही नहीं था. आवाज आई- ये ले लो. पीछे से किसी ने उसे धक्का दिया. इस हो-हल्ला के बीच किसी और ने एक और ब्रांड का नाम लिया. सेल्समैन ने चिढ़कर किशोर को इशारा किया- चलो हटो. भीड़ में घिरा किशोर एक ऐसी बोतल लेकर चला आया जो उसे कभी चाहिए ही नहीं थी. 'वे ऐसे ब्रांड क्यों रखते हैं जिनके बारे में किसी ने सुना ही नहीं?' उसने सोचा और एक बार फिर सोचा 'और वे ब्रांड कहां चले जाते हैं, जिसे हम मांगते हैं? ' दिल्ली के शराब के शौकीनों की ये वो टेंशन है, जिसका जवाब आसान नहीं. दिल्ली के कई ग्राहकों को इसका जवाब साफ है- कोई, कहीं, कुछ गुमनाम ब्रांड्स को आगे बढ़ाने के लिए पैसे ले रहा है. और यह शक पूरी तरह से बेबुनियाद भी नहीं है. यह मुद्दा शराब नीति बनाने वाले लोगों के बीच भी सामने आता रहता है. अधिकारियों ने माना है कि फालतू ब्रांड्स के शराब ने दिल्ली के लोगों को बॉर्डर पार करके गुरुग्राम और नोएडा जाने के लिए मजबूर किया है. दिसंबर के आखिर में दिल्ली सरकार ने अपनी शराब की दुकानों पर ब्रांड्स की मोनोपॉली को रोकने के लिए कुछ कदम उठाए. ऐसा उन रिपोर्टों के बाद किया गया जिनमें बताया गया था कि मुट्ठी भर ब्रांड्स ने ही दुकानों की शेल्फ़ पर कब्जा कर लिया है. इससे शराब के कई प्रीमियम ब्रांड पीछे छूट गए हैं. एक अन्य घटना में जो नरेला में ही हुई, कर्मचारियों को महंगे ब्रांड्स की ऐसी बोतलें बेचते हुए पकड़ा गया जिनमें सस्ती शराब मिला दी गई थी.

बड़ी बेशर्मी से कहा नहीं गाऊंगी', वंदे मातरम के अपमान पर भड़के सीएम मोहन यादव, कांग्रेस से मांगा इस्तीफा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल: इंदौर नगर निगम के बजट सम्मेलन के दौरान शुरू हुआ 'वंदे मातरम' विवाद अब पूरे प्रदेश की राजनीति का केंद्र बन गया है। कांग्रेस पार्षदों द्वारा सार्वजनिक रूप से राष्ट्रगीत गाने से इनकार करने पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बेहद कड़ी प्रतिक्रिया दी है। मुख्यमंत्री ने इसे देशभक्तों का अपमान बताते हुए कहा कि अगर कांग्रेस नेतृत्व इस पर कार्रवाई नहीं कर सकता, तो पूरी प्रदेश इकाई को इस्तीफा दे देना चाहिए।

सीएम ने बताई बेशर्मी की राजनीति

इंदौर नगर निगम में कांग्रेस पार्षद रुबीना इकबाल खान और फौजिया शेख अलीम ने धर्म का हवाला देकर 'वंदे मातरम' गाने से मना कर दिया था। इस घटना का वीडियो सामने आने के बाद मुख्यमंत्री ने भोपाल में मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि 'बड़े दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ रहा है कि कांग्रेस की पार्षद ने बेशर्मी के साथ कहा कि मैं नहीं गाऊंगी। यह केवल एक पार्षद का बयान नहीं, बल्कि कांग्रेस के उस चरित्र को दर्शाता है जो हमेशा से राष्ट्र प्रतीकों के खिलाफ रहा है।'

जीतू पटवारी और राहुल गांधी से सीधे सवाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को कटघरे में खड़ा किया। उन्होंने सवाल उठाया कि हर छोटी बात पर मुखर रहने वाले प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी इस 'राष्ट्रद्रोह' जैसे कृत्य पर चुप क्यों हैं? सीएम ने कहा कि राहुल गांधी और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वे इस तरह की मानसिकता को पार्टी में प्रोत्साहित कर रहे हैं। हजारों देशभक्तों ने भारत माता की जय बोलते-बोलते अपने प्राणों की आहुति दे दी। जब कांग्रेस पार्षद भगवान राम और हिंदुओं की निंदा करते हैं, तब पार्टी चुप रहती है। लेकिन अब राष्ट्रगीत के अपमान पर मौन रहना यह बताता है कि वे देश को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं।

– डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

पुरानी है वंदे मातरम की खींचतान?

मुख्यमंत्री ने कांग्रेस के इतिहास को कुरेदते हुए कहा कि यह पार्टी आजादी के पहले से ही वंदे मातरम पर बखेड़ा खड़ा करती रही है। डॉ. यादव के अनुसार, कांग्रेस की पुरानी सरकारों ने राष्ट्रगीत के मूल स्वरूप से छेड़छाड़ की थी। विशेषज्ञ मानते हैं कि चुनाव से पहले राष्ट्रवाद के मुद्दे पर कांग्रेस को घेरकर बीजेपी अपनी पैठ और मजबूत करना चाहती है, खासकर तब जब मामला सीधे तौर पर राष्ट्रगीत के सम्मान से जुड़ा हो।

भारत में रहना है तो वंदे मातरम कहना होगा', इंदौर में पार्षद रुबीना के बयान पर भड़कीं पूर्व मंत्री उषा ठाकुर

महानगर मेट्रो ब्यूरो

इंदौर: जिले में राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' को लेकर छिड़े विवाद ने एक बार फिर सियासी माहौल गरमा दिया है। कांग्रेस की मुस्लिम पार्षद रुबीना इकबाल खान के बयान के बाद प्रदेश की राजनीति में बयानबाजी तेज हो गई है। इस पूरे मामले पर पूर्व मंत्री और बीजेपी विधायक उषा ठाकुर ने तीखी प्रतिक्रिया दी है और कांग्रेस पर सीधा निशाना साधा है।

'संविधान सर्वोपरि, अपमान नहीं होगा सहन'

उषा ठाकुर ने कहा कि जो लोग भारत में रहते हैं उन्हें 'वंदे मातरम' का सम्मान करना ही होगा। यह देश किसी एक धर्म का नहीं बल्कि सभी नागरिकों का है और यहां संविधान सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि अगर कोई 'वंदे मातरम' बोलने से इनकार करता है तो यह राष्ट्र के प्रति अनादर माना जाएगा। उन्होंने इसे गंभीर विषय बताते हुए कहा कि इस तरह की सोच देशहित के खिलाफ है।

आजादी का प्रतीक है वंदे मातरम

विधायक ने कहा कि 'वंदे मातरम' सिर्फ एक गीत नहीं, बल्कि आजादी के आंदोलन का प्रतीक रहा है। इस गीत के लिए देश के लाखों लोगों ने बलिदान दिया है। ऐसे में अगर कोई नागरिक इसे गाने से मना करता है तो यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि देश में रहने वाले हर व्यक्ति को राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

कांग्रेस की मानसिकता पर सीधा प्रहार

उषा ठाकुर ने कांग्रेस पर भी हमला बोलते हुए कहा कि पार्टी की मानसिकता अब जनता के सामने आ चुकी है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस इस तरह के बयानों को बढ़ावा देती है जिससे समाज में गलत संदेश जाता है। उनका कहना है कि जनता समय आने पर इसका जवाब जरूर देगी। इंदौर में पहले भी इस तरह के मामलों में कार्रवाई हो चुकी है जहां कथित तौर पर फंडिंग के जरिए इस तरह की गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा था। समाज को इस विषय में जागरूक होने की जरूरत है और परिवारों को अपनी बेटियों की सुरक्षा और संस्कारों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

–उषा ठाकुर, बीजेपी नेता

लव जिहाद पर भी चेतावनी

इसी दौरान उषा ठाकुर ने प्रयागराज की एक वायरल युवती के मामले पर भी बयान दिया। उन्होंने इसे 'लव जिहाद' से जुड़ा गंभीर मामला बताते हुए कहा कि इस तरह की घटनाएं समाज के लिए चिंता का विषय हैं। उनके अनुसार कुछ संगठित ताकतें युवतियों को बहला-फुसलाकर धर्मांतरण के लिए प्रेरित करती हैं।

मुंबई में यूपी-बिहार जैसे शहरों से आनेवालों के लिए किराए पर सस्ते घर देगी महाराष्ट्र सरकार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई: मुंबई में बाहर से नौकरी या व्यवसाय के लिए आने वाले लोगों को सरकार सस्ते दर पर किराए का घर उपलब्ध कराएगी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस निर्देश दिया है कि सस्ते किराए के घरों के लिए एक अच्छा सिस्टम बनाया जाए और उसे लागू किया जाए। सीएम ने लोगों की सुविधा के लिए इससे संबंधित एक पोर्टल बनाने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को इस संबंध में हुई बैठक में कहा कि नौकरी और व्यवसाय के लिए मुंबई और दूसरे मेट्रोपॉलिटन शहरों में आने वाले नागरिकों के लिए सस्ते किराए के घर होने चाहिए।

सह्याद्री स्टेट गेस्ट हाउस में महाराष्ट्र सरकार की रेंटल हाउसिंग पॉलिसी की समीक्षा के लिए बैठक की गई। बैठक में देवेंद्र फडणवीस ने राज्य के हाउसिंग डिपार्टमेंट को निर्देश दिया कि वे किफायती रेंटल हाउसिंग चाहने वाले नागरिकों की सुविधा के लिए एक पोर्टल तैयार करें।

किफायती किराए पर हाउसिंग स्कीम

फडणवीस ने बताया कि बड़ी संख्या में नागरिक नौकरी की तलाश में या अपना कारोबार शुरू करने के लिए बाहर से मुंबई आते हैं। उन्होंने कहा कि चूंकि आवास की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है, इसलिए किफायती रेंटल हाउसिंग के लिए एक सक्षम व्यवस्था बनाई जानी चाहिए और उसे चालू किया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे मांग के अनुसार आपूर्ति के सिद्धांत पर रेंटल हाउसिंग उपलब्ध कराएं।

यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि मांग और आपूर्ति के अनुसार किराए के घर उपलब्ध हों। यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि घरों की मांग के संबंध में सभी कार्रवाई एग्रीमेंट के अनुसार की जाए। बैठक में हाउसिंग डिपार्टमेंट के एडिशनल चीफ सेक्रेटरी असीम कुमार गुपा, मुंबई पुलिस कमिश्नर देवेन भारती, होम डिपार्टमेंट के प्रिंसिपल सेक्रेटरी अनूप कुमार सिंह, सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए।

पुलिस उपायुक्त की नियुक्ति

फडणवीस ने कहा कि अगर सिस्टम उपलब्ध किराए के घरों के संबंध में मिलकर कार्रवाई करता है, तो मालिकों और किराएदारों दोनों को कोई समस्या नहीं होगी। महाराष्ट्र रेंट कंट्रोल ऐक्ट, 1999 को लागू करने में मदद के लिए इस ऐक्ट के तहत पुलिस उपायुक्त (डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस) को नियुक्त किया जाए। सीएम ने कहा कि ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि अगर पुलिस स्टेशन या पुलिस एरिया बढ़ता है तो संबंधित पुलिस अधिकारी अपने आप उसी हिसाब से बढ़ जाएंगे। डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस को संबंधित अधिकारी के तौर पर काम करने का काम शामिल करने के लिए नोटिफिकेशन जारी की जाए।

इस अधिनियम के तहत, डिप्टी कमिश्नर ऑफ़ पुलिस को सक्षम प्राधिकारी के रूप में नियुक्त किया जाएगा। इस व्यवस्था को इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि जैसे-जैसे पुलिस के अधिकार क्षेत्र या थानों का विस्तार हो, सक्षम पुलिस अधिकारियों की संख्या भी अपने आप बढ़ जाए। इन कर्तव्यों को DCP की औपचारिक कार्य-सूची में शामिल करने के लिए आधिकारिक अधिसूचनाएं जारी की जाएंगी।

-फडणवीस, मुख्यमंत्री

'100 स्पेशल कोर्ट बनाए जाएं'

मुख्यमंत्री ने कहा कि किराए से जुड़े कोर्ट केस को जल्द निपटाने के लिए 100 स्पेशल कोर्ट बनाए जाएं। इसके लिए रिटायर्ड जजों की नियुक्ति की जाए। कोर्ट की इजाजत से किराए से जुड़े पेंडिंग केस निपटाने के लिए शाम की कोर्ट शुरू की जाए। अगर इन कोर्ट के लिए जगह नही है, तो किराए पर जगह ली जानी चाहिए।

नासिक IT कंपनी में यौन उत्पीड़न का भंडाफोड़

7 महिला पुलिसकर्मियों ने भेष बदलकर पकड़ा आरोपी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नासिक। महाराष्ट्र के नासिक की एक मल्टीनेशनल IT कंपनी में चल रहे यौन उत्पीड़न के गंभीर मामलों का पुलिस ने बड़ा खुलासा किया है। स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम की सात महिला पुलिसकर्मियों ने भेष बदलकर कंपनी में प्रवेश किया और मुख्य आरोपी को महिला कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार करते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया।

जांच में सामने आया कि पिछले चार वर्षों से कंपनी में महिला कर्मचारियों के साथ उत्पीड़न हो रहा था। अब तक छह कर्मचारियों के खिलाफ 9 मामले दर्ज किए गए हैं,

जिनमें छेड़छाड़, शादी का झांसा देकर शारीरिक संबंध, धर्म परिवर्तन के लिए दबाव और धार्मिक अपमान जैसे गंभीर आरोप शामिल हैं। पीड़िताओं की उम्र 18 से 25 वर्ष के बीच बताई गई है। पुलिस ने अब तक कई आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि HR विभाग की एक महिला अधिकारी को भी शिकायतों को नजरअंदाज करने के आरोप में हिरासत में लिया गया है।

HR की लापरवाही बनी बड़ी वजह

एक पीड़िता ने पहले ही HR को शिकायत दी थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। पुलिस का मानना है कि समय पर कदम उठाया जाता तो कई घटनाएं रोकी जा सकती थीं।

फिलहाल पुलिस CCTV फुटेज खंगाल रही है और अन्य संभावित पीड़ितों से सामने आने की अपील की है।

चीता और टाइगर के शोर में 'बेमौत' मर रहे तेंदुए, एमपी में हर तीसरे दिन एक मौत

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल। मध्य प्रदेश में जहां एक ओर चीतों की वापसी का जश्न मनाया जा रहा है और टाइगर स्टेट के तमगे को सहेजने पर करोड़ों खर्च हो रहे हैं, वहीं प्रदेश का सबसे साइलेंट शिकारी यानी तेंदुआ अस्तित्व की लड़ाई हार रहा है। एक RTI से मिली जानकारी ने वन विभाग की नींद उड़ा दी है। आंकड़ों के मुताबिक, जनवरी 2025 से फरवरी 2026 के बीच महज 14 महीनों में प्रदेशभर में 149 तेंदुओं की मौत हो गई है।

हाईवे बने डेथ ट्रैप और करंट का कहर

वन्यजीव कार्यकर्ता अजय दुबे द्वारा हासिल किए गए आंकड़ों से पता चलता है कि इन मौतों का सबसे बड़ा कारण जंगल के बीच से गुजरने वाले हाईवे और इंसानी दखल है। इनमें सबसे ज्यादा 31% मौतें सड़क और हाईवे हादसों की वजह से हुई। विशेषकर सिवनी-नागपुर हाईवे और भोपाल-रायसेन बेल्ट में तेंदुओं की जान गई। 5' मौतें खेतों में अवैध बिजली के तारों की चपेट में आने से हुई। इनमें सिवनी, नर्मदापुरम (सतपुड़ा लैंडस्केप) और रातापानी अभयारण्य के आसपास के इलाके तेंदुओं के लिए सबसे खतरनाक साबित हो रहे हैं।

टाइगर के शोर में तेंदुओं की अनदेखी?

वाइल्डलाइफ एक्सपर्ट्स का मानना है कि पूरा फोकस टाइगर और चीता प्रोजेक्ट पर होने की वजह से तेंदुओं के संरक्षण की नीतियों में बड़ी चूक हो रही है। इंदौर और मालवा क्षेत्र में तेंदुए अक्सर शिकार या पानी की तलाश में खेतों तक पहुंच जाते हैं, जहां वे बिजली के फंदे का शिकार हो रहे हैं। 14 महीनों में 149 तेंदुओं को खोना मध्य प्रदेश के लिए एक कड़वी हकीकत है। गर्व से खुद को टाइगर स्टेट कहने वाला राज्य अब तेंदुओं के लिए कब्रगाह बनता जा रहा है। एक तिहाई मौतें केवल सड़क हादसों से होना यह बताता है कि हम विकास की दौड़ में पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन खो रहे हैं।

अजय दुबे, वन्यजीव कार्यकर्ता

बढ़ते बुनियादी ढांचा

अजय दुबे के अनुसार, यह मौतें तंत्र की विफलता को दर्शाती हैं। नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी के प्रोटोकॉल होने के बावजूद, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं (सड़क, बिजली लाइन) में वन्यजीवों के लिए 'सेफ कॉरिडोर' का प्रावधान नहीं किया जा रहा है। जब तक लीनियर इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की जवाबदेही तय नहीं होगी, यह आंकड़े बढ़ते रहेंगे।

CM हाउस के पास साइक्लिंग कर रहे सीनियर डॉक्टर की आंखों में मिर्च झोंककर सोना और कैश लूटा, गिरे तो कूल्हा भी टूटा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल। राजधानी के सबसे हाई-प्रोफाइल और सुरक्षित माने जाने वाले श्यामला हिल्स इलाके में बदमाशों ने दुस्साहस की सभी हदें पार कर दीं। मुख्यमंत्री आवास से कुछ ही दूरी पर स्थित किलोल पार्क के पास बाइक सवार लुटेरों ने एक सीनियर डॉक्टर को अपना शिकार बनाया। बदमाशों ने डॉक्टर की आंखों में मिर्ची झोंक दी और उनका 110 ग्राम वजनी सोने का ब्रेसलेट, स्मार्टवॉच और बटुआ लूटकर फरार हो गए।

साइकिलिंग से लौट रहे डॉक्टर को घेरा

प्रोफेसर कॉलोनी निवासी डॉ. मनोज वर्मा, जो राज्य टीबी प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक हैं, शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे अपनी नियमित साइकिलिंग के बाद घर लौट रहे थे। किलोल पार्क और एक आइसक्रीम पार्लर के बीच मुख्य सड़क पर पीछे से आए बाइक सवारों ने जानबूझकर उनकी साइकिल में टक्कर मार दी। डॉक्टर के गिरते ही बदमाशों ने उनके चेहरे पर लाल मिर्च पाउडर का छिड़काव कर दिया ताकि वे कुछ देख न सकें।

रेकी और साजिश का शक

हमला इतना जोरदार था कि गिरने की वजह से डॉ. वर्मा के कूल्हे में फ्रैक्चर हो गया है। बदमाशों ने तुरंत उनके हाथ से सोने का भारी ब्रेसलेट, स्मार्टवॉच और करीब 2500 रुपये नकद वाला बटुआ छीन लिया।

पुलिस को संदेह है कि बदमाशों ने डॉक्टर की दिनचर्या की पहले से रेकी की थी। बदमाशों के काम करने के तरीके से लगता है कि उन्हें डॉक्टर के आने-जाने के समय और उनके पास मौजूद कीमती सामान की पूरी जानकारी थी। यह एक सुनियोजित वारदात हो सकती है। भूपेंद्र कौर संधू, थाना प्रभारी, श्यामला हिल्स

सुरक्षा पर उठे बड़े सवाल

यह वारदात महज एक लूट नहीं है, बल्कि भोपाल पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा सवालिया निशान है। जिस श्यामला हिल्स इलाके में 24 घंटे वीवीआईपी मूवमेंट रहता है और चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात होती है, वहां दिनदहाड़े इस तरह की वारदात होना पुलिस गश्त की पोल खोलता है। डॉक्टर फिलहाल अस्पताल में उपचाराधीन हैं और पुलिस इलाके के CCTV फुटेज खंगाल रही है ताकि संदिग्धों की पहचान की जा सके।

झुग्गी-बस्ती में लगी भीषण आग

महानगर मेट्रो ब्यूरो

ठाणे । महाराष्ट्र राज्य के ठाणे में एक झुग्गी-बस्ती में आग लग गई. जिससे तीन लोगों की मौत हो गई. बताया जाता है कि आग लगने की वजह से कई सिलेंडर भी फट गए थे. फिलहाल आग कैसे लगी, इसके कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है. महाराष्ट्र के ठाणे ज़िले में एक झुग्गी-बस्ती में लगी भीषण आग में तीन लोगों की मौत हो गई. इस आग की वजह से कई एलपीजी सिलेंडर फट गए. इस बात की जानकारी एक नगर निगम अधिकारी ने शनिवार को दी.

रात 8:30 पर लगी थी आग

मीरा भायंदर नगर निगम के मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रकाश बोराडे ने बताया कि शुक्रवार रात करीब 8.30 बजे मीरा भायंदर के नवघर इलाके में स्थित इंद्रलोक झुग्गी-बस्ती में यह आग लगी. आग की लपटें दूर से ही दिखाई दे रही थीं, क्योंकि आग तेज़ी से घास-फूस और कपड़ों से बनी अस्थायी झोपड़ियों की घनी बस्ती में फैल गई थी.

इस घटना में करीब 30 से 35 झोपड़ियां जलकर खाक हो गई. आग लगने के दौरान कई गैस सिलेंडर फट गए. अधिकारी ने बताया कि अग्निशमन कर्मियों ने मौके से 24 सिलेंडर सुरक्षित बाहर निकाल लिए, जिनमें से कुछ भरे हुए थे और कुछ खाली.

आग कैसे लगी, अभी कारणों का नहीं चल पाया है पता

बोराडे ने बताया कि आग पर काबू पाने से पहले अग्निशमन कर्मियों को करीब एक घंटे तक मशक्कत करनी पड़ी. तीनों मृतकों के शव बुरी तरह जल चुके थे, जिससे उनकी पहचान करना मुश्किल हो गया था. उनके शवों को पोस्टमार्टम के लिए एक सरकारी अस्पताल भेज दिया गया है. हालांकि आग लगने के सही कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है.

32 लाख के डिजिटल अरेस्ट केस में पूर्व रणजी खिलाड़ी ऋषि अरोट गिरफ्तार, मुंबई पुलिस ने गुजरात से उठाया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई: गुजरात से मुंबई की साइबर क्राइम पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ़्तार किया है। पकड़े गए लोगों में एक ऋषि तुषार अरोट भी शामिल है। ऋषि अरोट पूर्व रणजी क्रिकेटर है। गिरफ्तार किए गए लोगों पर आरोप है कि इन्होंने 'डिजिटल अरेस्ट स्कैम' के ज़रिए आरे कॉलोनी की एक बुज़ुर्ग नागरिक से 32.7 लाख रुपये ठग लिए। पुलिस ने बताया कि इस मामले में पहले भी चार लोगों को गिरफ़्तार किया जा चुका है,

जिससे कुल गिरफ़्तारियों की संख्या सात हो गई है। पुलिस ने बताया कि गिरफ़्तार किए गए तीनों आरोपी- ऋषि, हर्ष और निखिल हैं। ये तीनों कथित तौर पर ठगी के पैसे को इस स्कैम के सरगनाओं तक पहुंचाने में शामिल थे। पुलिस ने यह भी बताया कि ऋषि ए के पिता एक क्रिकेट कोच हैं। ऐसे बुज़ुर्ग को फंसाया यह स्कैम 11 फरवरी का है, जब उस बुज़ुर्ग नागरिक को तमिल बोलने वाले एक व्यक्ति का फ़ोन आया। फ़ोन करने वाले ने दावा किया कि वह चेन्नई पुलिस का सब-इंस्पेक्टर है और कहा कि बुज़ुर्ग नागरिक के सिम कार्ड का इस्तेमाल अफ़ज़ल खान नाम के एक आतंकवादी ने किया था, जो पहलगाम हमले में शामिल था। उन्हें एक केस नंबर दिया गया और फ़ोन एक सीनियर अफसर को ट्रांसफर करने की बात कहकर दूसरे शख्स को ट्रांसफर कर दिया गया।

मुंबई लोकल अपडेट: रविवार को तीनों लाइनों पर मेगा ब्लॉक, कई ट्रेनें रद्द

यात्रियों के लिए खास इंतजाम

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई: रविवार को विभिन्न इंजीनियरिंग और रखरखाव कार्यों को पुरा करने के लिए सभी लाइन पर मेगा ब्लॉक परिचालित किया जाएगा। मिली जानकारी के अनुसार, मध्य रेलवे की मेन लाइन पर सीएसएमटी से 10.48 बजे से 15.45 बजे तक चलने वाली डाउन स्लो सेवाएं सीएसएमटी और विद्याविहार स्टेशनों के बीच डाउन फास्ट लाइन पर डायवर्ट की जाएंगी। यह भायखला, परेल, दादर, माटुंगा, सायन और कुर्ला स्टेशनों पर रुकेंगी। विद्याविहार स्टेशन पर डाउन स्लो लाइन पर पुनः डायवर्ट की जाएंगी। इसी के साथ ही घाटकोपर से 10:19 बजे से दोपहर 15:52 बजे तक चलने वाली अप स्लो ट्रेनें विद्याविहार और सीएसएमटी स्टेशनों के बीच अप फास्ट लाइन पर डायवर्ट की जाएंगी और कुर्ला, सायन, माटुंगा, दादर, परेल और भायखला स्टेशनों पर रुकेंगी।

हार्बर लाइन रहेगी प्रभावित, रद्द रहेंगी कई ट्रेन

सीएसएमटी से चुनाभट्टी/बांद्रा तक चलने वाली डाउन हार्बर लाइन 11:40 बजे से 16:40 बजे तक और चुनाभट्टी/बांद्रा से सीएसएमटी तक चलने वाली अप हार्बर लाइन 11:10 बजे से 16:10 बजे तक निलंबित रहेगी। तो वहीं सीएसएमटी से वाशी/बेलापुर/पनवेल जाने वाली डाउन हार्बर लाइन की ट्रेनें 11:16 बजे से 16:47 बजे तक और सीएसएमटी से बांद्रा/गोरेगांव जाने वाली डाउन हार्बर लाइन की ट्रेनें 10:48 बजे से शाम 16:43 बजे तक निलंबित रहेंगी। साथ ही पनवेल/बेलापुर/वाशी से सीएसएमटी के लिए अप हार्बर लाइन की सेवाएं 09:53 बजे से 15:20 बजे तक और गोरेगांव/बांद्रा से सीएसएमटी के लिए अप हार्बर लाइन की सेवाएं 10.45 बजे से 17:13 बजे तक निलंबित रहेंगी।

चलेंगी विशेष सेवा

ब्लॉक अवधि के दौरान पनवेल और कुर्ला (प्लेटफॉर्म नंबर 8) के बीच विशेष ट्रेनें चलेंगी। ब्लॉक अवधि के दौरान हार्बर लाइन के यात्री 10:00 बजे से 18:00 बजे तक वाया मेन लाइन और वेस्टर्न रेलवे से यात्रा कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे पर सांताक्रुज एवं गोरेगांव के बीच जम्बो ब्लॉक

पश्चिम रेलवे द्वारा ट्रैक, सिगनलिंग तथा ओवरहेड उपकरणों के रख-रखाव हेतु रविवार, 12 अप्रैल, 2026 को सांताक्रुज एवं गोरेगांव स्टेशनों के बीच अप एवं डाउन फास्ट लाइनों पर 10:00 बजे से 15:00 बजे तक पाँच घंटे का जम्बो ब्लॉक लिया जाएगा। ब्लॉक अवधि के दौरान फास्ट लाइन की सभी उपनगरीय ट्रेनों को सांताक्रुज एवं गोरेगांव स्टेशनों के बीच धीमी लाइनों पर परिचालित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, इस ब्लॉक के कारण कुछ उपनगरीय सेवाएँ निरस्त रहेंगी, जबकि कुछ बोरीवली एवं अंधेरी सेवाओं को हार्बर लाइन पर गोरेगांव तक चलाया जाएगा।

मेरठ : बेटी की मौत के बाद 6 महीने तक घर में रखा शव, परफ्यूम छिड़ककर छिपाता रहा राज

मेरठ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मेरठ में रिश्तों और इंसानियत को झकझोर देने वाली एक रोंगटे खड़े कर देने वाली वारदात सामने आई है। सदर बाजार के तेली मोहल्ला निवासी एक पिता ने अपनी 32 वर्षीय बेटी की मौत के बाद उसका अंतिम संस्कार करने के बजाय, करीब छह महीने तक उसके शव को घर के भीतर ही छिपाए रखा। हैरान करने वाली बात यह है कि शव से आने वाली दुर्गंध को दबाने के लिए आरोपी पिता तीन महीने तक उस पर परफ्यूम और रूम फ्रेशनर छिड़कता रहा। जब लाश पूरी तरह कंकाल में तब्दील हो गई, तो वह मकान में ताला लगाकर देहरादून फरार हो गया। इस सनसनीखेज मामले का खुलासा शुक्रवार को तब हुआ जब आरोपी उदय भानू विश्वास को उसके परिजनों ने बेगमबाग स्थित एक चाय की दुकान पर कुछ रिक्शा चालकों के साथ देखा। शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त उदय भानू से जब उसकी अविवाहित बेटी प्रियंका के बारे में पूछा गया, तो उसने गोलमोल जवाब देते हुए कहा कि उसका इलाज देहरादून के एक अस्पताल में चल रहा है। शक होने पर परिजन उसे जबरन घर ले आए और बंद मकान का दरवाजा खुलवाया। अंदर का नजारा देख सबकी रूह कांप गई; बिस्तर पर प्रियंका का कंकाल पड़ा हुआ था। जांच में सामने आया है कि प्रियंका की मौत अक्टूबर 2025 में दशहरे के आसपास हुई थी। आरोपी ने इस बात को रिश्तेदारों से छिपाए रखा और दिसंबर तक शव के साथ ही उसी घर में रहा। जब पड़ोसियों को बदबू का अहसास होने लगा, तो वह परफ्यूम का इस्तेमाल करने लगा। 25 दिसंबर के बाद वह घर छोड़कर भाग गया और देहरादून में रिक्शा चलाने लगा। इस बीच, रिश्तेदारों के फोन आने पर वह बेटी के इलाज का बहाना बनाता रहा।

मणिपुर में पेट्रोलिंग कर रहे जवान की गोली मारकर हत्या, बीएसएफ में था तैनात

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के उखरुल जिले में शुक्रवार को पेट्रोलिंग ड्यूटी पर तैनात बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ) के एक जवान की गोली मारकर हत्या कर दी गई। अधिकारियों के मुताबिक कांस्टेबल मिथुन मंडल को शाम को गोली लगी। गोली लगने के बाद उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया।

अधिकारियों ने बताया कि मिथुन मंडल पश्चिम बंगाल के भगजन टोला गांव के रहने वाले थे और बीएफएफ में तैनात थे। बता दें फरवरी में दो समुदायों के बीच हुई जातीय झड़पों के बाद कुकी गांव मोंगकोट चेपू और पड़ोसी तांगखुल नागा इलाके में गोलीबारी की घटनाएं होती रही हैं। यहां जारी तनाव के बीच पेट्रोलिंग कर रहे बीएफएफ के जवान पर यह हमला हुआ है। मणिपुर पुलिस ने बयान जारी कर बताया कि हमले के पीछे शामिल लोगों को पकड़ने के लिए सुरक्षा बल इलाके में सर्च ऑपरेशन और चला रहा है। फिलहाल हमलावरों की पहचान सार्वजनिक नहीं की गई है। सीएम वाई खेमचंद सिंह ने कहा कि कांस्टेबल मिथुन मंडल की दुखद शहादत की कड़ी निंदा करता हूं। पश्चिम बंगाल के इस बहादुर बेटे के ड्यूटी के दौरान दिए गए बलिदान को कभी नहीं भुलाया जाएगा।

एर्नाकुलम से बेंगलुरु जा रही वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन पर पत्थरबाजी

पलक्कड़ (एजेंसी)। पलक्कड़ के एर्नाकुलम से बेंगलुरु जा रही वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन पर अज्ञात व्यक्ति द्वारा पत्थर फेंकने की घटना सामने आई है। घटना में ट्रेन को मामूली नुकसान पहुंचा है, हालांकि किसी यात्री के घायल होने की सूचना नहीं है। रेलवे पुलिस (जीआरपी) के अधिकारी के अनुसार यह शाम करीब 4-30 बजे पलक्कड़ जिले के पराली इलाके के पास हुई। तब ट्रेन अपनी नियमित गति से बेंगलुरु की ओर बढ़ रही थी। अचानक किसी ने ट्रेन पर पत्थर फेंक दिया। जिससे कोच में लगी एक खिड़की का शीशा क्षतिग्रस्त हुआ। रेलवे पुलिस के अधिकारी ने बताया कि घटना के तुरंत बाद स्थिति पर काबू पाया गया। रेलवे कर्मचारियों ने भी तत्परता दिखाकर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने इस बारे में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने कुछ स्थानीय लोगों से भी जानकारी जुटाई है, ताकि घटना के पीछे के कारणों का पता लगाया जा सके। पुलिस ने दावा किया है कि यह कृत्य किसी मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति या नशे की हालत में किसी व्यक्ति द्वारा किया गया हो सकता है। हालांकि, अधिकारियों ने कहा है कि सभी संभावित पहलुओं को ध्यान में रखकर जांच की जा रही है।

गोवा, महाराष्ट्र, बंगाल और आखिर में पंजाब... 35 साल बाद पकड़ा गया हत्या का आरोपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने 35 साल से फरार चल रहे एक हत्या आरोपी छवि लाल वर्मा को पंजाब के लुधियाना से गिरफ्तार किया है। यह मामला 2 अगस्त 1991 का है, जब पूर्वी दिल्ली के त्रिलोकपुरी इलाके में एक घर के अंदर मां और बेटे पर चाकू से हमला हुआ था। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। इलाज के दौरान मां की मौत हो गई, जबकि बेटा कई दिनों बाद ठीक हो गया। होश में आने पर बेटे ने बताया कि हमला उनके किराएदार छवि लाल ने किया था। यह जानकारी मिलते ही आरोपी को एहसास हुआ कि वह जल्द ही पकड़ा जाएगा, इसलिए वह फरार हो गया। पुलिस ने लंबे समय तक उसकी तलाश की और उसके उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर स्थित घर पर भी नजर रखी, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। हैरानी की बात यह रही कि छवि लाल ने कभी अपने परिवार से सीधे संपर्क नहीं किया, यहां तक कि अपने बच्चों की शादी में भी नहीं पहुंचा। इसके साथ ही समय बीतने के साथ मामला ठंडा पड़ गया, लेकिन हाल ही में क्राइम ब्रांच ने पुरानी फाइलों की समीक्षा शुरू की। करीब छह माह पहले इस केस को फिर से खोला और नई जांच शुरू हुई। जांच के दौरान पता चला कि छवि लाल अपने परिवार से सीधे बात करने के बजाय पड़ोसियों के जरिए संदेश भेजता था। इसी आधार पर पुलिस ने उसके गांव पर फिर नजर रखी और आखिरकार एक सुराग मिला। पुलिस ने 9 अप्रैल को लुधियाना में छवि लाल को गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि मुझे लगा था कि उसकी मकान मालकिन के पास काफी पैसा है, इसलिए लूट और हत्या की योजना बनाई थी।

पाकिस्तान में सीजफायर को लेकर वार्ता के बीच भारत ने की बड़ी कूटनीतिक पहल

ईरान युद्ध से प्रभावित खाड़ी के 6 अहम देशों से की अलग-अलग बातचीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। मीडिया ईस्ट संकट के स्थायी समाधान को लेकर पाकिस्तान में अस्थायी सीजफायर से संबंधित पक्ष आगे का रास्ता तलाशने के लिए जुटे। इसी दौरान भारत ने एक बड़ी कूटनीतिक पहल की है, जिसमें ईरान युद्ध से प्रभावित खाड़ी के 6 अहम देश शामिल हुए। भारत ने गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल (जीसीसी) के देशों के साथ अपनी एकजुटता जाहिर की है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भारत का यह संदेश सऊदी अरब, कतर, कुवैत, बहरीन, संयुक्त अरब अमीरात और ओमान तक पहुंचाया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत ने खाड़ी के इन छह देशों को एक बार फिर यह बात दोहराई है कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष की वजह से पैदा होने वाली जरूरी खाने-पीने की चीजों की सप्लाई चेन में आने वाली किसी भी तरह की रुकावट के समाधान में हमारा समर्थन जारी रहेगा।

वाणिज्य मंत्रालय की ओर से इस संबंध में शुक्रवार को बयान जारी किया गया था, उससे स्थिति और साफ हुई कि मौजूदा संकट की स्थिति में खाड़ी देशों की चुनौतियों को लेकर

भारत का स्टैंड क्या है।

गोयल ने गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल के सेक्रेटरी जनरल जासेम मोहम्मद अल बुदैवी से वर्चुअल कॉल में उम्मीद जताई कि क्षेत्र में जो युद्धविराम घोषित हुआ है, वह स्थायी होगा और स्थायी शांति एवं स्थिरता का रास्ता साफ करेगा।

इस दौरान गोयल ने वर्चुअल माध्यम से ही जीसीसी के यूएई, बहरीन और कुवैत जैसे सदस्यों से अलग से भी बात की। भारत के लिए खाड़ी देशों के इस ग्रुप के साथ इस तरह की एकजुटता दिखाना इस वजह से बहुत ही अहम है, क्योंकि यह ब्लॉक भारत का सबसे बड़ा तेल और गैस सप्लायर है। इसके अलावा खाड़ी देशों के इस ग्रुप के साथ भारत की फ्री ट्रेड एग्रीमेंट को लेकर भी बातचीत चल रही है। गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल से पीयूष गोयल की चर्चा से पहले पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी कतर की यात्रा पर गए।

रिपोर्ट के मुताबिक विदेश मंत्री एस जयशंकर भी शनिवार से संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा पर हैं। पश्चिम एशिया संकट की वजह से खाड़ी देश हों या फिर भारत, सबसे बड़ी दिक्कत होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर हो रही है। ईरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य को जिस तरह से नियंत्रण में कर लिया है, उससे अगर भारत के सामने तेल और गैस का संकट खड़ा हुआ है तो खाड़ी देशों का निर्यात भी बंद हुआ है और उन तक पहुंचने वाले खाने-पीने की चीजों की सप्लाई चेन पर भी असर पड़ा है। ऐसे में गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल में ओमान की सदस्यता का इस समय अलग मायने है। ऐसे में ओमान को गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल के अन्य खाड़ी मुल्क सदस्यों के साथ एक टेबल पर लाना भारत की बड़ी कूटनीतिक पहल साबित हो सकती है।

थाईलैंड से भारत लाया जा रहा मोस्ट वांटेड गैंगस्टर साहिल, हरियाणा एसटीएफ हिरासत में लेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की सुरक्षा एजेंसियों और हरियाणा पुलिस को संगठित अपराध के खिलाफ एक बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। मोस्ट वांटेड गैंगस्टर साहिल चौहान को थाईलैंड से निर्वासित कर भारत वापस लाया जा रहा है। शनिवार को दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर विमान के उतरते ही हरियाणा स्पेशल टास्क फोर्स उसे अपनी हिरासत में ले लेगी। साहिल चौहान न केवल हरियाणा पुलिस बल्कि राष्ट्रीय जांच एजेंसी की हिट लिस्ट में भी प्रमुखता से शामिल था।

साहिल चौहान संगठित अपराध की दुनिया का एक खूंखार नाम बन चुका था। वह वर्तमान में जेल में बंद कुख्यात गैंगस्टर कौशल चौधरी के गिरोह का सबसे सक्रिय और मुख्य सदस्य माना जाता है। जांचकर्ताओं के अनुसार, साहिल विदेश में बैठकर भारत में कई कॉन्ट्रैक्ट किलिंग (सुपारी लेकर हत्या) की साजिशें रच रहा था। वह हरियाणा और दिल्ली-एनसीआर के व्यापारियों से रंगदारी वसूलने और उन्हें डराने-धमकाने के दर्जनों मामलों में वांछित है। भारत से बाहर रहने के कारण वह सुरक्षा एजेंसियों के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ था, क्योंकि वह वहीं से अपने गिरोह के नेटवर्क को संचालित कर रहा था। शनिवार को साहिल चौहान की वापसी को देखते हुए दिल्ली एयरपोर्ट पर सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम किए गए हैं। जैसे ही वह भारतीय जमीन पर कदम रखेगा, एसटीएफ उसे अपनी कस्टडी में लेकर सुरक्षित स्थान पर ले जाएगी। इसके बाद उसे अदालत में पेश कर रिमांड की मांग की जाएगी। सुरक्षा अधिकारियों का मानना है कि साहिल की गिरफ्तारी से कौशल चौधरी गिरोह की कमर टूट जाएगी। यह कार्रवाई उन अपराधियों के लिए एक सख्त संदेश है जो विदेश भागकर भारतीय कानून से बचने का भ्रम पाले हुए हैं।

गिरफ्तारी और निर्वासन की प्रक्रिया- साहिल की गिरफ्तारी केंद्र सरकार की सुरक्षा एजेंसियों और हरियाणा पुलिस के बीच बेहतर तालमेल का परिणाम है। उसके खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी होने के बाद से ही अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां उसकी तलाश में थीं। हाल ही में उसे थाईलैंड में हिरासत में लिया गया था, जिसके बाद भारत सरकार ने कूटनीतिक स्तर पर उसके निर्वासन की प्रक्रिया को तेजी से पूरा कराया।

जेल से बाहर आने दुष्कर्म के आरोपी ने चली चाल, युवती से शादी का किया नाटक

-लड़की ने अपील की हाईकोर्ट ने आरोपी की जमानत याचिका की खारिज

नई दिल्ली(एजेंसी)। नाबालिग लड़की से रेप के आरोपी ने जेल से निकलने का प्लान बनाया। उसने अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में लड़की को उलझाकर उससे शादी कर ली। शादी के बाद उसे जमानत मिल गई और वह जेल से बाहर आ गया, लेकिन बाद में लड़की को अहसास हुआ कि ये शादी एक फरेब थी। ऐसे में लड़की ने कोर्ट में अपील की और आरोपी की जमानत याचिका खारिज हो गई।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक यह मामला दिल्ली हाईकोर्ट का है। आरोपी पर लॉ स्टूडेंट के नाबालिग होने के दौरान उसके साथ दुष्कर्म करने और फिर अपने खिलाफ एफआईआर दर्ज होने के बाद उससे शादी करने का आरोप है। कोर्ट ने कहा कि यह शादी जेल जाने से बचने की एक चाल थी। जस्टिस गिरीश कथपालिया ने कहा कि आरोपी ने यह शादी सिर्फ जमानत पाने की एक चाल के तौर पर की, जबकि उसने एक नाबालिग लड़की के साथ बार-बार दुष्कर्म किया था, लेकिन शादी कर लेने से भी आरोपी इस अपराध से बरी नहीं हो जाएगा।

कोर्ट ने पीड़ित के बदलते रुख पर भी बात की। बता दें पीड़िता ने कहा कि उसे एफआईआर की बातों की जानकारी नहीं थी, क्योंकि शिकायत उसके वकील ने लिखी थी। कोर्ट ने कहा कि यह बात यकीन करने लायक नहीं है कि लॉ की स्टूडेंट होने के बावजूद उसे एफआईआर की बातों का पता नहीं था, जबकि शिकायत का अनुवाद अंग्रेजी से हिंदी में किया गया था। जज ने दोनों के बर्ताव को देखते हुए जमानत की अर्जी खारिज कर दी। प्रॉसिक्यूशन के मुताबिक वह आरोपी सोशल मीडिया पर उस लड़की से मिला और उससे दोस्ती कर ली। बाद में, उसने शादी का झांसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए और उसे दो बार गर्भपात करवाने के लिए मजबूर किया। जब वह बालिग हो गई तो उसने उससे शादी करने से इनकार कर दिया, जिसके बाद उसने एफआईआर दर्ज करवाई। फिर उस शख्स ने फरवरी 2026 में उससे शादी कर ली। हाई कोर्ट ने कहा आरोपी के गिरफ्तार होने और जेल में जाने के बाद ही वह उससे शादी करने को राजी हुआ, इसलिए इस कोर्ट के आदेश के तहत उसकी अंतरिम जमानत अर्जी का निपटारा कर दिया गया। अतिरिक्त सरकारी ने इस अर्जी का विरोध करते हुए कहा कि पुलिस को उस महिला के खिलाफ भी कार्रवाई करने की जरूरत है। आरोपी ने कहा कि उसकी उस महिला से शादी हो चुकी है और यह जमानत के लिए एक सही मामला है।

अभिषेक बनर्जी का बड़ा वादा: 'सरकार बनते ही एक महीने में दिलाऊंगा आपके छीने हुए अधिकार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाता। मुर्शिदाबाद के रेजीनगर में चुनावी पारा उस समय सातवें आसमान पर पहुँच गया जब तृणमूल कांग्रेस के अखिल भारतीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने मंच से विरोधियों पर तीखा हमला बोला। प्रताप संघ मैदान में उमड़ी भारी भीड़ को संबोधित करते हुए अभिषेक ने न केवल जनता से बड़े वादे किए, बल्कि भाजपा और हुमायूं कबीर को भी आड़े हाथों लिया।

वोटर लिस्ट से नाम हटने पर आर-पार के मूड में अभिषेक

अभिषेक बनर्जी ने चुनावी रैली में सबसे बड़ा ऐलान मतदाता सूची को लेकर किया। उन्होंने कहा: 'जिन लोगों का नाम वोटर लिस्ट से बेवजह काटा गया है, उनके साथ अन्याय हुआ है। मैं वादा करता हूँ कि हमारी सरकार बनने के ठीक एक महीने के भीतर उन सभी के नाम वापस लिस्ट में दर्ज कराए जाएंगे। हम आपके लोकतांत्रिक अधिकारों को किसी भी कीमत पर छीनने नहीं देंगे। '

हुमायूं कबीर पर गंभीर आरोप: 'भाजपा के इशारे पर खेला अल्पसंख्यकों से'

रैली के दौरान अभिषेक के निशाने पर हुमायूं कबीर रहे। उन्होंने सीधा आरोप लगाते हुए कहा कि कबीर ने निजी स्वार्थ के लिए भाजपा से हाथ मिला लिया है।
विश्वासघात का आरोप:अभिषेक ने कहा कि हुमायूं कबीर ने रुपयों के लालच में आकर भाजपा के इशारे पर अल्पसंख्यकों के भरोसे का सौदा किया है।

साजिश का पर्दाफाश: उन्होंने जनता को आगाह किया कि ऐसे नेताओं से सावधान रहने की जरूरत है जो पर्दे के पीछे से सांप्रदायिक ताकतों की मदद कर रहे हैं।

AI वीडियो और भाजपा पर तीखा तंज

हालिया विवादों पर चुप्पी तोड़ते हुए अभिषेक ने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व पर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने AI जनित फर्जी वीडियो' के मुद्दे को उठाते हुए पूछा कि अगर वीडियो फर्जी थे, तो पार्टी अध्यक्ष ने इस्तीफा क्यों दिया? अभिषेक ने इसे भाजपा की 'डर की राजनीति' करार दिया।

प्रमुख बिंदु जो रैली में छाए रहे:
न्याय का वादा: कटे हुए नामों को 30 दिन के अंदर जोड़ने की गारंटी।
हुमायूं पर वार: भाजपा के साथ मिलीभगत और अल्पसंख्यकों से गद्दारी का आरोप।
नैतिकता का सवाल: AI वीडियो विवाद पर भाजपा नेतृत्व के इस्तीफे पर घेरा।
मुर्शिदाबाद की इस जनसभा ने साफ कर दिया है कि तृणमूल कांग्रेस इस बार न केवल विकास, बल्कि जनता के 'अधिकार' और 'सम्मान' के मुद्दे पर चुनाव लड़ने जा रही है। रेजीनगर की इस हुंकार ने विरोधियों के खेमे में हलचल तेज कर दी है।

गर्मी के लिए हो जाएं तैयार ! यूपी-बिहार समेत कई राज्यों में बढ़ेगा पारा, हीटवेव का भी अलर्ट

चेन्नई (एजेंसी)। उत्तर भारत में इस साल अप्रैल महीने का मौसम उम्मीद के बिल्कुल विपरीत नजर आ रहा है। मार्च की शुरुआत में जिस तरह भीषण गर्मी का अहसास हुआ था, उसके उलट अप्रैल में अब तक एक भी दिन वैसी तपिश महसूस नहीं की गई है। लगातार सक्रिय हो रहे पश्चिमी विक्षोभ के कारण तेज हवाओं और बारिश का दौर जारी रहने से तापमान सामान्य से करीब 4 से 5 डिग्री सेल्सियस नीचे बना हुआ है। हालांकि, मौसम विभाग का ताजा अनुमान संकेत दे रहा है कि अब उत्तर और पश्चिम भारत में धीरे-धीरे गर्मी अपना असर दिखाना शुरू करेगी।

शनिवार, 11 अप्रैल को उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलेंगीका, जिसकी वजह से फिलहाल तापमान में बहुत अधिक बढ़ोतरी दर्ज नहीं की जाएगी। राजधानी दिल्ली और आसपास के

क्षेत्रों में आज मौसम पूरी तरह साफ रहने की संभावना है। रविवार से यहां पारे में उछाल देखा जा सकता है और अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। राहत की बात यह है कि सुबह और शाम के समय ठंडी हवाएं चलती रहेंगी, जिससे दिल्लीवासियों को फिलहाल चिलचिलाती गर्मी से जूझना नहीं पड़ेगा। उत्तर प्रदेश में भी अब बारिश की संभावना नहीं है और ज्यादातर हिस्सों में चटख धूप खिली रहेगी। राज्य में अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस तक जा सकता है। हालांकि, 15 अप्रैल के बाद यूपी में हीट वेव यानी लू की स्थिति बनने के आसार हैं। बारिश का रुकना किसानों के लिए एक बड़ी राहत की खबर है, क्योंकि बेमौसम बरसात ने गेहूं की फसल को काफी नुकसान पहुंचाया था। अब तेज धूप निकलने से बची हुई फसल की कटाई और सुखाने में मदद मिलेगी। पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में भी आसमान साफ रहने और धूप निकलने की उम्मीद है। मौसम विभाग के अनुसार, इन राज्यों में 12 अप्रैल से लू का असर दिखने लगेगा और गर्मी तेजी से बढ़ेगी। दूसरी ओर, पहाड़ी राज्यों में मौसम अब भी सुहाना बना हुआ है। उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के ऊंचाई वाले इलाकों में छिटपुट बर्फबारी और हल्की बारिश का दौर जारी है। हिमाचल में 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाओं के कारण ऊंचे क्षेत्रों में ठंडक बनी रहेगी, जबकि मैदानी इलाकों में मौसम शुष्क रहेगा।

वृंदावन नाव हादसा : यमुना में रेस्क्यू ऑपरेशन जारी, अब तक 10 की मौत और 5 अब भी लापता

मथुरा (एजेंसी)। धर्मनगरी वृंदावन के केसी घाट पर शुक्रवार को हुए दर्दनाक नाव हादसे ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। इस हादसे में अब तक 10 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि 22 लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है। शनिवार को दूसरे दिन भी लापता 5 लोगों की तलाश में बड़े स्तर पर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है।तलाश अभियान को तेज करने के लिए सेना (आर्मी) समेत विभिन्न राहत दलों के करीब 250 जवान तैनात किए गए हैं। रेस्क्यू टीमें घटनास्थल से लेकर 14 किलोमीटर के दायरे में जाल बिछाकर लापता लोगों को ढूंढ रही हैं। इस तलाशी अभियान में नाव जंगलों में फंसी मिल गई है लेकिन 5 लोग अभी भी लापता हैं।

अधिकारियों के मुताबिक, यमुना का बहाव तेज होने के कारण लापता लोगों के दूर बह जाने की आशंका है। साथ ही, नदी के तल में भारी गाद और कीचड़ होने की वजह से शवों के रेत में दबे होने की संभावना भी जताई जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि हादसे के 24 घंटे बीतने के बाद शव फूलकर पानी की सतह पर आ सकते हैं। यह दर्दनाक हादसा शुक्रवार दोपहर करीब 3 बजे हुआ, जब 37 श्रद्धालुओं से भरी एक नाव यमुना के बीचों-बीच पलट गई। शुरुआती जांच में सामने आया है कि नाव की क्षमता 40 लोगों की थी, लेकिन सुरक्षा नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए किसी भी श्रद्धालु को लाइफ जैकेट नहीं दी गई थी। मृतकों में एक ही परिवार के 7 लोग शामिल हैं, जिनमें मां-बेटे, चाचा-चाची और बुआ-फूफा जैसे करीबी रिश्तेदार थे। जिस जगह नाव डूबी, वहां पानी की गहराई करीब 25 फीट बताई जा रही है।

हादसे में जीवित बचे एक युवक ने बताया कि नाव तट से करीब 50 फीट दूर थी, तभी 40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने लगीं। नाव डगमगाने लगी और नाविक ने नियंत्रण खो दिया। श्रद्धालुओं ने नाविक से नाव रोकने की गुहार लगाई, लेकिन उसने अनसुना कर दिया। नाव दो बार पीपा पुल से टकराते-टकराते बची, लेकिन तीसरी बार जोरदार टक्कर हुई और नाव देखते ही देखते पानी में समा गई। पुलिस ने मुख्य आरोपी नाविक पप्पू निषाद को हादसे के 6 घंटे बाद शनिवार रात हिरासत में ले लिया है। वह हादसे के तुरंत बाद मौके से फरार हो गया था। प्रशासन अब इस मामले में कड़ी कार्रवाई की तैयारी कर रहा है।

9 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों की एसआईआर में 6.08 करोड़ नाम कटे

यूपी में 2.04 करोड़ तो पश्चिम बंगाल में 91 लाख लोग फाइनल सूची से बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग के एसआईआर के दूसरे फेज के तहत शुक्रवार को यूपी में फाइनल वोटर सूची जारी की। इसके पूरा होने के बाद 9 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों की वोटरों की सूची में कुल 6.08 करोड़ नाम कट गए हैं। पिछले साल 27 अक्टूबर को एसआईआर प्रक्रिया शुरू होने से पहले 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कुल मतदाताओं की संख्या करीब 51 करोड़ थी। फाइनल सूची जारी होने के बाद यह संख्या 44.92 करोड़ रह गई।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एसआईआर के दूसरे फेज में यूपी, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, राजस्थान, छत्तीसगढ़, केरल, गुजरात, मध्य प्रदेश, गोवा समेत पुडुचेरी, अंडमान-निकोबार, लक्षद्वीप की फाइनल वोटर सूची जारी की गई है। यूपी में शुक्रवार को जारी हुई एसआईआर की फाइनल सूची में वोटर्स की संख्या 13फीसदी घटकर 13.39 करोड़ रह गई यानी 2.04 करोड़ लोगों के नाम कट गए हैं। वहीं पश्चिम बंगाल में करीब 91 लाख वोटर्स के नाम फाइनल सूची से बाहर हो गए हैं।

चुनाव आयोग ने 24 जून 2025 को पूरे देश में एसआईआर कराने का आदेश दिया था। अब तक 10 राज्य और 3 केंद्र शासित प्रदेश कवर हो चुके हैं। एसआईआर के पहले फेज में बिहार, दूसरे फेज में 9 राज्य और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में एसआईआर कराया गया था। वहीं असम में एसआईआर के बजाय 10 फरवरी को स्पेशल रिवीजन पूरा किया गया था। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान कई राज्यों में शेड्यूल में कई बार बदलाव हुए। तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में राजनीतिक दलों ने इस प्रक्रिया को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है।

बता दें देश के करीब 99 करोड़ मतदाताओं में से 60 करोड़ को इस अभियान में शामिल किया जा चुका है। अब बाकी 39 करोड़ मतदाताओं को एसआईआर के तीसरे फेज 17 राज्यों और 5 केंद्र शासित प्रदेशों में कवर किया जाएगा। इन 22 राज्यों-यूटी में एसआईआर प्रक्रिया इस महीने पांच विधानसभा चुनावों के बाद शुरू की जाएगी। पश्चिम बंगाल में एसआईआर के दौरान करीब 91 लाख नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं। चुनाव आयोग के मुताबिक यह कार्रवाई नवंबर से चल रही प्रक्रिया के तहत की गई है, आयोग के 28 फरवरी तक के आंकड़ों के मुताबिक एसआईआर शुरू होने के बाद 63.66 लाख नाम हटाए गए थे, जिससे मतदाताओं की संख्या करीब 7.66 करोड़ से घटकर 7.04 करोड़ रह गई। बाद में जांच और प्रक्रिया पूरी होने के साथ कुल हटाए गए नामों की संख्या बढ़कर करीब 90.83 लाख हो गई है।

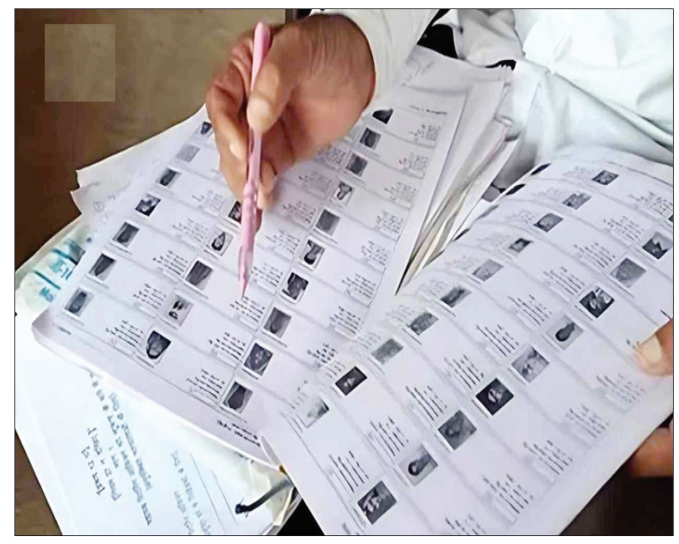

वैश्विक घटनाओं के बीच बाजार मे रहा भारी उतार-चढ़ाव, अंत में मजबूत रिकवरी

– कच्चे तेल की कीमतें और वैश्विक बाजारों के संकेतों ने निवेशकों की धारणा को लगातार प्रभावित किया

मुंबई ।

इस सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में जबरदस्त उतार-चढ़ाव देखने को मिला। पूरे हफ्ते बाजार की दिशा घरेलू कारकों से ज्यादा अंतरराष्ट्रीय घटनाओं और भू-राजनीतिक तनावों से तय होती रही। पश्चिम एशिया में संघर्ष बढ़ने की आशंका, कच्चे तेल की कीमतों में तेज बदलाव और वैश्विक बाजारों के संकेतों ने निवेशकों की धारणा को लगातार प्रभावित किया। सप्ताह की शुरुआत गिरावट के साथ हुई, लेकिन बीच-बीच में आई तेज रिकवरी ने बाजार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। आरबीआई की मौद्रिक नीति, अंतरराष्ट्रीय सीजफायर की खबरें और कच्चे तेल में नरमी ने निवेशकों का भरोसा मजबूत किया। कुल मिलाकर यह सप्ताह हाई वोलैटिलिटी और तेज सेंटिमेंट स्विंग्स का रहा। सप्ताह की शुरुआत में वैश्विक तनाव के कारण बाजार पर दबाव देखा गया। पश्चिम एशिया में युद्ध के विस्तार की आशंका और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों ने निवेशकों को सतर्क कर दिया। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी दोनों में गिरावट दर्ज की गई, हालांकि दिन के मध्य में खरीदारी लौटने से बाजार हरे निशान पर आ गया। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 1ः15 बजे तक बढ़त के साथ कारोबार करता दिखा और बाद में मजबूत बढ़त के साथ बंद हुआ। वहीं निफ्टी 50 भी सकारात्मक स्तरों पर बंद हुआ। हफ्ते के दूसरे कारोबारी दिन बाजार में 800 अंकों से अधिक की गिरावट देखी गई, जहां निफ्टी 22,800 के नीचे चला गया। हालांकि इसके बाद वैश्विक संकेतों में सुधार और कच्चे तेल में गिरावट से बाजार में तेजी लौट आई। आईटी सेक्टर में खरीदारी ने भी रिकवरी को समर्थन दिया। सबसे बड़ा उछाल तब देखने को मिला जब अमेरिका और ईरान के बीच सीजफायर की खबरें आईं। इस सकारात्मक विकास ने वैश्विक तनाव कम किया और भारतीय बाजार में भारी खरीदारी देखने को मिली। सेंसेक्स में लगभग 3,000 अंकों की तेज रैली दर्ज की गई और निफ्टी भी 24,000 के स्तर के करीब पहुंच गया। लगातार तेजी के बाद सप्ताह के अंत में बाजार में

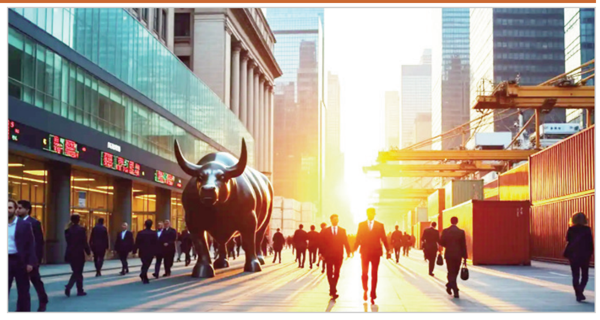

हल्की मुनाफावसूली देखने को मिली। गुरुवार को बाजार दबाव में रहा और सेंसेक्स 900 अंकों से अधिक टूट गया। निफ्टी भी नीचे आ गया। हालांकि शुक्रवार को फिर से खरीदारी लौटी और सेंसेक्स 918.60 अंक बढ़कर 77,550.25 पर बंद हुआ, वहीं निफ्टी 275.50 अंक बढ़कर 24,050.60 पर पहुंच गया।

अंबेडकर जयंती पर बाजार बंद, अगले हफ्ते सिर्फ 4 दिन होगी ट्रेडिंग

– एनएसई–बीएसई में 14 अप्रैल को अवकाश, कमोडिटी बाजार में आंशिक ट्रेडिंग

मुंबई ।

अगले सप्ताह 13 अप्रैल से शुरू होने वाले कारोबारी हफ्ते में भारतीय शेयर बाजार में सिर्फ चार दिन ही ट्रेडिंग होगी, क्योंकि 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती के अवसर पर एनएसई और बीएसई बंद रहेंगे। अगले सप्ताह से शुरू होने वाला कारोबारी हफ्ता शेयर बाजार निवेशकों के लिए छोटा रहेगा। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) 14 अप्रैल मंगलवार को अंबेडकर जयंती के कारण बंद रहेंगे, जिससे पूरे सप्ताह में केवल चार ट्रेडिंग सत्र ही उपलब्ध होंगे। इससे पहले भी गुड फ्राइडे और महावीर जयंती के कारण बाजार दो दिन बंद रहा था। साल 2026 में कुल 16 ट्रेडिंग छुट्टियां निर्धारित हैं, जिनमें कई प्रमुख पर्व शामिल हैं। आगामी महीनों में 1 मई को महाराष्ट्र दिवस, 28 मई को ईद-उल-अधहा, 26 जून को मुहर्रम, 14 सितंबर को गणेश चतुर्थी, 2 अक्टूबर को गांधी जयंती, 20 अक्टूबर को दशहरा, 10 नवंबर को दिवाली बलिप्रतिपदा, 24 नवंबर को गुरु नानक जयंती और 25 दिसंबर को क्रिसमस पर बाजार बंद रहेगा। कमोडिटी बाजार में मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया (एमसीएक्स) में सुबह का सत्र बंद रहेगा, जबकि शाम को कारोबार होगा। वहीं नेशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव्स एक्सचेंज पूरे दिन बंद रहेगा।

सोना-चांदी में जोरदार उछाल, दाम रिकॉर्ड स्तर के करीब

– घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में मजबूती के बीच निवेशकों की बढ़ी दिलचस्पी

नई दिल्ली ।

देश में सोने और चांदी की कीमतों में एक बार फिर जोरदार तेजी देखने को मिल रही है। श निवार 11 अप्रैल को दिल्ली सराफा बाजार में सोना 1.52 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के पार पहुंच गया, जबकि चांदी 2.60 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार करती दिखी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी दोनों धातुओं में मजबूती बनी हुई है, जिससे घरेलू बाजार को समर्थन मिल रहा है। देश के प्रमुख शहरों में सोने के दामों में हल्का अंतर देखा गया है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,52,510 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,39,810 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज किया गया। मुंबई और कोलकाता में 24 कैरेट सोना 1,52,360 रुपये के आसपास बना हुआ है, जबकि चेन्नई में यह बढ़कर 1,54,100 रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच गया है। चांदी की बात करें तो दिल्ली में इसकी कीमत 2,60,100 रुपये प्रति किलोग्राम दर्ज की गई। इससे पहले इसमें एक दिन में करीब 1.6 फीसदी की बढ़त देखी गई थी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में स्पॉट गोल्ड लगभग 4,777 डॉलर प्रति औंस और चांदी 75 डॉलर प्रति औंस के आसपास बनी हुई है। मार्केट एक्सपर्ट्स के अनुसार एमसीएक्स के वीकली चार्ट पर सोना और चांदी दोनों लगातार मजबूती दिखा रहे हैं। दोनों धातुएं 30-वीक मूविंग एवरेज से ऊपर बनी हुई हैं, जो मजबूत अपट्रेंड का संकेत माना जाता है। हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि अगर कीमतें प्रमुख सपोर्ट लेवल से नीचे जाती हैं तो हल्की गिरावट संभव है।

फिलहाल बाजार का रुझान सकारात्मक बना हुआ है और निवेशकों की नजर आगे की चाल पर टिकी है।

मार्च 2026 में महिंद्रा ने दर्ज की 25प्रतिशत की मजबूत वृद्धि

नई दिल्ली ।

मार्च 2026 बिक्री के लिहाज से महिंद्रा एंड महिंद्रा के लिए यह शानदार महीना रहा। कंपनी ने मार्च महीने में कुल 60,272 गाड़ियां बेचकर सालाना आधार पर 25प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की। महिंद्रा स्कॉर्पियो मॉडल एक बार फिर कंपनी की सबसे ज्यादा बिकने वाली एसयूवी बनकर उभरी, जिसने थार और बोलेरो जैसे लोकप्रिय मॉडलों को भी पीछे छोड़ दिया। स्कॉर्पियो की 14,578 यूनिट्स बिकीं, जो मार्च 2025 के मुकाबले 5प्रतिशत ज्यादा है। थार ने 10,872 यूनिट्स की बिक्री के साथ 22प्रतिशत की सालाना वृद्धि दर्ज की, जबकि बोलेरो ने भी 9,788 यूनिट्स बेचकर 22प्रतिशत की वृद्धि हासिल की। कंपनी की नई एक्सयूवी 7एक्स0 ने 9,210 यूनिट्स और एक्सयूवी 3एक्स0 ने 9,199 यूनिट्स की बिक्री के साथ अच्छा प्रदर्शन किया। हालांकि, महिंद्रा के लिए कुछ चिंताएं भी सामने आईं, जैसे कि उसकी प्रीमियम एसयूवी एक्सयूवी 700 और एमपीवी मराजो की मार्च में एक भी यूनिट नहीं बिकी, जबकि पिछले साल इसी महीने में उनकी अच्छी बिक्री हुई थी। यह दर्शाता है कि कुछ मॉडलों को ग्राहकों की अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है, जबकि कुछ अन्य बाजार में अपनी पकड़ खो रहे हैं।

जेपी एसोसिएट्स अधिग्रहण विवाद में अदाणी समूह को संस्थापक का समर्थन

– एनसीएलटी से मंजूरी के बाद भी कानूनी लड़ाई जारी, कर्ज से जूझ रही कंपनी का भविष्य अधर में

नई दिल्ली ।

कर्ज के भारी बोझ से जूझ रही जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) के अधिग्रहण को लेकर बड़ा घटनाक्रम सामने आया है। कंपनी के संस्थापक जयप्रकाश गौड़ ने अदाणी समूह के पक्ष में अपना समर्थन जताया है। यह बयान ऐसे समय में आया है जब प्रतिद्वंद्वी वेदांता लिमिटेड इस अधिग्रहण प्रक्रिया को अदालत में चुनौती दे रही है। संस्थापक जेपी गौड़ ने स्पष्ट किया है कि कॉमिटी ऑफ क्रेडिटर्स (सीओसी) और रेजोल्यूशन प्रोफेशनल द्वारा संचालित दिवाला समाधान प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी रही है। उनके अनुसार, बहुमत के आधार पर लिया गया निर्णय सभी हितधारकों के लिए स्वीकार्य होना चाहिए। गौरतलब है कि पिछले वर्ष नवंबर में सीओसी ने लगभग 90 प्रतिशत वोटिंग के साथ अदाणी इंटरप्राइजेस लिमिटेड की 14,535 करोड़ रुपये की बोली को मंजूरी दी थी। इस प्रक्रिया में वेदांता लिमिटेड और डालमिया समूह ने भी भाग लिया था। बाद में 17 मार्च को एनसीएलटी की इलाहाबाद बेंच ने भी इस बोली को मंजूरी दे दी। हालांकि वेदांता ने 17,926 करोड़ रुपये की ऊंची बोली लगाई थी और अब उसने इस फैसले को एनसीएलएटी में चुनौती दी है। वेदांता का दावा है कि उन्हें पहले अनौपचारिक रूप से समर्थन मिला था, जिसे बाद में बिना कारण बदला गया। इसके बावजूद, संस्थापक जयप्रकाश गौड़ का कहना है कि वह सीओसी के निर्णय का सम्मान करते हैं और उन्हें विश्वास है कि गौतम अडानी के नेतृत्व में जेपी एसोसिएट्स नई

दिशा में आगे बढ़ेगी। उन्होंने वेदांता की भागीदारी के लिए भी आभार जताया।

जेपी पर लगभग 57,185 करोड़ रुपये के कर्ज के डिफॉल्ट के बाद जून 2024 में कॉरपोरेट इनसॉल्वेंसी रेजोल्यूशन प्रक्रिया शुरू हुई थी। कंपनी के पास रियल एस्टेट टाउनशिप, होटल, कमर्शियल प्रॉपर्टी और सीमेंट प्लांट जैसी कई बड़ी संपत्तियां मौजूद हैं।

चार्जर खरीदते समय ऐसे बचें नकली प्रोडक्ट से, आर-नंबर बन सकता है सुरक्षा की गारंटी

– नकली चार्जर बना खतरा, बीआईएस कोड से करें असली की पहचान

मुंबई ।

आजकल ज्यादातर स्मार्टफोन कंपनियां अपने बॉक्स से चार्जर हटाने लगी हैं, जिसके कारण उपभोक्ताओं को अलग से चार्जर खरीदना पड़ता है। ऐसे में बाजार में नकली और घटिया क्वालिटी के चार्जरों की भरमार हो गई है। लेकिन एक छोटा सा 'आर-नंबर' कोड आपकी सुरक्षा और फोन दोनों को बड़े खतरे से बचा सकता है। अगर आप अपने चार्जर को ध्यान से देखें, तो उसके पीछे 'आर' से शुरू होने वाला एक कोड (जैसे आर-एक्सएक्सएक्स) और बीआईएस लोगो दिखाई देता है। यह कोड ब्यूरो आफ इं डियन स्टैंडर्ड (बीआईएस) द्वारा जारी किया जाता है, जो यह प्रमाणित करता है कि उत्पाद भारत सरकार के सुरक्षा मानकों पर खरा उतरा है। यह रजिस्ट्रेशन नंबर बताता है कि चार्जर को ओवरहीटिंग, शॉर्ट सर्किट और हाई-वोल्टेज जैसी समस्याओं के लिए टेस्ट किया गया है। यानी यह चार्जर सुरक्षित उपयोग के योग्य माना जाता है। नकली चार्जर बनाने वाले अक्सर फर्जी बीआईएस लोगो का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन

उपभोक्ता आसानी से इसकी जांच कर सकते हैं। इसके लिए बीआईएसकी आधिकारिक वेबसाइट या ऐप पर जाकर आर-नंबर दर्ज करना होता है। वहां अगर चार्जर असली होगा तो निर्माता, ब्रांड और प्रोडक्ट से जुड़ी पूरी जानकारी सामने आ जाएगी। नकली चार्जर इस्तेमाल करने के कई गंभीर खतरे होते हैं। इनमें बैटरी ब्लास्ट, फोन की बैटरी लाइफ कम होना और करंट लगने का जोखिम शामिल है। घटिया क्वालिटी के कारण फोन की परफॉर्मेंस भी प्रभावित हो सकती है।

अमेरिका-ईरान तनाव के बीच कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट

– वार्ता से पहले डब्ल्यूटीआई और ब्रेंट क्रूड में कमजोरी, स्ट्रेट आफ होर्मुज पर वैश्विक आपूर्ति की नजर

नई दिल्ली ।

अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव और संभावित शांति वार्ता से पहले वैश्विक कच्चे तेल बाजार में उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। शनिवार को होने वाली अहम बातचीत से पहले तेल की कीमतों में एक बार फिर गिरावट दर्ज की गई है। निवेशकों को उम्मीद है कि यदि बातचीत सकारात्मक रहती है तो वैश्विक आपूर्ति सामान्य हो सकती है और कीमतों में और नरमी आ सकती है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट जारी है। डब्ल्यूटीआई क्रूड लगभग 2 डॉलर से अधिक टूटकर 95.63 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है, जबकि ब्रेंट क्रूड भी गिरकर करीब 95.20 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर कारोबार कर रहा है। यह

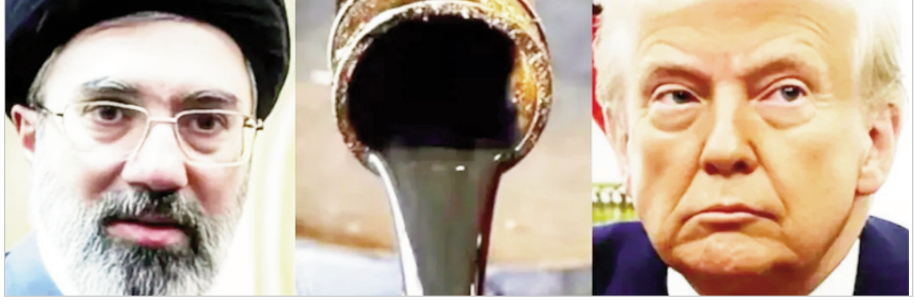

गिरावट ऐसे समय आई है जब बाजार अमेरिका और ईरान के बीच होने वाली उच्च स्तरीय बातचीत पर नजर बनाए हुए है। इससे पहले, जब सीजफायर की घोषणा से जुड़ी खबरें सामने आई थीं, तब कच्चे तेल की कीमतों में लगभग 16 प्रतिशत की भारी गिरावट देखी गई थी, जो पिछले छह वर्षों में सबसे बड़ी गिरावट मानी जा रही है। हालांकि राजनीतिक स्तर पर बयानबाजी तेज है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि समझौता नहीं हुआ तो अमेरिका और कड़ा रुख अपना सकता है। साथ ही उन्होंने बातचीत को ईरान के लिए ÷गोल्डन चांस÷ बताया है। बाजार की नजर अब स्ट्रे आफ होर्मुज पर टिकी हुई है, जहां से वैश्विक तेल आपूर्ति का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा गुजरता है। यदि यह समुद्री मार्ग सुरक्षित और खुला रहता है तो आपूर्ति स्थिर रह सकती है, जिससे कीमतों में राहत मिल सकती है। लेकिन अगर तनाव बढ़ा और मार्ग बाधित हुआ तो तेल की कीमतें फिर से 100 डॉलर प्रति बैरल के पार जा सकती हैं।

पाकिस्तान में ईंधन की कीमतों में बड़ी कटौती, 135 रुपए तक घटे दाम

- पेट्रोल, डीजल, केरोसिन और लाइट डीजल ऑयल में उल्लेखनीय कमी, नई दरें 11 अप्रैल से लागू

इस्लामाबाद ।

पाकिस्तान सरकार ने आम जनता को बड़ी राहत देते हुए पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में भारी कटौती की घोषणा की है। नई दरें 11 अप्रैल से लागू हो गई हैं। पेट्रोल, डीजल, केरोसिन और लाइट डीजल ऑयल सभी के दामों में उल्लेखनीय कमी की गई है, जिससे परिवहन और कृषि क्षेत्र पर खर्च का बोझ कम होने की उम्मीद है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार पेट्रोल की कीमत में 11.83 रुपये प्रति लीटर की कमी की गई है, जिसके बाद नई कीमत 366.58 रुपये प्रति लीटर तय हुई है। वहीं डीजल के दाम में 134.81 रुपये प्रति लीटर की भारी कटौती की गई है और अब यह 385.54 रुपये प्रति लीटर में उपलब्ध होगा। इसके अलावा केरोसिन तेल की कीमत में 17.33 रुपये की कमी की गई है, जिससे इसकी नई दर 450.15 रुपये प्रति लीटर हो गई है। लाइट डीजल ऑयल भी 25.31 रुपये सस्ता होकर 369.72 रुपये प्रति लीटर पर आ गया है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का पूरा लाभ जनता तक पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सरकार ने राहत का कोई हिस्सा राजस्व या अन्य खर्चों में उपयोग करने के बजाय सीधे जनता को देने का निर्णय लिया है। सरकार का कहना है कि किसानों को राहत देना प्राथमिकता है ताकि उत्पादन लागत घटे और कृषि क्षेत्र को मजबूती मिले। इसके साथ ही ट्रांसपोर्ट और मोटरसाइकिल उपयोगकर्ताओं के लिए सब्सिडी जारी रखने की भी बात कही गई है।

आरबीआई का प्रस्ताव- 1 लाख करोड़ से अधिक परिसंपत्ति वाली एनबीएफसी होंगी अपर लेयर में

- मौजूदा जटिल स्कोरिंग सिस्टम की जगह अब आकार आधारित मानदंड अपनाने का सुझाव

नई दिल्ली ।

भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के वर्गीकरण ढांचे में महत्वपूर्ण बदलाव का प्रस्ताव दिया है। प्रस्ताव के अनुसार अब एनबीएफसी को उनकी परिसंपत्ति (एसेट साइज) के आधार पर अपर लेयर में रखा जाएगा, जिससे मौजूदा जटिल मूल्यांकन प्रणाली को सरल और पारदर्शी बनाया जा सके। इस मसौदे पर हितधारकों से 4 मई तक सुझाव मांगे गए हैं। रतीय रिज़र्व बैंक ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के लिए मौजूदा स्केल बेस्ड रेगुलेटरी (एसबीआर) ढांचे में व्यापक बदलाव का प्रस्ताव जारी किया है। इस प्रस्ताव के तहत सबसे बड़ा बदलाव यह है कि अब अपर लेयर एनबीएफसी की पहचान के लिए जटिल स्कोरिंग मॉडल की जगह केवल परिसंपत्ति आधारित मानदंड अपनाया जाएगा। आरबीआई के अनुसार जिन एनबीएफसी की परिसंपत्ति 1 लाख करोड़ रुपए या उससे अधिक होगी, उन्हें उनकी नवीनतम ऑडिटेड बैलेंस शीट के आधार पर सीधे अपर लेयर श्रेणी में रखा जाएगा। इसके अलावा यदि सार्वजनिक क्षेत्र की एनबीएफसी इस परिसंपत्ति सीमा को पार करती हैं, तो उन्हें भी इस श्रेणी में शामिल किया जाएगा। वर्तमान में ऐसी कई संस्थाएं बुनियादी या मध्य स्तर में वर्गीकृत रहती हैं। अभी तक अपर लेयर एनबीएफसी की पहचान एक द्विआयामी पद्धति के आधार पर होती है, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक मापदंड शामिल हैं। इस प्रणाली में लगभग 70 प्रतिशत भार मात्रात्मक और 30 प्रतिशत गुणात्मक संकेतकों को दिया जाता है। हालांकि आरबीआई का मानना है कि यह ढांचा जटिल है और इसे सरल बनाना आवश्यक है ताकि नियमन अधिक पारदर्शी और प्रभावी हो सके। फिलहाल लगभग 15 एनबीएफसी को अपर लेयर में रखा गया है। इनमें बजाज फाइनेंस, श्रीराम फाइनेंस, एलएंडटी फाइनेंस, टाटा कैपिटल, एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस, चोलामंडलम इन्वेस्टमेंट एंड फाइनेंस कंपनी, महिंद्रा एंड महिंद्रा फाइनेंशियल सर्विसेज, आदित्य बिड़ला फाइनेंस, मुथूट फाइनेंस, एचडीबी फाइनेंशियल सर्विसेज, बजाज हाउसिंग फाइनेंस, पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस और टाटा संस जैसे बड़े नाम शामिल हैं। आरबीआई ने जनवरी 2025 में जारी सूची में स्पष्ट किया था कि टाटा संस को अपर लेयर में शामिल करना उसके पंजीकरण रद्द करने के आवेदन की प्रक्रिया पर कोई असर नहीं डालेगा, जो अभी समीक्षा में है। इस नए प्रस्ताव के लागू होने पर सरकारी क्षेत्र की एनबीएफसी को भी अपर लेयर में शामिल किए जाने से इस श्रेणी की संस्थाओं की संख्या बढ़ सकती है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह बदलाव वित्तीय प्रणाली में निगरानी को अधिक मजबूत बनाएगा और बड़े संस्थानों पर नियामकीय नियंत्रण और प्रभावी होगा। इक्रा के अनुसार, इससे एनबीएफसी क्षेत्र में वर्गीकरण अधिक स्पष्ट और सरल हो सकेगा।

भारत बनाएगा 10 करोड़ डॉलर का समुद्री बीमा कोष

- युद्ध जोखिम बढ़ने से महंगा हुआ बीमा, निर्यातकों को राहत देने की तैयारी

नई दिल्ली ।

पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के चलते समुद्री व्यापार पर संकट गहराता जा रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए भारतीय बीमा और पुनर्बीमा कंपनियां एक विशेष समुद्री बीमा कोष बनाने की योजना पर काम कर रही हैं। इसी पृष्ठभूमि में भारतीय सामान्य बीमा और पुनर्बीमा कंपनियां करीब 10 करोड़ डॉलर का समुद्री बीमा कोष तैयार करने पर विचार कर रही हैं। इस कोष का प्रबंधन जनरल इंश्योरेंस कारपोरेशनप आफ इं डिया (जीआईसी) द्वारा किया जाएगा, जिसमें समुद्री बीमा से जुड़ी अन्य कंपनियां भी भाग लेंगी। सूत्रों के अनुसार इस कोष को मजबूत बनाने के लिए सरकार संप्रभु गारंटी देने पर भी विचार कर सकती है। बीमा कंपनियां फरवरी 2026 तक समुद्री बीमा प्रीमियम का लगभग 8 प्रतिशत हिस्सा इसमें योगदान करने पर चर्चा कर रही हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि सामान्य समुद्री बीमा युद्ध संबंधी जोखिमों को कवर नहीं करता, जिसके लिए अलग से वार-रिस्क कवर लेना पड़ता है। मौजूदा हालात में यह कवर महंगा और सीमित हो गया है। पहले जहां इसका प्रीमियम 0.25 प्रतिशत था, वहीं अब यह बढ़कर 0.5 से 1 प्रतिशत तक पहुंच गया है। पश्चिम एशिया में अस्थिरता के चलते कई बीमा कंपनियों ने जहाजों के लिए कवर रद्द करने तक के नोटिस जारी किए हैं। वहीं शिपिंग कंपनियां वैकल्पिक मार्गों की तलाश कर रही हैं या सेवाएं रोक रही हैं। प्रस्तावित बीमा कोष जोखिम को साझा कर बड़े नुकसान की भरपाई में मदद करेगा और भविष्य में इस तरह के संकटों से निपटने में अहम भूमिका निभा सकता है।

हिम्मतः डरपोक राजू की बहादुरी की प्रेरक कहानी

भारत के एक बहुत ही सुंदर और हरे-भरे राज्य में 'शांतिपुर' नाम का एक गाँव था। इस गाँव के किनारे से एक साफ़ और ठंडे पानी की नदी बहती थी। गाँव में आम, अमरूद और नीम के बड़े-बड़े पेड़ थे। इसी शांतिपुर गाँव में एक दस साल का लड़का रहता था, जिसका नाम था राजू। राजू पढ़ाई में बहुत होशियार था और उसका दिल बहुत साफ था। लेकिन राजू की एक बहुत बड़ी परेशानी थी-वह बहुत डरपोक था।

उसे हर चीज़ से डर लगता था। रात के अंधेरे से, तेज़ आवाज़ से, ऊँचाई से, और यहाँ तक कि गली के छोटे-छोटे जानवरों से भी। जब भी आसमान में बिजली कड़कती, राजू डर के मारे अपने बिस्तर के नीचे छिप जाता था।

राजू के इस डरपोक स्वभाव की वजह से गाँव के दूसरे बच्चे अक्सर उसका मज़ाक उड़ाते थे। जब बच्चे क्रिकेट खेलते और गेंद किसी पुरानी हवेली या झाड़ियों में चली जाती, तो वे राजू को डराने के लिए कहते, 'राजू, जा जाकर गेंद ले आ, वहाँ भूत रहता है!' राजू डर के मारे कांपने लगता और रोने-रोने को हो जाता। सब बच्चे उस पर ज़ोर-ज़ोर से हँसते थे। राजू को यह सब बहुत बुरा लगता था। वह अक्सर सोचता था कि काश उसके अंदर भी दूसरे बच्चों की तरह बहादुरी होती।

बच्चों, क्या आप जानते हैं कि असली साहस या हिम्मत किसे कहते हैं? हिम्मत का मतलब यह नहीं होता कि आपको कभी डर ही न लगे। असली हिम्मत तो वह होती है जब आप बहुत डरे हुए हों, लेकिन फिर भी सही काम करने के लिए आगे कदम बढ़ाएं। राजू को भी जल्द ही इस बात का मतलब समझ आने वाला था।

राजू वैसे तो जानवरों से बहुत डरता था, लेकिन एक दिन स्कूल से लौटते समय उसने देखा कि सड़क के किनारे एक छोटा सा भूरे रंग का पिल्ला (कुत्ते का बच्चा) ठंड से कांप रहा था। वह बहुत भूखा और कमज़ोर लग रहा था। राजू को पहले तो डर लगा, लेकिन पिल्ले की मासूम आँखों को देखकर राजू का दिल पसीज गया।

राजू ने अपने टिफिन में बची हुई आधी रोटी उस पिल्ले के सामने डाल दी। पिल्ला तुरंत रोटी खा गया और अपनी छोटी सी पूंछ हिलाते हुए राजू के जूतों को चाटने लगा। उस दिन से राजू और उस पिल्ले की पक्की दोस्ती हो गई। राजू ने उसका नाम 'शेरू' रखा। अब रोज़ स्कूल आते-जाते राजू शेरू के लिए कुछ न कुछ खाने को लाता। शेरू राजू को देखकर उछल-कूद करता। शेरू के साथ रहकर राजू अपना डर भूल जाता था।

गर्मियों का मौसम खत्म हुआ और बारिश का मौसम आ गया। इस बार शांतिपुर गाँव में बहुत भयानक बारिश हुई। लगातार तीन दिनों तक मूसलाधार बारिश होती रही। आसमान में काले-काले बादल छाए रहते और तेज़ बिजली कड़कती रहती। सूरज तो जैसे कहीं छिप ही गया था।

इतनी तेज़ बारिश के कारण गाँव के किनारे बहने वाली नदी का पानी बहुत बढ़ गया। नदी में बाढ़ जैसी स्थिति आ गई।

तभी अचानक, बाहर हवा की आवाज़ के बीच राजू को एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी। कूईं... कूईं... कूईं...

राजू ने तुरंत अपनी रज़ाई हटाई। यह आवाज़ शेरू की थी! राजू ने खिड़की से बाहर झाँक कर देखा। उसका घर नदी के थोड़ा पास ही था। राजू ने देखा कि शेरू नदी के किनारे एक बड़े से पत्थर पर फँसा हुआ था। बाढ़ का पानी तेज़ी से उस पत्थर की तरफ बढ़ रहा था। शेरू बहुत डरा हुआ था और मदद के लिए रो रहा था।

राजू के पिता ने भी खिड़की से बाहर देखा और बोले, 'अरे बाप रे! नदी का बहाव बहुत तेज़ है। उस पिल्ले का बचना नामुमकिन है। बाहर जाना बहुत खतरनाक है।'

यह सुनकर राजू का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसका प्यारा दोस्त शेरू मौत के मुँह में था!

राजू को बहुत डर लग रहा था। उसके हाथ-पैर कांप रहे थे। बिजली कड़क रही थी, जिससे उसका डर और भी बढ़ रहा था। लेकिन जब उसने शेरू की रोती हुई मासूम आँखें देखीं, तो उसे लगा कि अगर वह नहीं गया तो शेरू डूब जाएगा।

राजू ने अपनी आँखें बंद कीं और गहरी साँस ली। आज उसे अपने डर से ज्यादा शेरू की फिक्र हो रही थी। यही वह पल था जब राजू के अंदर हिम्मत जागी। बिना किसी को बताए, राजू ने अपनी चमकीली पीली रेनकोट (ऋड्डद्बठ्ठष्श्रड्डह्ल) पहनी। उसने घर के आंगन से एक लंबी और मज़बूत लकड़ी उठाई और दरवाज़ा खोलकर तूफानी बारिश में बाहर निकल गया।

'राजू! बेटा, वापस आओ! यह खतरनाक है!' राजू के माता-पिता घबरा कर चिल्लाए। लेकिन राजू तब तक नदी के किनारे पहुँच चुका था।

नदी का पानी बहुत ठंडा था और बहाव तेज़ था। राजू ने एक कदम पानी में रखा। पानी उसके घुटनों तक आ रहा था। उसे लगा कि वह बह जाएगा, लेकिन उसने अपनी लकड़ी को ज़मीन पर ज़ोर से टिकाया। 'डरो मत शेरू! मैं आ रहा हूँ!' राजू ने तेज़ हवाओं के बीच चिल्लाकर कहा।

राजू धीरे-धीरे, एक-एक कदम सावधानी से बढ़ाते हुए उस पत्थर की तरफ जाने लगा जहाँ शेरू फँसा था। पानी की लहरें राजू को पीछे धकेल रही थीं, लेकिन उसने हार नहीं मानी। कड़कती बिजली भी अब उसे डरा नहीं पा रही थी।

आखिरकार, राजू उस पत्थर तक पहुँच गया। उसने शेरू को उठाया और अपने रेनकोट के अंदर, अपने सीने से लगा लिया। शेरू ने राजू का चेहरा चाटना शुरू कर दिया। राजू को अब वापस लौटना था। वापसी का सफर और भी मुश्किल था क्योंकि उसके एक हाथ में शेरू था। लेकिन राजू की हिम्मत अब दोगुनी हो चुकी थी।

पूरे ज़ोर और सावधानी के साथ, राजू नदी से बाहर आ गया।

जब राजू शेरू को लेकर घर पहुँचा, तो उसके माता-पिता दौड़कर आए और उसे गले लगा लिया। वे रो रहे थे और साथ ही बहुत गर्व भी महसूस कर रहे थे। बारिश रुकने के बाद, यह खबर पूरे गाँव में फैल गई कि डरपोक राजू ने तूफानी नदी में जाकर एक पिल्ले की जान बचाई है।

गाँव के लोग राजू के घर आए। जो बच्चे कल तक राजू को 'डरपोक' कहकर चिढ़ाते थे, वे आज हैरान थे। गाँव के सरपंच ने राजू की पीठ थपथपाई और कहा, 'शाबाश बेटा! तुमने आज जो किया है, वह हर कोई नहीं कर सकता। तुमने साबित कर दिया कि असली हिम्मत शरीर की ताकत में नहीं, बल्कि दिल की अच्छाई और इरादों में होती है।'

उस दिन के बाद से, शांतिपुर गाँव में किसी ने भी राजू को डरपोक नहीं कहा। राजू का भी अपने अंदर का सारा डर हमेशा के लिए खत्म हो गया था। शेरू अब राजू के साथ ही उसके घर में रहने लगा था। राजू ने समझ लिया था कि डर लगना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन डर के आगे हार मान लेना बुरी बात है। अगर हम अपने मन में ठान लें और थोड़ी सी हिम्मत दिखाएं, तो हम किसी भी बड़ी से बड़ी मुसीबत का सामना कर सकते हैं।

प्यारे बच्चों, लोटपोट की इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि डर के आगे ही असली जीत है!

सीख

डर पर काबू पाना : असली हिम्मत कभी न डरने में नहीं है, बल्कि डरे हुए होने के बावजूद सही काम करने में है।

दूसरों की मदद : जब हम किसी कमज़ोर या ज़रूरतमंद की मदद करने का फैसला करते हैं, तो हमारे अंदर अपने आप हिम्मत आ जाती है।

खुद पर विश्वास : हमें कभी भी खुद को कमज़ोर नहीं समझना चाहिए। मुसीबत के समय हमारे अंदर छिपी हुई ताकत ही हमारा सबसे बड़ा हथियार होती है।

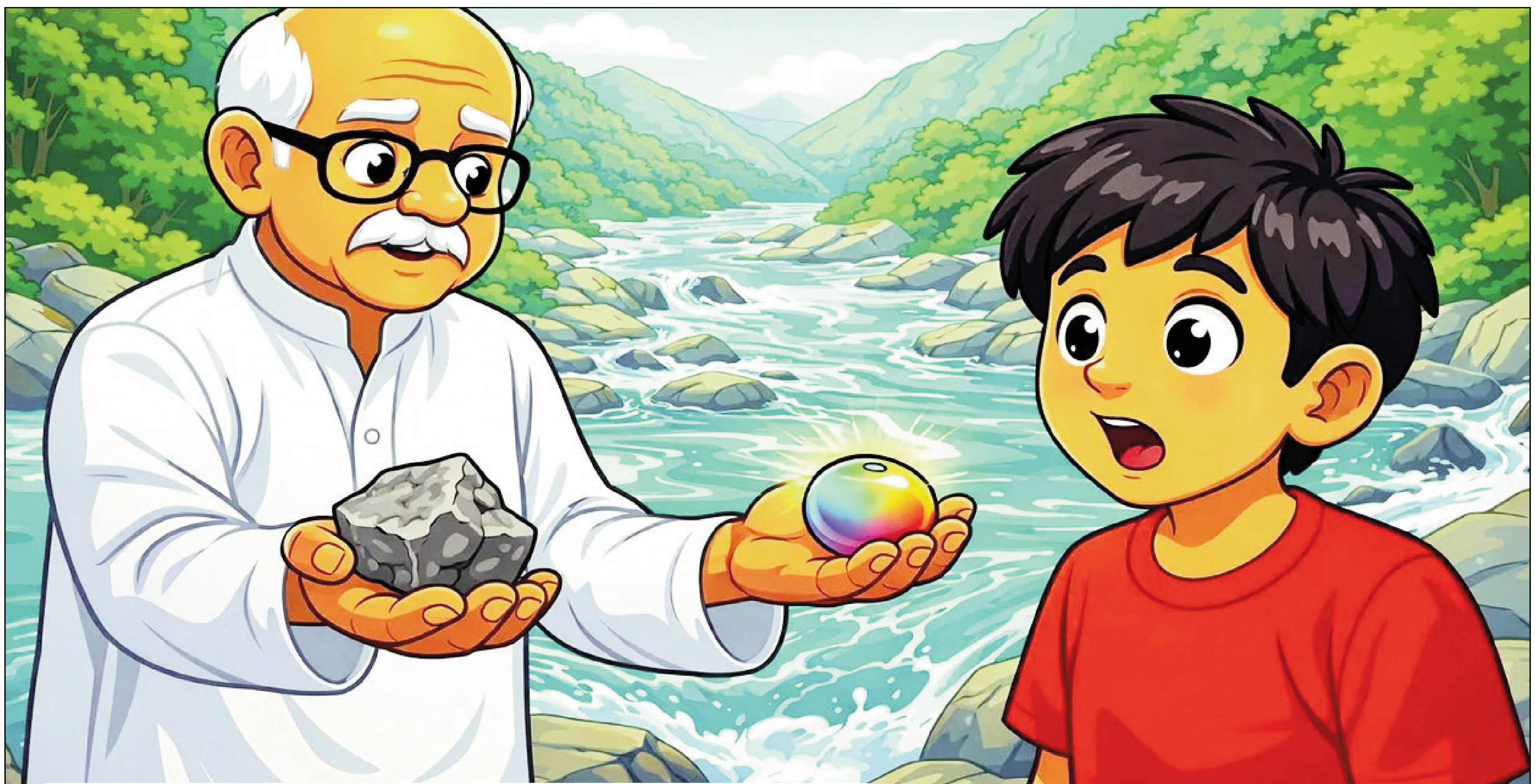

नुकीले पत्थर से सीख

रवि और दादाजी की प्रेरणादायक कहानी

भारत के एक बहुत ही सुंदर और शांत शहर 'देहरादून' में एक 12 साल का लड़का रहता था, जिसका नाम था 'रवि'। रवि पढ़ाई में बहुत होशियार था और उसके अंदर एक जन्मजात टैलेंट था-वह बहुत शानदार चित्रकला करता था। उसके द्वारा बनाए गए चित्र एकदम असली लगते थे। लेकिन, रवि के अंदर एक बहुत बड़ी कमी थी। वह स्वभाव से बहुत कामचोर था और थोड़ी सी मेहनत या कठिनाई आने पर तुरंत हार मान लेता था।

प्रकृति में हर चीज़, चाहे वह एक छोटा सा पौधा हो या एक कठोर पत्थर, हमें जीवन की कोई न कोई बड़ी सीख ज़रूर देती है। रवि को भी जल्द ही एक नुकीले पत्थर से सीख मिलने वाली थी, जो उसकी ज़िंदगी को हमेशा के लिए बदलने वाली थी।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता और रवि की हार

एक दिन रवि के स्कूल में घोषणा हुई कि अगले महीने पूरे राज्य स्तर की 'राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता' होने वाली है। स्कूल के प्रिंसिपल सर ने रवि को बुलाया और कहा, 'रवि, तुम्हारी कला बहुत बेहतरीन है। इस साल हमारे स्कूल की तरफ से तुम इस प्रतियोगिता में हिस्सा लोगे। लेकिन याद रखना, इसके लिए तुम्हें रोज़ कम से कम चार घंटे अभ्यास करना होगा।'

रवि शुरुआत में बहुत खुश हुआ। उसने घर आकर नए रंग और ब्रश निकाले और पेंटिंग बनानी शुरू की। लेकिन दो-तीन दिन बाद ही उसका उत्साह खत्म होने लगा। लगातार बैठकर पेंटिंग करने से उसकी कमर में दर्द होने लगा और उंगलियां सुन्न हो गईं।

'मुझसे यह सब नहीं होगा! इतना दर्द कौन सहेगा? मैं तो वैसे भी अच्छा चित्र बनाता हूँ, मुझे इस अभ्यास की क्या ज़रूरत है?' यह सोचकर रवि ने अपने रंग और ब्रश मेज पर फेंक दिए और बिस्तर पर लेटकर मोबाइल देखने लगा।

रवि के दादाजी, 'रामनाथ जी', घर के एक बहुत ही समझदार और अनुभवी व्यक्ति थे। वे कई सालों तक में काम कर चुके थे और उन्हें पता था कि बिना अनुशासन और मेहनत के कोई भी इंसान महान नहीं बन सकता।

जब दादाजी ने देखा कि रवि ने प्रतियोगिता की तैयारी छोड़ दी है और वह मुश्किलों से भाग रहा है, तो उन्हें बहुत चिंता हुई। वे जानते थे कि अगर रवि को सही समय पर नहीं समझाया गया, तो उसका सारा टैलेंट (Talent) बर्बाद हो जाएगा।

अगले दिन रविवार था। दादाजी सुबह-सुबह रवि के कमरे में आए और बोले, 'रवि बेटा, उठो! आज हम दोनों शहर के बाहर 'नीलधारा' नदी के किनारे एक छोटी सी ट्रैकिंग (पहाड़ी सैर) पर जाएंगे।'

रवि ने मुँह बनाते हुए कहा, 'दादाजी, मुझे नहीं जाना। वहाँ बहुत चलना पड़ेगा और मेरे पैरों में दर्द हो जाएगा।' लेकिन दादाजी ने उसकी एक न सुनी। वे उसे लगभग ज़बरदस्ती अपने साथ लेकर निकल पड़े।

नीलधारा नदी शहर से कुछ किलोमीटर दूर एक पहाड़ी इलाके में बहती थी। वहाँ पहुँचने का रास्ता बहुत ही कच्चा, ऊबड़-खाबड़ और कंटीला था। रवि पूरे रास्ते शिकायत करता रहा। 'दादाजी, कितनी धूप है! रास्ता कितना खराब है! हम यहाँ क्यों आए हैं?'

दादाजी बस मुस्कुराते रहे और अपनी छड़ी के सहारे आगे बढ़ते रहे। अचानक, नदी के किनारे पहुँचने से थोड़ा पहले, रवि का पैर एक बहुत ही तीखे और खुरदरे पत्थर पर पड़ा। पत्थर इतना नुकीला था कि वह रवि के जूतों के सोल (स्थ्द्य) को पार करता हुआ उसके पैर में हल्का सा चुभ गया।

'आउच! मम्मा!' रवि दर्द के मारे ज़ोर से चिल्लाया। उसने गुस्से में उस पत्थर को उठाया और दूर फेंकने लगा। 'यह कितना गंदा और नुकीला पत्थर है! इसने मेरे पैर में चोट लगा दी। इसे तो यहाँ होना ही नहीं चाहिए!'

दादाजी ने रवि का हाथ पकड़ लिया। उन्होंने वह नुकीला पत्थर रवि के हाथ से लिया और कहा, 'रुको बेटा! इस पत्थर को फेंको मत। आज तुम्हें इस नुकीले पत्थर से सीख लेनी है। इसे अपने पास रखो और चलो, अब नदी आ गई है।'

दोनों नीलधारा नदी के किनारे पहुँचे। नदी का पानी बहुत ही साफ, ठंडा और तेज़ी से बहने वाला था। पानी के बहाव की आवाज़ से मन को बहुत शांति मिल रही थी।

दादाजी ने रवि से कहा, 'बेटा, तुम्हारे हाथ में जो पत्थर है, वह बहुत ही भद्दा और नुकीला है। अब ज़रा इस नदी के पानी के अंदर हाथ डालो और जो सबसे सुंदर, चिकना और गोल पत्थर (Pebble) तुम्हें मिले, उसे बाहर निकालो।'

रवि ने अपने जूते उतारे और नदी के ठंडे पानी में गया। नदी का तल (ब्ड्डह्यद्द) अनगिनत छोटे-बड़े, रंग-बिरंगे और बेहद चिकने पत्थरों से भरा हुआ था। रवि ने एक बहुत ही सुंदर, बिल्कुल गोल और चमकता हुआ 'सफ़ेद पत्थर' पानी से बाहर निकाला। वह पत्थर इतना चिकना था कि उसे हाथ में पकड़ने पर बहुत अच्छा लग रहा था।

'दादाजी, देखिए! यह पत्थर कितना सुंदर और चिकना है। मैं इसे अपने घर ले जाकर अपनी मेज पर सजाऊंगा,' रवि ने खुशी से कहा।

दादाजी ने एक पास के बड़े से पत्थर पर बैठते हुए रवि को अपने पास बुलाया। उन्होंने रवि के एक हाथ में वह 'नुकीला और भद्दा पत्थर' रखा और दूसरे हाथ में वह 'चिकना और सुंदर पत्थर' रखा।

दादाजी ने गंभीर और शांत स्वर में कहा, 'रवि बेटा, क्या तुम जानते हो कि ये दोनों पत्थर एक ही पहाड़ से टूटकर नीचे गिरे थे? सालों पहले ये दोनों बिल्कुल एक जैसे ही खुरदरे और नुकीले थे।'

रवि ने हैरानी से पूछा, 'तो फिर यह दूसरा पत्थर इतना गोल और सुंदर कैसे बन गया, दादाजी?'

यही वह पल था जहाँ इस कहानी की सबसे बड़ी नुकीले पत्थर से सीख छिपी थी। दादाजी ने मुस्कुराते हुए समझाया, 'बेटा, तुम्हारे दाहिने हाथ में जो नुकीला पत्थर है, वह पहाड़ से टूटकर नदी के बाहर सूखे किनारे पर गिर गया। उसने नदी के तेज़ बहाव से डरकर पानी में जाने से इंकार कर दिया। वह अपनी जगह पर आराम से पड़ा रहा। उसे कोई दर्द नहीं सहना पड़ा, किसी तेज़ धारा का सामना नहीं करना पड़ा। लेकिन इसका नतीजा क्या हुआ? आज वह वैसा का वैसा ही नुकीला, खुरदरा और भद्दा है। लोग उसे देखकर गुस्सा करते हैं क्योंकि वह पैरों में चुभता है।'

दादाजी ने फिर उस सुंदर पत्थर की तरफ इशारा किया और कहा, 'लेकिन इस दूसरे पत्थर ने आराम नहीं चुना। यह पहाड़ से सीधा इस नदी के तेज़ और खतरनाक बहाव में कूद गया। सालों तक यह पानी के थपेड़े सहता रहा। यह कभी दूसरे पत्थरों से टकराया, तो कभी ज़मीन पर रगड़ाया। इसे बहुत दर्द हुआ होगा, यह बहुत घिसा होगा। लेकिन उस 'घिसने' और 'कठिनाइयों को सहने' का नतीजा क्या हुआ? आज यह पत्थर एकदम गोल, चिकना और इतना सुंदर बन गया है कि तुम इसे अपने घर में सजाना चाहते हो।'

दादाजी की बातें रवि के दिल में किसी तीर की तरह जाकर लगीं। उसे अचानक अपनी और उस पेंटिंग प्रतियोगिता की याद आ गई।

दादाजी ने रवि के कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'बेटा, इंसान का जीवन भी बिल्कुल इन पत्थरों की तरह होता है। अगर तुम मेहनत से डरोगे, अपनी कमर के दर्द और उंगलियों की थकान से भागोगे, तो तुम जीवन भर उस नुकीले पत्थर की तरह ही रह जाओगे—एकदम साधारण, जिससे कोई प्यार नहीं करता। लेकिन अगर तुम 'सफलता की नदी' में कूदकर मेहनत की रगड़ सहोगे, अभ्यास का दर्द बर्दाश्त करोगे, तो एक दिन तुम इस 'गोल पत्थर' की तरह चमकोगे, जिसे पूरी दुनिया सम्मान देगी।'

रवि की आँखों से अज्ञानता का पर्दा हट चुका था। उसने उन दोनों पत्थरों को अपनी जेब में रख लिया। 'मुझे माफ़ कर दीजिए दादाजी,' रवि ने नम आँखों से कहा। 'मुझे आपकी नुकीले पत्थर से सीख पूरी तरह समझ आ गई है। मैं अब अपनी मेहनत से पीछे नहीं हटूंगा। दर्द चाहे जितना भी हो, मैं अभ्यास करूँगा और उस प्रतियोगिता में अपना सर्वश्रेष्ठ दूँगा।' अगले दिन से रवि का रूटीन पूरी तरह बदल गया। उसने मोबाइल फोन एक तरफ रख दिया। वह रोज़ स्कूल से आकर लगातार पाँच घंटे अपनी पेंटिंग का अभ्यास करता। उसकी उंगलियों में दर्द होता, उसकी आँखें थक जातीं, लेकिन वह रुकता नहीं था। जब भी उसका मन हार मानने को करता, वह अपनी मेज पर रखे उस 'चिकने पत्थर' को देख लेता और उसे दादाजी की बात याद आ जाती।

एक महीने बाद प्रतियोगिता का दिन आया। रवि ने वहां एक बहुत ही शानदार और जीवंत पेंटिंग बनाई। जब प्रतियोगिता का परिणाम (ऋद्गह्यह्वद्यह्ल) घोषित हुआ, तो पूरे राज्य में रवि को 'प्रथम पुरस्कार' मिला!

मंच पर जब रवि को गोल्ड मेडल और ट्रॉफी दी जा रही थी, तो उसने दर्शकों में बैठे अपने दादाजी की तरफ देखा और मुस्कुरा दिया। उसे पता था कि यह मेडल उसकी कला का नहीं, बल्कि उस 'रगड़' और 'मेहनत' का है जो उसने पिछले एक महीने में सही थी।

बच्चों, लोटपोट की ये हिंदी कहानियां हमें जीवन की सबसे महत्वपूर्ण सच्चाई से रूबरू कराती हैं। बिना दर्द सहे, कोई भी महान नहीं बन सकता।

सीख

मेहनत और संघर्ष : सफलता पाने के लिए हमें मेहनत की आग में तपना ही पड़ता है। बिना संघर्ष और कठिनाइयों का सामना किए कोई भी इंसान महान नहीं बन सकता।

आराम का लालच : जो लोग आराम का रास्ता चुनते हैं और मेहनत से भागते हैं, वे जीवन में कभी भी निखर नहीं पाते और पीछे रह जाते हैं (नुकीले पत्थर की तरह)।

दर्द ही दवा है : अभ्यास करते समय होने वाला दर्द असल में हमारी कमियों को दूर कर रहा होता है, इसलिए उससे घबराने के बजाय उसका डटकर सामना करना चाहिए।

जीटी के सामने एलएसजी की घरेलू पिच पर अग्निपरीक्षा: नए सितारे संग वापसी की चुनौती

चेन्नई (एजेंसी)। नई दिल्ली (ईएमएस)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) को अपने घरेलू मैदान एकाना क्रिकेट स्टेडियम पर निराशाजनक रिकॉर्ड को पीछे छोड़कर गुजरात टाइटंस (जीटी) के खिलाफ रविवार को होने वाले मुकाबले में वापसी करनी होगी। इस महत्वपूर्ण मैच से पहले, एलएसजी के पास मुकुल चौधरी के रूप में एक नया सितारा उभरा है, जिन्होंने अपनी बल्लेबाजी से सबका ध्यान खींचा है, लेकिन घरेलू मैदान पर खराब प्रदर्शन एक बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है। दोनों टीमों ने अपने पिछले दोनों मैच जीते हैं, जिससे उनका मनोबल बढ़ा हुआ है।

गुजरात टाइटंस ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ एक रन की रोमांचक जीत दर्ज कर अपना खाता खोला था, जबकि एलएसजी ने सनराइजर्स हैदराबाद और कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के खिलाफ उनके मैदानों पर प्रभावशाली जीत हासिल की थी। हालांकि, एलएसजी एकाना क्रिकेट स्टेडियम में लगातार संघर्ष कर रहा है। उसे अपने घरेलू मैदान को एक मजबूत गढ़ बनाना है तो खेल के हर विभाग में अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

घरेलू मैदान पर एलएसजी का प्रदर्शन वाकई चिंताजनक रहा है। पिछले सत्र में, टीम ने यहां खेले गए आठ में से छह मैच हारे थे, जिसमें लगातार पांच हार शामिल थीं। यही वजह थी कि वे पिछले साल अंक तालिका में सातवें स्थान पर रहे। कुल मिलाकर, उन्होंने इस मैदान पर खेले गए 22 मैचों में से केवल नौ में ही जीत हासिल की है। मौजूदा सत्र में भी, घरेलू मैदान पर उनका पहला मैच निराशाजनक रहा, जहां दिल्ली कैपिटल्स ने उन्हें 141 रन पर आउट करके छह विकेट से जीत दर्ज की थी। यह एलएसजी का इस सत्र में घरेलू मैदान पर दूसरा मैच होगा, और वे यहां अपने जीत के रिकॉर्ड को सुधारने के लिए बेताब होंगे।

एलएसजी के लिए केकेआर के खिलाफ पिछला मैच विशेष रूप से यादगार रहा, जब 21 वर्षीय राजस्थानी बल्लेबाज मुकुल चौधरी एक नए फिनिशर के रूप में उभरे। उन्होंने आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी की, जिसमें उनके आदर्श महेंद्र सिंह धोनी का पसंदीदा हेलीकॉप्टर शॉट भी शामिल था, जिससे उन्होंने क्रिकेट जगत का ध्यान अपनी ओर खींचा। आयुष बडोनी की फॉर्म में वापसी, जिन्होंने केकेआर के खिलाफ अर्धशतक लगाया, एलएसजी के लिए एक और सकारात्मक पहलू है, जो उनके बल्लेबाजी क्रम को मजबूत करता है।

यह मैच दोपहर में खेला जाएगा, और एकाना की धीमी पिच पर गुजरात के अनुभवी स्पिनरों राशिद खान और वाशिंगटन सुंदर का सामना करना आसान नहीं होगा। राशिद ने दिल्ली के खिलाफ 17 रन देकर तीन विकेट लिए थे और अपनी टीम की एक रन से जीत में अहम भूमिका निभाई थी। एलएसजी को अपनी घरेलू जमीन पर जीत की राह पर लौटने के लिए गुजरात के मजबूत गेंदबाजी आक्रमण का सामना करते हुए बेहतर प्रदर्शन करना होगा।

टीम इस प्रकार है

लखनऊ सुपर जायंट्स: ऋषभ पंत (कप्तान), मिचेल मार्श, एडन मार्क्रम, हिम्मत सिंह, मैथ्यू ब्रीट्ज़के, मुकुल चौधरी, अक्षत रघुवंशी, जोश इंग्लिस, निकोलस पूरन, अब्दुल समद, शाहबाज़ अहमद, अर्शिन कुलकर्णी, आयुष बडोनी, मोहम्मद शमी, अवेश खान, एम सिद्धार्थ, दिग्वेश सिंह, आकाश सिंह, प्रिंस यादव, अर्जुन तेंदुलकर, एनरिक नोर्किया, नमन तिवारी, मयंक यादव, मोहसिन खान.

गुजरात टाइटंस : शुभमन गिल (कप्तान), साई सुदर्शन, जोस बटलर (विकेटकीपर), वॉशिंगटन सुंदर, ग्लेन फिलिप्स, शाहरुख खान, राहुल तेवतिया, राशिद खान, कगिसो रबाडा, मोहम्मद सिराज, अशोक शर्मा, प्रसिद्ध कृष्णा.

आलोचकों पर बरसे सीएसके के कोच स्टीफन फ्लेमिंग, बताया रणनीति में बदलाव का कारण

चेन्नई (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स के हेड कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने आईपीएल में टीम के हालिया प्रदर्शन को लेकर उठ रही आलोचनाओं का करारा जवाब दिया है। उन पर आरोप लग रहे थे कि वे मौजूदा टी20 क्रिकेट की बदलती जरूरतों के हिसाब से खुद को ढाल नहीं पा रहे हैं, लेकिन न्यूजीलैंड के इस पूर्व कप्तान ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा है कि वह पूरी तरह से खेल के नए आयामों से जुड़े हुए हैं।

दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ महत्वपूर्ण मैच से पहले फ्लेमिंग ने अपनी बात रखते हुए स्वीकार किया कि खराब नतीजों के बाद आलोचना होना स्वाभाविक है, क्योंकि खेल में परिणाम ही लोगों की सोच तय करते हैं। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि वह आईपीएल से पहले खेल की दिशा से अनभिज्ञ नहीं हैं, बल्कि वह पूरे साल दुनिया भर के अलग-अलग टी20 टूर्नामेंट्स में कोचिंग देते हैं और खिलाड़ियों की नीलामी प्रक्रियाओं में भी शामिल रहते हैं। इससे उन्हें इस फॉर्मेट में हो रहे बदलावों और वैश्विक खिलाड़ियों की गहरी समझ है, जो आईपीएल में भी उनके काम आती है। फ्लेमिंग ने पिछले सीजन के प्रदर्शन को स्वीकार करते हुए कहा, पिछले साल हम लय में नहीं थे, ये मैं खुद मानता हूं। लेकिन हमने जल्दी बदलाव किए हैं और अब टीम में कई युवा खिलाड़ी हैं। मुझे इस ग्रुप पर पूरा भरोसा है। हालांकि, इस सीजन में हम इसे अभी तक मैदान पर पूरी तरह दिखा नहीं पाए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि फ्रेंचाइजी ने टीम में युवा खिलाड़ियों को शामिल कर एक नई रणनीति के साथ आगे बढ़ने की कोशिश की है।

अक्सर शांत और सौम्य रहने वाले स्टीफन फ्लेमिंग को बखूबी अंदाजा है कि आजकल उनके बारे में क्या बातें हो रही हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें चेन्नई को रिकॉर्ड पांच आईपीएल ट्रॉफियां जिताने का पर्याप्त श्रेय मिला है, तो उन्होंने विनम्रता, लेकिन दृढ़ता से अपनी बात रखी। फ्लेमिंग ने कहा, नहीं, असल में क्रेडिट मेरा नहीं, सिर्फ खिलाड़ियों का है। उन्होंने आगे कहा, मेरे लिए यह सिर्फ कोचिंग का एक और साल है। हमेशा से ऐसा ही रहा है कि खिलाड़ी ही मैदान पर कमाल करते हैं। मैदान के बाहर कोचिंग जरूरी होती है, लेकिन खिताब मैदान पर प्रदर्शन से जीते जाते हैं। फ्लेमिंग ने एमएस धोनी जैसे दुनिया के सबसे महान कप्तानों में से एक के साथ काम करने को अपना सौभाग्य बताया और कहा कि उन्हें अपने नतीजों पर गर्व है, लेकिन वह तारीफ या वाहवाही पाने के भूखे नहीं हैं।

आईपीएल 2026 : ऑरेंज कैप वैभव सूर्यवंशी को, पर्पल कैप रवि बिश्नोई के नाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 के 16वें मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स ने शुक्रवार 10 अप्रैल को डिफेंडिंग चैंपियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को छह विकेट से हराकर अपनी लगातार चौथी जीत दर्ज की। जयपुर में खेले गए इस रोमांचक मैच में आरसीबी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए बोर्ड पर 201 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया था, जिसे मेजबान राजस्थान ने दो ओवर शेष रहते हुए ही सफलतापूर्वक हासिल कर लिया। राजस्थान की इस शानदार जीत के सूत्रधार युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी और ध्रुव जुरेल रहे, जिन्होंने अपनी ताबड़तोड़ अर्धशतकीय पारियों से टीम को जीत की दहलीज तक पहुंचाया। मैच के हीरो युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी रहे, जिन्होंने महज 26 गेंदों पर 8 चौकों और 7 गगनचुंबी छक्कों की मदद से 78 रनों की तूफानी पारी खेली। इस धमाकेदार प्रदर्शन के साथ ही वैभव ने आईपीएल 2026 की ऑरेंज कैप पर कब्जा जमाया और टूर्नामेंट में 200 रन का आंकड़ा छूने वाले पहले खिलाड़ी बन गए। अभी तक चार मैचों में उनके बल्ले से 50 की औसत और 266.67 के हैरतअंगेज स्ट्राइक रेट के साथ कुल 200 रन निकल चुके हैं। वैभव के साथ ध्रुव जुरेल ने भी 43 गेंदों पर 81 रनों की नाबाद पारी खेलकर टीम की जीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जुरेल की इस पारी ने उन्हें आईपीएल 2026 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले टॉप-5 बल्लेबाजों में जगह दिलाई। दिलचस्प बात यह है कि अब इस लिस्ट के टॉप-3 में राजस्थान रॉयल्स के ही खिलाड़ी शामिल हैं, जिसमें वैभव सूर्यवंशी (200), यशस्वी जायसवाल (183) और ध्रुव जुरेल (176) शामिल हैं। इनके अलावा दिल्ली कैपिटल्स के समीर रिजवी (160) और कोलकाता नाइट राइडर्स के अंगकृश रघुवंशी (155) भी टॉप-5 में शामिल हैं। आरसीबी की ओर से कप्तान रजत पाटीदार ने 40 गेंदों पर सर्वाधिक 63 रन बनाए, जबकि विराट कोहली ने भी 200 के स्ट्राइक रेट से 32 रनों की तेजतर्रार पारी खेली। पाटीदार 142 रनों के साथ सातवें और कोहली 129 रनों के साथ आठवें पायदान पर हैं। ऑरेंज कैप की तरह ही, पर्पल कैप भी इस समय राजस्थान रॉयल्स के नाम है, जिसे युवा लेग स्पिनर रवि बिश्नोई ने अपने नाम किया है। बिश्नोई ने अभी तक चार मैचों में 9 विकेट चटकाए हैं और बेंगलुरु के खिलाफ भी उन्होंने दो महत्वपूर्ण विकेट हासिल किए।

मुंबई इंडियंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के बीच मुकाबला आज

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल -2026 में रविवार शाम को वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई इंडियंस (MI) और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (RCB) से होगा मुकाबला होगा। आईपीएल की दो सबसे पॉपुलर टीमों के बीच अब तक कुल 34 मुक़ाबले हुए हैं, जिसमें MI 19-15 से आगे है। हालांकि 2021 से हुए सात मुक़ाबलों में RCB की टीम ने पांच मुक़ाबले जीते हैं, जबकि MI को सिर्फ़ दो में ही जीत हासिल की है। वानखेड़े में हुए 12 मुक़ाबलों में मेज़बान MI 8-4 से आगे है।

यह मुक़ाबला ना सिर्फ़ दो पॉपुलर टीमों बल्कि लीग के दो सबसे सफल दिग्गज खिलाड़ियों के बीच भी होगा। RCB और MI के बीच हुए मैचों में विराट कोहली 922, जबकि रोहित शर्मा 629 रन बना चुके हैं। पिछली छह पारियों में कोहली ने MI के ख़िलाफ़ चार बार 40+ का स्कोर खड़ा किया है, जबकि वानखेड़े में रोहित, RCB के ख़िलाफ़ चार अर्धशतक लगा चुके हैं।

जॉश हेज़लवुड, रोहित को सात पारियों में सिर्फ़ एक बार आउट कर पाए हैं, हालांकि रोहित का उनके ख़िलाफ़ स्ट्राइक रेट सिर्फ़ 116 का है। वहीं भुवनेश्वर कुमार भी रोहित को 16 पारियों में सिर्फ़ एक बार आउट किया है, जबकि रोहित उन पर 136 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं। वहीं अगर कोहली की बात की जाए तो जसप्रीत बुमराह ने उन्हें पांच बार आउट तो किया है, लेकिन इसके लिए उन्होंने 17 पारियां ले ली हैं और 149 के स्ट्राइक रेट से रन ख़र्च किए हैं। ट्रेंट बोल्ट तो कोहली को 13 पारियों में सिर्फ़ एक बार आउट कर पाए हैं। मिचेल सैंटनर और हार्दिक पंड्या ने कोहली को 2-2 बार आउट तो किया है, लेकिन इसके लिए क्रमशः नौ और 10 पारियां ली हैं। वहीं दीपक चाहर और शार्दुल ठाकुर उन्हें सिर्फ़ एक-एक ही बार आउट कर पाए हैं।

डेथ ओवरों (17 से 20) में MIके निचले क्रम का सामना भुवनेश्वर कुमार से हो सकता है। भुवनेश्वर तिलक वर्मा और हार्दिक पंड्या दोनों को IPL में दो-दो बार आउट कर चुके हैं। हालांकि चार पारियों में दो बार आउट होने वाले तिलक उन पर 173 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं।

वहीं दूसरी ओर बुमराह के सामने RCB के लिए MI के पूर्व फ़िनिशर टिम डेविड होंगे। IPL 2025 से डेविड डेथ ओवरों में 237 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं और हर तीसरी गेंद को बाउंड्री पार भेजते हैं। हालांकि बुमराह इसी दौरान डेथ ओवरों में सिर्फ़ 7.8 की इकॉनमी से रन देते हुए 15 के स्ट्राइक रेट से छह विकेट झटक चुके हैं। ऐसे में बुमराह बनाम डेविड मुक़ाबला भी दिलचस्प होगा।

इस मुक़ाबले में दो भाईयों की भिड़ंत भी देखना दिलचस्प होगा। एक समय MI का अहम हिस्सा रहे क्रुणाल पंड्या पिछले साल अपने प्लेयर ऑफ़ द फ़ाइनल के प्रदर्शन से RCB को उनका पहला ख़िताब दिला चुके हैं। क्रुणाल ने MIके ख़िलाफ़ सात पारियों में 72 रन बनाने के साथ-साथ आठ विकेट भी लिए हैं। वहीं हार्दिक पंड्या RCB के ख़िलाफ़ 164 के स्ट्राइक रेट से 18 पारियों में 361 रन बना चुके हैं, साथ ही सात विकेट भी लिया है। हार्दिक ने क्रुणाल की गेंदबाज़ी का पांच पारियों में सामना किया है और उनके ख़िलाफ़ 31 गेंदों में एक बार आउट होते हुए सिर्फ़ 29 रन ही बना पाए हैं।

मुकुल चौधरी एक बेहतरीन फिनिशर नजर आ रहे : डु प्लेसिस

जोहांसबर्ग । दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान फाफ डु प्लेसिस ने लखनऊ सुपर जायंट्स के युवा बल्लेबाज मुकुल चौधरी की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह अपनी बल्लेबाजी से एक बेहतरीन फिनिशर नजर आ रहे हैंहै। डु प्लेसिस के अनुसार जिस प्रकार से वह आक्रामक होकर अंतिम ओवरों में खेलता दिखा इससे अंदाज होता है कि वह भविष्य में एक स्टार क्रिकेटर बनकर उभरेगा।मुकुल ने ईडन गार्डन्स में 27 गेंदों पर ही सात छक्के और दो चौके लगार नाबाद 54 रन बनाकर अपनी टीम सुपर जायंट्स को असंभव सी जीत दिला दी। डु प्लेसिस ने कहा, मैच को अंतिम गेंद ले जाने की उनकी समझ जबरदस्त दिखी। इस युवा खिलाड़ी में जबरदस्त ताकत और क्षमता है और उसकी बल्लेबाज का अंदाज देखकर हैरानी होती है। साथ ही कहा कि उसके कुछ स्ट्रोक देखकर मुझे महेन्द्र सिंह धोनी के शुरुआत दिनों का खेल याद आ गया। उसके फिलक शॉट्स कमाल के रहे। प्लेसिस ने बताया कि केकेआर टीम को इस बार भाग्य का साथ भी नहीं मिलता दिख रहा है। डु प्लेसिस ने कहा, सीजन में कुछ ऐसे छोटे-छोटे पल आते हैं जो निर्णायक साबित हो सकते हैं, जब आप पीछे मुड़कर देखते हैं तो सोचते हैं कि अगर वो पल हमारे पक्ष में गया होता, तो सीजन का नजारा कुछ और ही होता। केकेआर ने अभी तक एक भी मैच नहीं जीता है और इस समय कठिन स्थिति में है।

ऋषभ कप्तान के तौर पर जिम्मेदारी से खेलें : कैफ

नई दिल्ली । पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद कैफ ने कहा है लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान ऋषभ पंत को अब जिम्मेदारी से खेलना होगा। कैफ के अनुसार कप्तान होने के नाते उन्हें अच्छी बल्लेबाजी करनी होगी , तभी वह टीम के अन्य खिलाड़ियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित कर पायेंगे। कैफ के अनुसार वह अब सीनियर खिलाड़ी हैं और उन्हें कठिन हालातों में अंत तक टिके रहना चाहिये। वह इस सत्र में अभी तक केवल एक मैचम में ही अच्छी पारी खेल पाये हैं। इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि उन्हें अपनी खेल की समझ में सुधार करते हुए लगातार अच्छे परिणामों के लिए जिम्मेदारी से खेलना होगा। सुपरजायंट्स को कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करते हुए कड़े संघर्ष के बाद जीत मिली पर कप्तान केवल केवल 10 रन बना पाए थे और उनके शीर्ष क्रम के अन्य बल्लेबाज भी असफल रहे। नये बल्लेबाज मुकुल चौधरी के नाबाद 54 रन की सहायता से सुपरजायंट्स ने ये मैच किसी प्राकर से जीता। इस दौरान देखा गया कि कप्तान के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी रही। कैफ ने कहा, टीम की हालत को देखते हुए उन्हें अंत तक खेलते रहना चाहिये। वह अनुभवी खिलाड़ी हैं, और पिछले एक दशक से खेल रहे हैं। केकेआर के खिलाफ जब वह बल्लेबाजी करने आए तो स्थिति कठिन नहीं थी। उस समय टीम ने पहले पांच ओवरों में ही 40 से अधिक रन बना लिए थे। ऐसे में किसी एक बल्लेबाज को जिम्मेदारी लेनी थी और अंत तक बल्लेबाजी करनी थी। यह भूमिका कप्तान को निभानी चाहिए थी। उन्होंने साथ ही कहा, कप्तान होने के नाते अगर आप जिम्मेदारी नहीं लेते हैं, तो आप अपनी टीम को मैच में जीत नहीं दिला सकते। उन्होंने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन किया था लेकिन उन्हें निरंतरता बनाए रखने की जरूरत है। उन्हें मैच के हालातों के अनुसार और खेलते हुए ये सीखना होगा कि कब कैसी रणनीति अपनाने की जरुरत है। कैफ ने कहा, एक कप्तान का काम होता है कि वह लक्ष्य का पीछा करते हुए अंत तक खेलता रहे।

रवींद्र जडेजा ने रचा इतिहास: टी20 क्रिकेट में 4000 रन और 200 विकेट लेने वाले दूसरे भारतीय बने

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2026 के 16वें मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स (आरआर) और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के बीच बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मैच में राजस्थान रॉयल्स के स्टार ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस मुकाबले में जडेजा ने टी20 क्रिकेट में अपने 4000 रन पूरे किए और इसी के साथ वह टी20 फॉर्मेट में 4000 रन और 200 विकेट लेने वाले दूसरे भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। उनसे पहले यह उपलब्धि सिर्फ हार्दिक पांड्या ही हासिल कर पाए हैं। वैश्विक स्तर पर, जडेजा यह खास उपलब्धि हासिल करने वाले दुनिया के 25वें खिलाड़ी बन गए हैं, जो उनकी ऑलराउंड क्षमता को दर्शाता है। इस मैच में जडेजा ने गेंदबाजी में भी बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 2 ओवर के स्पेल में सिर्फ 14 रन खर्च किए और रोमारियो शेफर्ड का महत्वपूर्ण विकेट अपने नाम किया।

मैच की बात करें तो, राजस्थान रॉयल्स ने आरसीबी से मिले 202 रनों के विशाल लक्ष्य को 6 विकेट से अपने नाम किया। आरसीबी द्वारा निर्धारित 201 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी राजस्थान की शुरुआत हालांकि खराब रही, जब यशस्वी जायसवाल मात्र 13 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। लेकिन इसके बाद वैभव सूर्यवंशी और ध्रुव जुरेल ने अपनी तूफानी बल्लेबाजी से फैंस का दिल जीत लिया। 15 साल के वैभव ने 300 के स्ट्राइक रेट से खेलते हुए सिर्फ 26 गेंदों में 78 रनों की विस्फोटक पारी खेली, जिसमें 8 चौके और 7 गगनचुंबी छक्के शामिल थे। वैभव के आगे आरसीबी के गेंदबाज बेबस नजर आए। वहीं, ध्रुव जुरेल ने भी अर्धशतकीय पारी खेलते हुए एक छोर संभाले रखा और नाबाद 81 रन बनाकर टीम को जीत तक पहुंचाया।

इससे पहले, आरसीबी ने 20 ओवर में 8 विकेट गंवाकर 201 रन बनाए थे। टॉप ऑर्डर के फ्लॉप होने के बाद कप्तान रजत पाटीदार ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 40 गेंदों में 63 रन बनाए, जिसमें 4 चौके और 4 छक्के शामिल थे। विराट कोहली अच्छी शुरुआत का फायदा नहीं उठा सके और 16 गेंदों में 32 रन बनाकर आउट हुए। वेंकटेश अय्यर ने 15 गेंदों में नाबाद 29 रन और रोमारियो शेफर्ड ने 22 रनों का योगदान दिया। यह इस सीजन में आरसीबी की पहली हार है, जबकि राजस्थान रॉयल्स ने लगातार चौथी जीत दर्ज करते हुए टूर्नामेंट में अपना विजयी अभियान जारी रखा है।

आईपीएल में खरीददार न मिलने पर राइली रुसो का बड़ा बयान, आईपीएल को बताया फिल्म

नई दिल्ली । दक्षिण अफ्रीका के विस्फोटक बल्लेबाज राइली रुसो ने आईपीएल को लेकर एक विवादास्पद बयान दिया है, जिसमें उन्होंने इस लीग को क्रिकेट कम और फिल्म ज्यादा बताया है, जबकि पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) की जमकर तारीफ की है। यह बयान तब आया है जब आईपीएल 2026 की नीलामी में उन्हें कोई खरीददार नहीं मिला और उन्होंने खुद इस साल नीलामी के लिए अपना नाम नहीं भेजा था। रुसो का यह रुख क्रिकेट प्रेमियों के बीच चर्चा का विषय बन गया है, खासकर उनके आईपीएल के साथ पुराने जुड़ाव को देखते हुए।

राइली रुसो का आईपीएल से रिश्ता पुराना रहा है। उन्होंने 2014 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के साथ अपने आईपीएल करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद वह दिल्ली कैपिटल्स और पंजाब किंग्स जैसी टीमों का भी हिस्सा रहे। हालांकि, वह इस लीग में कभी अपनी छाप नहीं छोड़ पाए और उनका प्रदर्शन उम्मीदों के मुताबिक नहीं रहा। आईपीएल 2023 में दिल्ली कैपिटल्स ने उन्हें 4.60 करोड़ रुपये में खरीदा था, जबकि आईपीएल 2024 में पंजाब किंग्स ने उन पर 8 करोड़ रुपये खर्च किए थे। बावजूद इसके, खराब प्रदर्शन के चलते पंजाब किंग्स ने उन्हें रिलीज कर दिया, और इसके बाद उन्हें अगले साल की नीलामी में कोई खरीददार नहीं मिला। अब वह पीएसएल में क्वेटा ग्लेडिएटर्स के लिए खेल रहे हैं। रुसो ने आईपीएल और पीएसएल की तुलना करते हुए कहा, दोनों लीग के अपने-अपने फायदे और नुकसान हैं। आईपीएल एक बहुत लंबा टूर्नामेंट है, जबकि पीएसएल एक ज्यादा छोटा टूर्नामेंट है, जहाँ मुकाबला कहीं ज्यादा कड़ा होता है। उन्होंने आईपीएल पर तंज कसते हुए कहा, जाहिर है, आईपीएल को पूरे बॉलीवुड का समर्थन हासिल है, इसलिए यह असल क्रिकेट से ज्यादा एक फिल्म जैसा लगता है। यह टिप्पणी आईपीएल के ग्लैमर और उसके व्यापक प्रचार-प्रसार पर एक सीधा हमला है। उनके आईपीएल रिकॉर्ड की बात करें तो, रुसो ने कुल 22 मैच खेले हैं, जिनमें उन्होंने 23.65 की औसत से 473 रन बनाए हैं। इन आंकड़ों में कोई शतक शामिल नहीं है, और केवल कुछ ही अर्धशतक हैं, जो दर्शाता है कि वह आईपीएल में बड़े स्कोर बनाने में संघर्ष करते रहे हैं। एक समय आईपीएल टीमों द्वारा उन पर भारी-भरकम रकम खर्च की जा रही थी, तब उन्हें इस रंगारंग लीग से कोई दिक्कत नहीं थी। लेकिन जब उनकी परफॉर्मेंस में गिरावट आई और टीमों ने उनसे दूरी बनाना शुरू कर दी, तो उनका यह बयान सामने आया है, जो उनकी निराशा को उजागर करता है और क्रिकेट जगत में एक नई बहस छेड़ सकता है।

वैभव सूर्यवंशी के इंडिया डेब्यू की जोरदार मांग, क्या टूटेगा सचिन का रिकॉर्ड

नई दिल्ली(एजेंसी)। क्रिकेट जगत में इन दिनों 15 वर्षीय युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी का नाम हर किसी की जुबान पर है। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अपने धमाकेदार प्रदर्शन से उन्होंने न केवल सबको चौंका दिया है, बल्कि टीम इंडिया में उनके डेब्यू को लेकर भी जोरदार बहस छिड़ गई है। उनकी असाधारण प्रतिभा को देखते हुए, ऐसी संभावना जताई जा रही है कि वे महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर का भारत के लिए सबसे कम उम्र में अंतरराष्ट्रीय डेब्यू करने का रिकॉर्ड तोड़ सकते हैं। सचिन ने 16 साल और 205 दिन की उम्र में भारत के लिए पदार्पण किया था।

आईपीएल के मौजूदा सीज़न में, राजस्थान रॉयल्स का हिस्सा रहे वैभव ने सिर्फ चार मैचों में 266.66 के अद्भुत स्ट्राइक रेट से 200 रन बनाए हैं, जिसमें दो ताबड़तोड़ अर्धशतक शामिल हैं। हाल ही में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ हुए मुकाबले में, उन्होंने अपनी बल्लेबाजी का लोहा मनवाया। 26 गेंदों में 8 चौकों और 7 छक्कों की मदद से 78 रनों की तूफानी पारी खेलकर उन्होंने 202 रनों का लक्ष्य दो ओवर शेष रहते हासिल करने में अपनी टीम की मदद की। इस यादगार प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया।

वैभव की इस शानदार फॉर्म से प्रभावित होकर, आईपीएल चेयरमैन अरुण धूमल ने उन्हें टीम इंडिया में डेब्यू का प्रबल दावेदार बताया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि वैभव जैसा प्रतिभाशाली खिलाड़ी, इतनी कम उम्र में, भारत के लिए सबसे कम उम्र में डेब्यू करने का हकदार है। धूमल ने जोर देकर कहा कि ऐसे दुर्लभ मौके को भुनाना चाहिए। धूमल की इस पोस्ट पर प्रशंसकों की भी जबरदस्त प्रतिक्रिया देखने को मिली, जिसमें कई यूजर्स ने वैभव को अविश्वसनीय टैलेंट करार देते हुए उनके तत्काल डेब्यू की वकालत की।

यह उल्लेखनीय है कि 15 वर्षीय वैभव अब सीनियर पुरुष टीम के लिए खेलने के पात्र हो चुके हैं। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने अंडर-19 टीम में भी अपना जलवा दिखाया है, जहां उन्होंने वर्ल्ड कप फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ 175 रन की एक शानदार पारी खेली थी। आईपीएल में, वे जसप्रीत बुमराह जैसे दिग्गज गेंदबाजों को भी चुनौती देने से नहीं हिचकिचाते। हाल ही में उन्होंने आरसीबी के अनुभवी तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की गेंदों पर लगातार तीन चौके जड़कर अपनी निर्भीक बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया। सामान्य तौर पर जहां 200 के स्ट्राइक रेट को बेहतरीन माना जाता है, वहीं वैभव ने कई बार 300 से अधिक के स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं। उनकी बल्लेबाजी देखकर ऐसा लगता है कि वह सिर्फ रिकॉर्ड बनाने नहीं, बल्कि क्रिकेट में आक्रामक बल्लेबाजी की एक नई परिभाषा गढ़ने आए हैं। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) पर अब दबाव बढ़ रहा है कि वे इस युवा सनसनी को जल्द से जल्द अंतरराष्ट्रीय मंच पर मौका दें।

हॉकी इंडिया सब जूनियर नेशनल चैंपियनशिप 2026 : राजगीर में महिला व पुरुष वर्ग के फाइनल तय

राजगीर । बिहार/ बिहार के राजगीर में चल रही हॉकी इंडिया सब जूनियर नेशनल चैंपियनशिप 2026 का रोमांच अपने चरम पर पहुँच गया है। डिवीजन ए में पुरुष और महिला वर्ग के फाइनल मुकाबले तय हो चुके हैं, जिससे खिताब के लिए रोमांचक जंग की उम्मीद बढ़ गई है। सभी मुकाबले 12 अप्रैल को राजगीर हॉकी स्टेडियम में खेले जाएंगे। पुरुष वर्ग के फाइनल में हॉकी मध्य प्रदेश का सामना हॉकी उत्तर प्रदेश से होगा, जबकि महिलाओं के फाइनल में हॉकी मध्य प्रदेश की टीम गत चैंपियन हॉकी झारखंड से भिड़ेगी। इन मुख्य मुकाबलों के अतिरिक्त, तीसरे स्थान के लिए भी दिलचस्प मैच खेले जाएंगे। महिलाओं के वर्ग में हॉकी ओड़िशा और हॉकी उत्तर प्रदेश कांस्य पदक के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी, वहीं पुरुषों में दादरा और नागर हवेली और दमन और दीव हॉकी का मुकाबला हॉकी पंजाब से होगा। सेमीफाइनल मुकाबलों की बात करें तो, पुरुष वर्ग में मध्य प्रदेश ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दादरा और नगर हवेली व दमन और दीव को 4-2 से मात देकर फाइनल में जगह बनाई। दूसरी ओर, हॉकी उत्तर प्रदेश ने एक कड़े मुकाबले में पिछले साल के चैंपियन पंजाब को 6-2 से करारी शिकस्त दी। यह मुकाबला पिछले साल के तीसरे स्थान के मैच का रीमैच भी था, जिसमें यूपी ने जीत दर्ज की थी। इस बार उत्तर प्रदेश के खिलाड़ी गोल स्कोरिंग में भी आगे रहे हैं, जहाँ शाहरुख अली 14 गोल के साथ टूर्नामेंट के शीर्ष स्कोरर बने हुए हैं। उनके साथी खिलाड़ी नीतीश यादव ने अपने सभी गोल पेनल्टी कॉर्नर से दागे हैं, जबकि दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव के धीरज पाल भी पांच गोल के साथ प्रभावशाली खिलाड़ियों में शामिल हैं। महिला वर्ग में भी मुकाबला बेहद रोमांचक होने की उम्मीद है। मध्य प्रदेश और झारखंड दोनों ही टीमों ने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए फाइनल में प्रवेश किया है।

'सैयारा' के बाद इस फिल्म में नजर आएंगे अहान पांडे, अली अब्बास जफर करेंगे निर्देशन

'सैयारा' फेम एक्टर अहान पांडे एक एक्शन-रोमांटिक फिल्म में नजर आएंगे। आज अली अब्बास जफर ने इसकी आधिकारिक घोषणा करते हुए फिल्म से अहान पांडे का पहला लुक शेयर किया है, जिस पर फैंस दिल हार बैठे हैं।

शूटिंग हुई शुरू

अहान पांडे की इस फिल्म की शूटिंग आज से आधिकारिक तौर पर शुरू हो गई है। जल्द ही मुख्य अभिनेत्री और आधिकारिक शीर्षक की घोषणा की जाएगी। फिल्म का निर्माण वाईआरएफ कर रहा है। इसकी शूटिंग मुंबई और विदेशों में होगी। इस फिल्म के निर्देशक अली अब्बास जफर ने इंस्टाग्राम पर अहान की एक खास तस्वीर शेयर की और लिखा, 'और शुरू हो गई...' अहान पांडे की इस फिल्म के निर्देशक अली अब्बास जफर ने इंस्टाग्राम पर दो तस्वीरें शेयर की हैं। पहली तस्वीर अहान पांडे की है। इस तस्वीर में अहान के चेहरे का कुछ हिस्सा साफ नजर आ रहा है, क्योंकि बाकी की तस्वीर धुंधली है। छोटे बाल में अहान का यह लुक कमाल का लग रहा है।

सेलेब्स और फैंस के कमेंट्स

अहान की इस दूसरी फिल्म के पहले लुक ने सेलेब्स और फैंस का दिल जीत लिया है। अभिनेता अर्जुन कपूर ने लिखा, 'मास' और साथ ही फायर इमोजी बनाया है। टीवी अभिनेता हितेन तेजवानी ने लिखा, 'बधाई हो अली सर', अहान की मां डीन ने लिखा, 'पूरी टीम को शुभकामनाएं', रजत बेदी ने लिखा, 'बधाई हो अली भाई', एक फैन ने लिखा, 'बहुत ज्यादा उत्साहित हूं', दूसरे फैन ने लिखा, 'अहान तुम कमाल कर दोगे', वहीं कई फैंस अहान के इस लुक की जमकर तारीफ कर रहे हैं।

अली और आदित्य की जोड़ी

'सैयारा' जैसी लव स्टोरी करने के बाद अब एक्शन-रोमांस फिल्म में आहान को एक बिल्कुल नए अंदाज में नजर आएंगे। यह फिल्म आदित्य चोपड़ा और अली अब्बास जफर की पांचवीं फिल्म है, जिनकी जोड़ी ने 'मेरे ब्रदर की दुल्हन', 'गुंडे', 'सुल्तान' और 'टाइगर जिंदा है' जैसी हिट फिल्में दी हैं।

जान्हवी कपूर ने अपने बॉयफ्रेंड के बारे में की खुलकर बातचीत

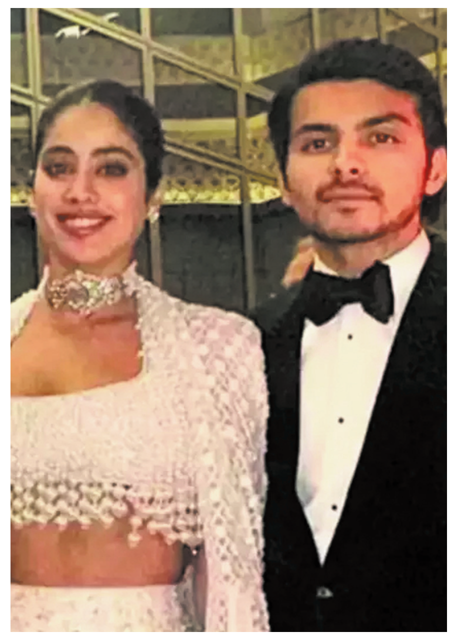

जान्हवी कपूर हाल ही में 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' फिल्म में नजर आईं थी। इनमें उनके साथ वरुण धवन, रोहित शरफ और सान्या मल्होत्रा भी अहम किरदार में नजर आए थे। राज शमानी को दिए इंटर्व्यू में जान्हवी कपूर ने अपने बॉयफ्रेंड के बारे में खुलकर बातचीत की, और बताया कि उन्हें बॉयफ्रेंड के साथ कितना सुरक्षित और अपनापन महसूस होता है।

कौन हैं जान्हवी कपूर के बॉयफ्रेंड?

जान्हवी कपूर और शिखर पहाड़िया एक दूसरे को काफी वक्त से डेट कर रहे हैं। वे अक्सर पार्टी, फैमिली फंक्शन और इवेंट्स में साथ नजर आते हैं। हाल ही में राज शमानी के साथ पॉडकास्ट में उन्होंने अपने रिलेशनशिप के बारे में खुलकर चर्चा की। उनके साथ मैं बिल्कुल बच्चे जैसी बन जाती हूं जान्हवी ने शिखर के बारे में बात करते हुए कहा, 'प्यार की वजह से मैं उनके साथ खुद का सबसे सच्चा वर्जन बन पाती हूं। मुझे एक ऐसा सुरक्षित एहसास मिला है, जहां मैं अपने दिल की बात सुन सकती हूं और उस पर भरोसा कर सकती हूं। उनकी मौजूदगी हमेशा मुझे यही एहसास देती है।' उन्होंने आगे कहा, 'उनके साथ मैं बिल्कुल बच्चे जैसी बन जाती हूं। यह एक ऐसी जगह है जहां मैं बिना किसी झिझक के खुद रह सकती हूं। उनके साथ मुझे सबसे ज्यादा मजा आता है।'

शिखर पहाड़िया के बारे में

शिखर पहाड़िया, पूर्व गृह मंत्री सुशीलकुमार शिंदे के नाती हैं। उनकी मां स्मृति शिंदे एक एक्ट्रेस हैं। उनके बड़े भाई वीर पहाड़िया ने हाल ही में फिल्म स्काई फोर्स से बॉलीवुड डेब्यू किया, जिसमें अक्षय कुमार, निम्रत कौर और सारा अली खान भी नजर आए।

जान्हवी कपूर का अगला प्रोजेक्ट

वर्क फ्रंट की बात करें तो जान्हवी कपूर जल्द ही लक्ष्य और टाइगर श्रोफ के साथ धर्मा प्रोडक्शंस की अगली एक्शन फिल्म 'लग जा गले' में नजर आ सकती हैं। खबरों के मुताबिक, इस फिल्म की शूटिंग पिछले महीने मुंबई में शुरू हो चुकी है, जिसे राज मेहता डायरेक्ट कर रहे हैं।

पृथ्वीराज ने पूरी की 'वाराणसी' की शूटिंग

अभिनेता पृथ्वीराज सुकुमारन ने एसएस राजामौली की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'वाराणसी' की शूटिंग का एक अहम शेड्यूल पूरा कर लिया है। अभिनेता पृथ्वीराज सुकुमारन ने एसएस राजामौली की आगामी फिल्म 'वाराणसी' की शूटिंग पूरी होने की खुशखबरी दी है। शूटिंग खत्म होने के साथ उन्होंने फिल्म की रिलीज के लिए एक साल की उलटी गिनती भी शुरू कर दी है। पृथ्वीराज ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर सेट से एक चीट मील की तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर के साथ अभिनेता ने लिखा, 'बहुत मेहनत वाले शेड्यूल का आखिरकार अंत हो गया। चीट मील का पूरा मजा लिया।' इसके साथ ही पृथ्वीराज सुकुमारन ने फिल्म के निर्माता केएल नारायण को धन्यवाद दिया। साथ ही उन्होंने फिल्म की रिलीज डेट भी बताई। पृथ्वीराज ने लिखा, '7 अप्रैल 2027 को सिनेमाघरों में मिलते हैं।' फिल्म 'वाराणसी' में महेश बाबू, प्रियंका चोपड़ा और पृथ्वीराज सुकुमारन मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह एक तेलुगु एडवेंचर ड्रामा फिल्म है। इसका निर्देशन एसएस राजामौली ने किया है। फिल्म का बजट 1300 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। फिल्म में महेश बाबू रुद्र और भगवान राम के दोहरे रोल में दिखेंगे। प्रियंका चोपड़ा मंदाकिनी और पृथ्वीराज सुकुमारन कुंभ के रोल में नजर आएंगे।

परिणीति चोपड़ा की नई पारी शुरू, 'मॉम टॉक्स' शो की होस्ट बनीं

परिणीति चोपड़ा ने अपने करियर में एक नया और खास चैप्टर जोड़ते हुए टॉक शो होस्ट के रूप में शुरुआत कर दी है। उनके इस नए सफर पर पति और सांसद राघव चड्ढा ने भी सोशल मीडिया पर इमोशनल नोट शेयर कर उन्हें शुभकामनाएं दी हैं। परिणीति ने हाल ही में अपने टॉक शो 'मॉम टॉक्स' का टीजर जारी किया है। यह शो मातृत्व, प्रेग्नेंसी और बच्चों की परवरिश से जुड़े उन पहलुओं पर आधारित है, जिन पर अक्सर खुलकर बात नहीं की जाती। खास बात यह है कि यह परिणीति का पहला टॉक शो है, जिसमें वह होस्ट की भूमिका में नजर आएंगी। पिछले साल मां बनीं परिणीति इस प्लेटफॉर्म के जरिए अपने अनुभवों के साथ-साथ अन्य लोगों की कहानियां भी सामने लाना चाहती हैं। उनका मानना है कि मातृत्व से जुड़े कई पहलू आज भी समाज में झिझक के साथ देखे जाते हैं। राघव चड्ढा ने उनका हौसला बढ़ाते हुए लिखा, 'बहुत गर्व है। बधाई हो। मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं। यह शो मातृत्व, प्रेग्रेंसी और बच्चों की परवरिश से जुड़े मुद्दों पर केंद्रित होगा

साउथ एक्टर विष्णु विशाल ने सोशल मीडिया से लिया ब्रेक

एक्टर-प्रोड्यूसर विष्णु विशाल ने कई बेहतरीन फिल्में दी हैं। इनमें से कई फिल्में सुपरहिट रही हैं। उन्होंने सोशल मीडिया से कुछ समय के लिए ब्रेक लेने का फैसला किया है। उन्होंने अपने फैंस को भरोसा दिलाया है कि वे जल्द ही अपने आने वाले प्रोजेक्ट्स से जुड़ी नई जानकारियों के साथ वापस लौटेंगे।

विष्णु विशाल ने लिया सोशल मीडिया से ब्रेक

एक्टर ने सोशल मीडिया से ब्रेक लेने वाली जानकारी देते हुए लिखा 'सोशल मीडिया से एक छोटा सा ब्रेक ले रहा हूं। जल्द ही फिल्मों से जुड़ी नई जानकारियों के साथ वापस आऊंगा। एक्टर 'वेनिला कबाड़ी कुझु', 'कुल्नारी कूट्टम', और 'रतसासन' के लिए जाने जाते हैं।

तीसरी बार इस निर्देशक के साथ कर रहे काम

यह घोषणा ऐसे समय में आई है जब रामकुमार के निर्देशन में बन रही उनकी अगली फिल्म 'इरंडु वानम' को लेकर लोगों में काफी उत्सुकता बढ़ रही है। 'मुंडासुपत्ती' और 'रतसासन' की सफलता के बाद, यह जोड़ी तीसरी बार एक-साथ काम कर रही है।

पूरी हुई अपकमिंग फिल्म की शूटिंग

पिछले साल जून में, विष्णु विशाल ने इस बात की पुष्टि की थी कि फिल्म 'इरंडु वानम' की शूटिंग पूरी हो चुकी है। उन्होंने बताया था कि शूटिंग 150 दिनों में पूरी हुई थी। सत्य ज्योति फिल्म्स के बैनर तले बन रही इस फिल्म में मामिता बैजू मुख्य अभिनेत्री के तौर पर नजर आएंगी। फिल्म का पहला लुक पोस्टर, जो पहले ही जारी किया जा चुका है, काफी दिलचस्प है। इसमें दोनों मुख्य कलाकार बादलों पर एक-दूसरे की विपरीत दिशा में बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

विष्णु का वर्कफ्रंट

पिछली बार फिल्म 'आर्यन' में नजर आए विष्णु विशाल के पास अभी 'गट्टा कुश्ती' का सीक्वल भी पाइपलाइन में है, जिसका निर्देशन चेल्ला अय्यावु कर रहे हैं। वहीं, उनकी लंबे समय से अटकी हुई फिल्म 'मोहनदास' अभी तक रिलीज नहीं हो पाई है।

रणवीर सिंह कर सकते हैं चंद्रगुप्त मौर्य पर फिल्म: आदित्य धर के साथ फिर बन सकती है जोड़ी

धुरंधर फ्रैंचाइजी की सफलता के बाद अब सभी की नजर इस बात पर है कि डायरेक्टर आदित्य धर का अगला प्रोजेक्ट कौन सा होगा। एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि आदित्य धर रणवीर सिंह के साथ भी एक प्रोजेक्ट पर विचार कर रहे हैं। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया, आदित्य धर इस समय तीन स्क्रिप्ट पर विचार कर रहे हैं। इनमें द इम्मॉर्टल अश्वत्थामा, एक ऐतिहासिक फिल्म और एक बड़े लेवल की स्पोर्ट्स फिल्म शामिल है। उनकी अगली फिल्म इनमें से कोई एक हो सकती है, जब तक कि कोई नया प्रोजेक्ट प्राथमिकता में न आ जाए। एक सूत्र का कहना है कि द इम्मॉर्टल अश्वत्थामा आदित्य का ड्रीम प्रोजेक्ट रहा है। इस फिल्म पर उन्होंने पहले काफी काम किया था, लेकिन ज्यादा बजट के कारण इसे रोक दिया गया था। अब उनकी सक्सेस और इंडस्ट्री में बढ़ते भरोसे के चलते इस प्रोजेक्ट को फिर से शुरू करने की संभावना बनी हुई है।

चंद्रगुप्त मौर्य पर आधारित फिल्म पर चर्चा

एक अन्य सूत्र के मुताबिक, आदित्य धर चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल पर आधारित ऐतिहासिक फिल्म बनाने में भी दिलचस्पी रखते हैं। इस प्रोजेक्ट को लेकर उनकी रणवीर सिंह के साथ पिछले साल से बातचीत चल रही है। धुरंधर की सफलता के बाद दोनों फिर से इस पर चर्चा कर सकते हैं। सूत्रों के मुताबिक, यह विषय अभी तक ज्यादा एक्सप्लोर नहीं हुआ है और इसमें ड्रामा, एक्शन और पॉलिटिक्स जैसे कई मजबूत एलिमेंट हैं। अगर फिल्म अश्वत्थामा नहीं बनती, तो यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ सकता है। इसके अलावा, एक स्पोर्ट्स ड्रामा भी शुरुआती स्टेज में है, जो बड़े लेवल पर बनाया जा सकता है। हालांकि इसकी जानकारी अभी साफ नहीं है।

कहा जा रहा है कि डायरेक्टर के पास कई प्रोजेक्ट्स के विकल्प मौजूद हैं, लेकिन वे एक ब्रेक के बाद ही अगले प्रोजेक्ट पर आगे बढ़ेंगे। डायरेक्टर ने पिछले तीन साल रणवीर सिंह के साथ 'धुरंधर' फ्रैंचाइजी पर काम करते हुए बिताए हैं। इसलिए, अब वे कुछ समय का ब्रेक लेंगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक, एक बात पक्की है कि आदित्य धर की अगली फिल्म और बड़े कैनवास पर बनने वाली है। रिपोर्ट के अनुसार, आदित्य धर एक बार फिर रणवीर के साथ काम करने के इच्छुक हैं। इस बार वे मौर्य साम्राज्य के संस्थापक पर आधारित एक ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म पर काम करेंगे। आदित्य धर पिछले साल से ही रणवीर के साथ बातचीत कर रहे हैं।

क्यों रुका 'द इमॉर्टल अश्वत्थामा' पर काम

बात करें 'द इमॉर्टल अश्वत्थामा' की तो यह आधित्य धर के उन पैशन प्रोजेक्ट्स में से एक है, जिसे कथित तौर पर बजट संबंधी दिक्कतों के चलते कुछ समय के लिए रोक दिया गया था। हालांकि, 'धुरंधर' से अच्छी-खासी कमाई के बाद इस फिल्म पर फिर से काम शुरू होने की संभावना बन गई है। लेकिन, अगर इसे हरी झंडी नहीं मिलती है, तो कहा जा रहा है कि यह ऐतिहासिक ड्रामा ही आदित्य धर का अगला प्रोजेक्ट है। इसके अलावा, ऐसी भी चर्चा है कि आदित्य धर एक स्पोर्ट्स ड्रामा पर भी काम कर रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

उत्तर कोरिया और चीन के विदेश मंत्रियों के बीच वार्ता, सहयोग को और बढ़ाने पर बनी सहमति

प्योंगयांग, एजेंसी। उत्तर कोरिया और चीन के विदेश मंत्रियों ने अपने देशों के बीच सहयोग और आदान-प्रदान को और गहरा करने पर सहमति व्यक्त की। दोनों विदेश मंत्रियों ने अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर गहन चर्चा की, दोनों देशों के सरकारी मीडिया आउटलेट्स ने शुक्रवार को यह जानकारी दी चीन के विदेश मंत्री वांग यी सात साल में पहली बार उत्तर कोरिया की यात्रा पर गुरुवार को प्योंगयांग के लिए रवाना हुए। चीन की समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने बताया कि वांग और उत्तर कोरिया के विदेश मंत्री चो सोन हुई ने अपनी मुलाकात में मौजूदा अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया कि वे मुद्दे क्या थे।

आव्रजन बोर्ड ने खारिज की फलस्तीनी एक्टिविस्ट महमूद खलील की अपील, निर्वासन की ओर बड़ा कदम

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में एक आव्रजन अपील बोर्ड ने महमूद खलील की निर्वासन मामले को खारिज करने की नवीनतम याचिका को अस्वीकार कर दिया है। यह एक ऐसा फैसला है जिसकी काफी हद तक उम्मीद थी और जो कोलंबिया विश्वविद्यालय के पूर्व स्नातक छात्र और फलस्तीनी कार्यकर्ता को पुनः गिरफ्तारी और संभावित निष्कासन के एक कदम और करीब ले आता। खलील के वकीलों के अनुसार, आव्रजन अपील बोर्ड ने गुरुवार को निष्कासन का अंतिम आदेश जारी किया। बोर्ड के फैसले सार्वजनिक नहीं हैं और अमेरिकी न्याय विभाग से इस संबंध में की गई पूछताछ का तत्काल कोई जवाब नहीं मिला।

कैलिफोर्निया : बेदखली का नोटिस देते समय शेरिफ के एक डिप्टी की हत्या

सैकरामेंटो, एजेंसी। बेदखली का नोटिस तामील कर रहे पुलिस अधिकारी की एक व्यक्ति ने मध्य कैलिफोर्निया में गोली मारकर हत्या कर दी। मरने वाला पुलिस अधिकारी एक शेरिफ का डिप्टी था। वहीं, घंटों तक चले गतिरोध के बाद अधिकारियों ने उस शख्स को मार गिराया। तुलारे काउंटी के डिप्टी पोर्टरविले में एक घर में बेदखली का नोटिस देने गए थे, तभी एक 60 वर्षीय व्यक्ति ने उन पर गोली चला दी, शेरिफ विभाग ने फेसबुक पर यह जानकारी दी। वह व्यक्ति कई घंटों तक राइफल लेकर घर के अंदर छिपा रहा। एक समय ऐसा भी आया जब उस व्यक्ति द्वारा पुलिसकर्मियों पर लगातार गोलीबारी करने पर अधिकारियों ने घर में गैस छोड़ी।

संयुक्त राष्ट्र की समिति में तीन साल के नए कार्यकाल के लिए फिर से चुनी गईं राजदूत प्रीति सरन

वाशिंगटन, एजेंसी। अनुभवी राजनयिक प्रीति सरन को जटिल वैश्विक सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के माध्यम से इस संस्था का नेतृत्व करने में उनकी विशेषज्ञता को देखते हुए 2027 से शुरू होने वाले तीन साल के नए कार्यकाल के लिए प्रतिष्ठित संयुक्त राष्ट्र आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार समिति (सीईएससीआर) में फिर से चुना गया है। राजदूत सरन वर्तमान में सीईएससीआर के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं, जो संयुक्त राष्ट्र की वह संस्था है जो इस बात की निगरानी के लिए जिम्मेदार है कि सदस्य देश आर्थिक और सामाजिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय समझौतों को कैसे लागू करते हैं। सीईएससीआर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के प्रशासनिक नियंत्रण में काम करता है।

एरिजोना के छोटे हवाई अड्डे पर विमान दुर्घटना, दो की मौत

फीनिक्स, एजेंसी। एरिजोना के एक छोटे हवाई अड्डे पर विमान दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गई। माराना के मेयर जॉन पोस्ट ने बताया कि विमान हवाई पट्टी से बाहर चला गया और उसमें आग लग गई। शहर के प्रवक्ता विक हॅथवे ने कहा, विमान में दो लोग सवार थे, जिनकी मौत हो गई। उनकी पहचान नहीं हुई है। माराना पुलिस विभाग ने बताया कि दुर्घटना में कोई अन्य चोटिल नहीं हुआ। नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड (एनटीएसबी) दुर्घटना के कारण की जांच कर रहा है।

सूडान के दारफुर में शादी समारोह में ड्रोन हमला, 30 लोगों की मौत

दारफुर , एजेंसी। सूडान के दारफुर क्षेत्र के एक कस्बे में शादी समारोह पर हुए ड्रोन हमले में महिलाओं और बच्चों सहित कम से कम 30 नागरिकों की मौत हो गई। संयुक्त राष्ट्र ने गुरुवार को यह जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने बताया कि यह हमला उत्तर दारफुर के कुतुम कस्बे में आयोजित एक विवाह समारोह को निशाना बनाकर किया गया। यह हमला सूडानी सेना और अर्धसैनिक बल रैपिड सपोर्ट फोर्सेज के बीच चल रहे संघर्ष के दौरान ड्रोन हमलों में आई तेजी के बीच हुआ है।

नेतन्याहू की धमकी से बैकफुट पर पाकिस्तान, इजरायल विरोधी पोस्ट डिलीट कर भागे ख्वाजा आसिफ

इस्लामाबाद , एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच शुक्रवार को इस्लामाबाद में होने वाली ऐतिहासिक शांति वार्ता से ठीक पहले एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ द्वारा इजरायल के खिलाफ की गई तीखी टिप्पणियों ने न केवल दोनों देशों के बीच तनाव पैदा कर दिया है, बल्कि इस महत्वपूर्ण वार्ता में पाकिस्तान की तटस्थ मध्यस्थ वाली छवि पर भी गंभीर सवालिया निशान लगा दिए हैं। इजरायल ने पाकिस्तान की भूमिका पर कड़ा ऐतराज जताते हुए इसे असहनीय करार दिया है। इसके बाद रक्षा मंत्री को अपना पोस्ट डिलीट करना पड़ गया है। विवाद तब शुरू हुआ जब पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इजरायल को मानवता के लिए अभिशाप और कैंसर बताते हुए लेबनान में नरसंहार करने का आरोप लगाया। हालांकि, इजरायल की फटकार के बाद उन्होंने यह पोस्ट डिलीट कर दी, लेकिन तब तक कूटनीतिक नुकसान हो चुका था।

नेतन्याहू ने हड़काया : इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने आसिफ के बयानों को अपमानजनक बताया। इजरायल ने कहा कि एक तरफ पाकिस्तान खुद को शांति प्रयासों में एक तटस्थ खिलाड़ी के रूप में पेश कर रहा है और दूसरी तरफ इजरायल के खिलाफ बोल रहा है, जिसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इजरायल के विदेश मंत्री गिदोन सार ने इसे भयानक यहूदी विरोधी रक्तपात करार दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि इजरायल उन आतंकवादियों के खिलाफ अपनी रक्षा करना जारी रखेगा जो उसके विनाश की कसम खाते हैं।

दांव पर लगी पाकिस्तान की मध्यस्थता : यह विवाद ऐसे समय में आया है जब पाकिस्तान अमेरिका और ईरान के बीच दो सप्ताह के अस्थायी युद्धविराम को स्थायी शांति में बदलने के लिए मेजबानी कर रहा है। पाकिस्तान को इस युद्धविराम का श्रेय दिया जा रहा था, लेकिन इस ताजा विवाद ने उसकी निष्पक्षता पर सवाल उठा दिए हैं। लेबनान के प्रधानमंत्री नवाफ सलाम ने भी इजरायली हमलों को रोकने के लिए पाकिस्तान से मदद मांगी थी, जिससे पाकिस्तान की भूमिका और महत्वपूर्ण हो गई थी। एक तरफ कूटनीतिक विवाद है, तो दूसरी तरफ जमीन पर युद्धविराम की स्थिति भी नाजुक बनी हुई है। वार्ता से महज 24 घंटे पहले अमेरिका-ईरान संघर्ष विराम में दरारें दिखने लगी हैं। वाशिंगटन ने तेहरान पर आरोप लगाया है कि वह हॉर्मुज के रास्ते तेल की आवाजाही को सुगम बनाने के अपने वादे को पूरा नहीं कर रहा है। युद्धविराम के पहले 24 घंटों में इस मार्ग से केवल एक तेल टैंकर और पांच मालवाहक जहाज गुजरे, जबकि सामान्य तौर पर यहां से रोजाना 140 जहाज गुजरते हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर ईरान की आलोचना करते हुए कहा कि वह समझौते का पालन करने में बहुत खराब प्रदर्शन कर रहा है। उन्होंने साफ शब्दों में लिखा, 'यह वह समझौता नहीं है जो हमने किया था!' आपको बता दें कि इस्लामाबाद में होने वाली इस बैठक में एक ईरानी प्रतिनिधिमंडल भी शामिल होने वाला है, लेकिन इजरायल और पाकिस्तान के बीच छिड़ी इस जुबानी जंग ने माहौल को विषाक्त कर दिया है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने पाकिस्तान को सीधी चेतावनी देते हुए कहा है कि इजरायल के विनाश की बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। पीएम नेतन्याहू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'पाकिस्तान के रक्षा मंत्री का इजरायल को खत्म करने का आह्वान बहुत बुरा है। यह ऐसा बयान नहीं है जिसे किसी भी सरकार से बर्दाश्त किया जा सके, खासकर उस सरकार से जो शांति के लिए न्यूट्रल आर्बिटर होने का दावा करती है।' दरअसल, पाकिस्तान के विदेश मंत्री ख्वाजा आसिफ ने एक्स पर पोस्ट में लिखा 'इजरायल बुरा है और इंसानियत के लिए श्राप है। इस्लामाबाद में शांति वार्ता चल रही है, लेबनान में नरसंहार हो रहा है। इजरायल बेगुनाह नागरिकों को मार रहा है, पहले गाजा, फिर ईरान और अब लेबनान, खून-खराबा लगातार जारी है।'

इजरायल के खिलाफ आग उगलते हुए पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने कहा, 'मैं उम्मीद और प्रार्थना करता हूं कि जिन लोगों ने फिलिस्तीनी धरती पर इस कैंसर जैसे राज्य का निर्माण किया है, वे यूरोपीय यहूदियों से छुटकारा पाएं और उन्हें नरक में जलाएं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने बीते दिन इजरायल के हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने बताया कि इजरायल के हमले के बाद लेबनान के प्रधानमंत्री नवाफ सलाम से फोन पर बातचीत की। पीएम शहबाज ने एक्स पर लिखा, 'मैंने आज शाम लेबनान के प्रधानमंत्री नवाफ सलाम से बात की। मैंने लेबनान के खिलाफ इजरायल के लगातार हमले की कड़ी निंदा की और इन दुश्मनी की वजह से लेबनान में हजारों लोगों की जान जाने पर दुख जताया।

नाइजीरिया में सैन्य ठिकाने पर आतंकी हमला, ब्रिगेडियर जनरल समेत कई सैनिकों की मौत

अबूजा , एजेंसी। नाइजीरिया के पूर्वोत्तर क्षेत्र में गुरुवार तड़के हुए एक आतंकी हमले में नाइजीरियाई सेना के ब्रिगेडियर जनरल सहित कई सैनिकों की मौत हो गई। अधिकारियों ने बताया कि हमलावरों के सेना के ठिकाने पर हमला किया। नाइजीरियाई सेना ने कहा है कि हमले को सेना ने विफल कर दिया, लेकिन इस दौरान कई सैनिक मारे गए हैं। नाइजीरिया ने अभी तक मृतकों का सही आंकड़ा जारी नहीं किया है। सेना के प्रवक्ता माइकल ओनोजा ने एक बयान में कहा कि हमला बोर्नो राज्य के बेनिशेख इलाके में हुआ। उन्होंने हमलावरों को आतंकवादी बताया। नाइजीरिया के पूर्वोत्तर में इस्लामी उग्रवादी संगठनों के लिए सेना द्वारा आतंकी शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। स्थानीय प्रशासन के अध्यक्ष जन्ना लावन अजीमी ने सोशल मीडिया पर घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि 'एक साहसी और समर्पित अधिकारी, 29 टास्क फोर्स ब्रिगेड के कमांडर ब्रिगेडियर जनरल ओ. ओ. ब्राइमा सहित अन्य वीर जवानों की शहादत अत्यंत पीड़ादायक है, जिन्होंने कर्तव्य निभाते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। सेना के प्रवक्ता ओनोजा ने पुष्टि की कि ब्रिगेडियर जनरल ओसेनी ब्राइमाह इस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे। अफ्रीका का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश नाइजीरिया लंबे समय से गंभीर

सुरक्षा संकट का सामना कर रहा है, विशेषकर उत्तरी क्षेत्र में, जहां एक दशक से अधिक समय से उग्रवाद और अपहरण की घटनाएं जारी हैं। देश में सक्रिय प्रमुख इस्लामी उग्रवादी संगठनों में बोको हराम और उससे अलग हुआ गुट 'इस्लामिक स्टेट वेस्ट अफ्रीका प्रोविंस' शामिल हैं, जो इस्लामिक स्टेट से संबद्ध है। इसके अलावा, नाइजर सीमा से सटे उत्तर-पश्चिमी इलाकों में आईएस से जुड़ा लाकुरावा समूह भी सक्रिय है।

हाल के समय में यह संकट और गहराया है, जिसमें साहेल क्षेत्र के अन्य उग्रवादी संगठन भी शामिल हो गए हैं। इनमें 'जमात नुसरत अल-इस्लाम वल-मुस्लिमीन' भी शामिल है, जिसने पिछले वर्ष नाइजीरिया में अपना पहला हमला किया था। इस वर्ष की शुरुआत में अमेरिका ने नाइजीरिया की सेना की मदद के लिए 200 सैनिकों और ड्रोन तैनात किए। हालांकि, अमेरिकी सेना ने स्पष्ट किया कि उसके सैनिक सीधे युद्ध में हिस्सा नहीं लेंगे और न ही किसी अभियान का नेतृत्व करेंगे, जबकि पूरी कमान नाइजीरियाई सेना के पास ही रहेगी।

संयुक्त राष्ट्र में आर्थिक-सामाजिक परिषद के अहम निकायों में भारत हुआ निर्वाचित

न्यूयार्क, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र के छह प्रमुख अंगों में से एक 'आर्थिक और सामाजिक परिषद' (ईसीओएसओसी) के विभिन्न सहायक निकायों में भारत को चुना गया है। संयुक्त राष्ट्र में देश के स्थायी मिशन ने बुधवार को बताया कि भारत को ईसीओएसओसी के जिन निकायों में 2027 से 2030 की अवधि के लिए चुना गया है उनमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास आयोग, गैर-सरकारी संगठनों की समिति और कार्यक्रम एवं समन्वय समिति (सीपीसी) शामिल हैं। भारतीय राजदूत प्रीति सरन को फिर से आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों की समिति (सीईएससीआर, 2027-2030) के लिए चुना गया। इन पर वैश्विक मामलों की जिम्मेदारी होगी। गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) की समिति ईसीओएसओसी की एक स्थायी समिति है। इसके मुख्य कार्यों में विभिन्न एनजीओ द्वारा प्रस्तुत सलाहकार दर्जे के लिए आवेदनों और पुनर्वर्गीकरण के अनुरोधों पर विचार करना शामिल है। सीपीसी योजना, कार्यक्रम निर्माण और समन्वय के लिए ईसीओएसओसी तथा महासभा की प्रमुख सहायक निकाय है। इसकी वेबसाइट के अनुसार, यह संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रमों की समीक्षा करती है और संयुक्त राष्ट्र की प्रणालियों के अंतर्गत समन्वय कार्यों के निष्पादन में ईसीओएसओसी की सहायता करती है।

भू-माफियाओं के चंगुल में गोमाता की 'गौचर' जमीन, विरोध करने पर गौभक्तों को मिल रही जान से मारने की धमकी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

खेड़ा (गोबलज): गुजरात के खेड़ा जिले के गोबलज गांव में करोड़ों रुपये की गौचर जमीन को लेकर विवाद चरम पर पहुंच गया है। मल्टीपल चिटफंड घोटाले के आरोपी और साबरमती जेल की हवा खा चुके दक्षेश महेंद्र शाह पर अवैध रूप से गौचर जमीन बेचने का गंभीर आरोप लगा है। इस मामले में जब स्थानीय ग्रामीणों और गौभक्तों ने आवाज उठाई, तो उन्हें भू-माफियाओं द्वारा जान से मारने की धमकियां दी जा रही हैं।

क्या है पूरा मामला ?

गोबलज गांव के ग्रामीणों और पूर्व सरपंच दिलीप भाई पटेल के अनुसार, यह जमीन न तो सरकार की है और न ही किसी व्यक्ति विशेष की; यह पूरी तरह से पशुधन और गोपालकों की संपत्ति है। नियमों के मुताबिक, गौचर भूमि का उपयोग किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं किया जा सकता।

हाईकोर्ट के आदेश की अवहेलना

उल्लेखनीय है कि गुजरात हाईकोर्ट ने जनहित याचिका संख्या 17/2011 में ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया था कि गौचर जमीन को किसी भी परिस्थिति में अन्य कार्यों के लिए नहीं दिया जा सकता। इसके बावजूद, भू-माफियाओं और कथित भ्रष्ट अधिकारियों की मिलीभगत से इस जमीन की बंदरबांट की जा रही है।

आंकड़ों की भयावह स्थिति

गौभक्त जशुभा ने सरकारी नीतियों पर सवाल उठाते हुए कहा: 'सरकार की नीति है कि प्रति 100 पशुओं पर 16 हेक्टेयर गौचर जमीन होनी चाहिए, लेकिन आज गुजरात में केवल 20' गौचर जमीन ही बची है। माफियाओं और भ्रष्टाचार के कारण आज गौमाता सड़कों पर प्लास्टिक खाने को मजबूर है।'

27 वर्षों से जारी है संघर्ष

ग्रामीणों का कहना है कि वे पिछले 27 सालों से अपनी जान जोखिम में डालकर इस जमीन को बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। सात बार जमीन की मूल शर्तों का उल्लंघन हो चुका है, जिसके आधार पर यह जमीन तत्काल सरकार को जब्त कर गोपालकों को वापस सौंप देनी चाहिए थी। प्रधानमंत्री के आदेश के बाद भी हौसले बुलंद हैरानी की बात यह है कि इस मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यालय से जांच के आदेश दिए जाने के बावजूद, आरोपी दक्षेश शाह नेताओं के नाम का सहारा लेकर खुलेआम लूट चला रहा है। वह सोशल मीडिया पर खुद को बड़ा नेता बताकर गवाहों और शिकायतकर्ताओं को डराने-धमकाने का काम कर रहा है।

मुख्य बिंदु:

आरोपी: दक्षेश महेंद्र शाह (चिटफंड घोटाले का मुख्य आरोपी)।

शिकायतकर्ता: गोबलज के ग्रामीण, गोपालक और पूर्व सरपंच दिलीप भाई पटेल।

मांग:अवैध सौदों को रद्द कर जमीन 'श्री सरकार' कर पशुधन के लिए आरक्षित की जाए।

ताइवान की विपक्षी नेता से मिले शी जिनपिंग, ट्रंप के चीन दौरे से पहले बढ़ी कूटनीतिक हलचल

बीजिंग, एजेंसी। चीन और ताइवान संबंधों के बीच एक अहम कूटनीतिक घटनाक्रम सामने आया है। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने शुक्रवार को बीजिंग में ताइवान की विपक्षी नेता चेंग ली-वुन से मुलाकात की। यह बैठक ऐसे समय हुई है जब अगले महीने डोनाल्ड ट्रंप की चीन यात्रा प्रस्तावित है।

एक दशक के बाद केएमटी ने चीन का दौरा किया : चेंग ली-वुन, ताइवान की प्रमुख विपक्षी पार्टी कुओमिनतांग (केएमटी) की पहली अध्यक्ष हैं, जिन्होंने एक दशक में पहली बार पार्टी प्रतिनिधिमंडल के साथ चीन का दौरा किया है। उनका यह दौरा एक सप्ताह का है और इसे दोनों पक्षों के बीच संवाद बहाल करने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है। चीन ताइवान को अपना अभिन्न हिस्सा मानता है और वन चाइना नीति के तहत उसके पुनर्एकीकरण पर जोर देता रहा है। वहीं ताइवान की सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (डीपीपी) चीन के इस रुख का कड़ा विरोध करती है और ताइवान की अलग पहचान बनाए रखने की पक्षधर है। इसके विपरीत केएमटी चीन के साथ करीबी संबंधों की वकालत करती रही है, जिससे यह मुलाकात और भी अहम हो जाती है। बीजिंग रवाना होने से पहले चेंग ने अपने दौरे को शांति की यात्रा बताया और कहा कि ताइवान जलडमरूमध्य दुनिया के सबसे संवेदनशील क्षेत्रों में से एक है, जहां स्थिरता बनाए रखना बेहद जरूरी है। उन्होंने जोर देकर कहा कि दोनों पक्षों को संवाद और सहयोग के जरिए मतभेद सुलझाने चाहिए। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब अमेरिका ताइवान को करीब 11 अरब डॉलर का बड़ा रक्षा पैकेज देने की योजना बना रहा है। इस पैकेज में एच आईएमआरएस रॉकेट सिस्टम, एंटी-टैंक मिसाइल, ड्रोन, होवित्जर और अन्य सैन्य उपकरण शामिल हैं। चीन ने इस प्रस्ताव का कड़ा विरोध करते हुए इसे क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा बताया है। वहीं ताइवान की संसद में इस रक्षा बजट को लेकर गतिरोध बना हुआ है, क्योंकि विपक्षी दलों के कारण इसे मंजूरी नहीं मिल पाई है। इसी बीच हाल ही में अमेरिका का एक द्विदलीय प्रतिनिधिमंडल ताइपेई पहुंचा और संसद से रक्षा बजट पारित करने की अपील की। विशेषज्ञों का मानना है कि डोनाल्ड ट्रंप की 14-15 मई को प्रस्तावित चीन यात्रा के दौरान ताइवान का मुद्दा प्रमुख रूप से चर्चा में रहेगा। ऐसे में शी-चेंग की यह मुलाकात न केवल द्विपक्षीय संबंधों के लिहाज से अहम है, बल्कि इसका असर क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति पर भी पड़ सकता है।

पाकिस्तान : मरदान खदान हादसे में नौ मजदूरों की मौत, सुरक्षा की गंभीर कमी उजागर: रिपोर्ट

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के मरदान इलाके में हाल ही में एक संगमरमर की खदान के ढहने से नौ मजदूरों की मौत हुई। यह घटना प्रणालीगत लापरवाही को दिखाती है। पाकिस्तान में खनन उद्योग सबसे असुरक्षित, खतरनाक और उपेक्षित क्षेत्रों में से एक है। सुरक्षा नियमों की कमी और पर्याप्त प्रक्रियाओं के न होने की वजह से मजदूर खदानों में फंस जाते हैं या खदान गिरने और विस्फोट जैसी घटनाओं में मर जाते हैं, एक रिपोर्ट में कहा गया है। प्रमुख दैनिक अखबार 'द एक्सप्रेस ट्रिब्यून' की संपादकीय में लिखा गया, 'खैबर पख्तूनख्वा के मरदान क्षेत्र ने एक और दुखद घटना देखी है, जिसमें एक संगमरमर की खदान के ढहने से नौ मजदूरों की जान चली गई। खनन उद्योग में, आधुनिक तकनीक और सुरक्षा प्रोटोकॉल के बावजूद, पूरी तरह से दुर्घटनाओं से बचना मुश्किल है। लेकिन सुरक्षा तकनीक के लिए पर्याप्त पैसा न होना और मौजूदा कानूनों का सही तरीके से पालन न होना, पाकिस्तान में खदान हादसों की संभावना बहुत बढ़ा देता है।'

खनन क्षेत्र को खदान सुरक्षा, निरीक्षण और नियमों को बढ़ाने वाले दो कानूनों के तहत सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए। लेकिन इन कानूनों को लागू करने के बावजूद कोई असर नहीं दिखता। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून' ने लिखा गरीब पृष्ठभूमि से आने वाले खदान मजदूर अक्सर बिना प्रशिक्षण, बिना समर्थन और कम वेतन पर काम करते हैं। पाकिस्तान के अधिकारियों को मजदूरों को अच्छी ट्रेनिंग, बेहतरीन उपकरण, आपातकालीन सेवाओं तक पहुंच और सुरक्षा मानकों की जानकारी प्रदान करनी चाहिए। पिछले दिसंबर में कोयले की एक खदान में भूस्खलन के कारण दो मजदूरों की मौत हुई थी। यह हादसा क़्वेटा के बाहरी इलाके सोरांज में हुआ था। बलोचिस्तान के मुख्य खदान निरीक्षक रफिउल्लाह ने बताया कि मजदूर खदान में थे जब बड़ी मात्रा में मिट्टी गिर गई और उन्हें मलबे में दबा दिया गया। यह जानकारी पाकिस्तानी दैनिक 'डॉन' की रिपोर्ट में दी गई। 'डॉन' की रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर में बलोचिस्तान के डुकी और चामलांग क्षेत्रों में दो अलग-अलग घटनाओं में चार कोयला मजदूरों की मौत हुई। पुलिस के अनुसार, मृतक अफ़ग़ानिस्तान के निवासी थे।

भारत-अमेरिका संबंध हुए मजबूत, विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने एफबीआई चीफ काश पटेल से मुलाकात की

वाशिंगटन , एजेंसी। भारत और अमेरिका ने अपने रणनीतिक जुड़ाव को बढ़ाया। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने अमेरिकी विदेश सचिव मार्को रुबियो के साथ एक अहम मीटिंग की। इसके साथ ही उन्होंने अमेरिकी जांच एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) के डायरेक्टर काश पटेल समेत सीनियर अमेरिकी अधिकारियों के साथ अलग-अलग बातचीत की। इस बातचीत का मुख्य मुद्दा रक्षा, आतंकवाद का विरोध और क्षेत्रीय सुरक्षा रहा। भारतीय दूतावास ने कहा कि अपने मौजूदा दौरे के दौरान मिसरी ने आज विदेश सचिव मार्को रुबियो से मुलाकात की और आगे कहा, 'हम इन जरूरी क्षेत्रों में अपने जुड़ाव को और गहरा करने और भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए और भी बहुत कुछ करने की उम्मीद करते हैं।' भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने इस बातचीत को एक प्रोडक्टिव मीटिंग बताया। उन्होंने कहा कि यह हमारे द्विपक्षीय संबंध, खासकर व्यापार, जरूरी मिनरल्स, रक्षा और क्वाड पर केंद्रित थी। गोर ने कहा, 'विदेश सचिव रुबियो अगले महीने भारत आने का इंतजार कर रहे हैं!' यह एक संभावित उच्च स्तरीय दौरे का संकेत देता है। मिसरी और एफबीआई डायरेक्टर काश पटेल की मुलाकात सुरक्षा पर केंद्रित थी। भारतीय दूतावास ने कहा, 'दोनों ने आतंकवाद, सुनियोजित अपराध और नारकोटिक्स से निपटने में भारत-अमेरिका के मजबूत सहयोग पर विचारों का अच्छा लेन-देन किया।' यह मीटिंग पारंपरिक रक्षा संबंधों के साथ-साथ कानून लागू करने और अंदरूनी सुरक्षा के मुद्दों पर दोनों देशों के बीच बढ़ते सहयोग पर जोर देती है। मिसरी ने उपसचिव क्रिस्टोफर लैंडौ के साथ भी बातचीत की। दूतावास ने कहा, 'उन्होंने आपसी प्राथमिकताओं पर चर्चा की।

आपसी चिंता के क्षेत्रीय और वैश्विक विकास पर भी अपने विचार शेयर किए।' अमेरिकी विदेश विभाग के मुख्य डिप्टी प्रवक्ता टॉमी पिगॉट ने कहा कि लैंडौ ने मिसरी के साथ अपनी मीटिंग में 'दोनों देशों के बीच करीबी पार्टनरशिप को फिर से सुनिश्चित किया। बयान में कहा गया, 'नेताओं ने दोनों देशों के बीच करीबी साझेदारी को फिर से सुनिश्चित किया और फारस की खाड़ी के हालात और दूसरी वैश्विक और क्षेत्रीय प्राथमिकताओं के बारे में जानकारी साझा की। क्षेत्रीय विकास, खासकर पश्चिम एशिया में, मीटिंग्स में खास तौर पर शामिल रहे, जिसमें दोनों पक्षों ने चल रहे भू-राजनीतिक तनाव के बीच विचारों का आदान-प्रदान किया। मिसरी ने राजनीतिक मामलों के अवर सचिव एलिसन हुकर से भी मुलाकात की, जहां दोनों पक्षों ने पिछले साल दिसंबर में हुए फॉरेन ऑफिस कंसल्टेशन्स के बाद से भारत-अमेरिका द्विपक्षीय एजेंडे का जायजा लिया। भारतीय दूतावास ने कहा कि उन्होंने 'पश्चिम एशिया में हाल के विकास के साथ-साथ आपसी फायदे के क्षेत्रीय मुद्दों पर अपने विचार शेयर किए। 'इस दौरान आर्थिक और तकनीकी सहयोग पर भी फोकस रहा।

आर्थिक मामलों के अवर सचिव जैकब हेलबर्ग के साथ बातचीत में, दोनों पक्ष सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए। दूतावास ने कहा, 'वे पैक्स सिलिका के तहत सहयोग को आगे बढ़ाने और एआई और जरूरी मिनरल्स सहित बड़े आर्थिक और तकनीकी एंगेजमेंट पर सहमत हुए।

Printed, Published and Owned by SARABJIT MAKAN and Printed by ILEVAN HASMUKHRAI THAKAR Printed at Jay Graphics & Printers, C/15, Vikram Chambers, Ashram Road, Ahmedabad - 380009. and published from F/1 first floor, rajas apartment, near old railway crossing, maninagar east maninagar, Ahmedabad, Gujarat-380008. Editor SARABJIT MAKAN, Mo.: 9638877700, 9662420070.